रजिस्ट्री सं० डी एल—33001/93

REGISTERED NO. DL—33001/93

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 19] नई दिल्ली, शनिवार, मई 8, 1993 (वैशाख 18, 1915)

No. 19] NEW DELHI, SATURDAY, MAY 8, 1993 (VAISAKHA 18, 1915)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	455
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	489
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	3
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	801
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों जिनमें (सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	497
भाग III—खण्ड 2—पेटेन्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	373
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	*
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	11805
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	59
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला अनुपूरक	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं ।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	455
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	489
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence.	3
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	801
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION—4 Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	497
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	373
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	11805
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private bodies.	59
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi.	*

* Folio Nos. not received

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1993

सं० : 66-प्रेज/93 :—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री बलविंदर सिंह संधू :
2. श्रीमती जगदीश कौर संधू : गांव तथा डाकघर
3. श्री रणजीत सिंह संधू : भिखिविंड, तहसील
4. श्रीमती बलराज कौर संधू : पट्टी, जिला अमृतसर ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 सितम्बर, 1990)

श्री बलविंदर सिंह संधू और उनके भाई रणजीत सिंह संधू आतंकवादियों की गतिविधियों के विरोधी हैं। साफ है कि वे आतंकवादियों की हिट लिस्ट में हैं। पिछले ग्यारह महीने के दौरान पूरे संधू परिवार का सफाया करने के लिए आतंकवादियों ने सोलह बार प्रयास किए। आतंकवादियों ने 10 से लेकर 200 की तादाद में उन पर हमला किया लेकिन संधू बंधुओं ने अपनी बहादुर पत्नियों श्रीमती जगदीश कौर संधू और श्रीमती बलराज कौर संधू की मदद से हर बार आतंकवादियों की उन्हें मार डालने की कोशिशों को बड़ी कामयाबी के साथ नाकाम कर दिया।

संधू परिवार पर पहला हमला 31 जनवरी, 1990 को और आखरी हमला 28 दिसम्बर, 1991 को किया गया। सबसे घातक हमला 30 सितम्बर 1990 को किया गया था। उस दिन करीब 200 आतंकवादियों ने संधू परिवार के मकान को चारों ओर से घेर लिया और रॉकेट लॉन्चरों सहित बेहद मारक हथियारों के साथ लगातार 5 घंटे तक हमला जारी रखा। यह एक सुनियोजित हमला था और मकान तक पहुंचने वाले रास्तों को भूमिगत गन सुरंगे लगाकर बंद कर दिया गया था ताकि पुलिस बलों से किसी तरह की भी मदद उन्हें न मिल पाए। संधू बंधु तथा उनकी पत्नियों ने सरकार से मिली पिस्तौलों और स्टेनगनों से आतंकवादियों का डटकर मुकाबला किया। संधू बंधुओं ने और उनके परिवार के सदस्यों के इस तरह कड़े मुकाबले के कारण आतंकवादियों को मजबूरन पीछे हटना पड़ा।

इन सभी लोगों ने आतंकवादियों के हमले का मुकाबला करने तथा उनकी बार-बार कातिलाना कार्रवाईयों को नाकाम करने में उच्च कोटि के साहस और वीरता का परिचय दिया।

5. श्री राजकुमार नीमा, दमोह मध्य प्रदेश (मरणोपरांत)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 जनवरी 1991)

18 जनवरी 1991 को छह-सात साल की दो स्कूली बालाएं बीना-कटनी मुख्य रेलवे लाइन पर बंद पड़ा लिया रेलवे गेट के नजदीक रेल की पटरी को पार कर रही थीं। कटनी से सागर की ओर एक मालगाड़ी आ रही थी और रेल की दूसरी पटरी से रेल का एक इंजन गुजर रहा था। तभी गेट के पास मौजूद श्री राजकुमार नीमा ने देखा कि दोनों लड़कियां मालगाड़ी के नीचे आने वाली हैं। वे तत्काल उनकी ओर लपके और उन्हें एक तरफ खींच लिया। ऐसा करते समय उन्होंने दो बच्चीयों की जाने तो बचा ली, लेकिन दुर्भाग्यवश स्वयं दूसरी पट्टी से गुजर रहे रेल के इंजन से टकरा गए और उसी समय उनकी मृत्यु हो गई।

श्री राजकुमार नीमा ने दो बच्चों की जान बचाने में उच्च कोटि के साहस और शौर्य का परिचय देते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

6. 4255634 नायक जीवन बागे, बिहार रेजिमेंट, 7 बिहार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 फरवरी 1991)

7 बिहार के नायक जीवन बागे की 27/28 फरवरी, 1991 की रात पंजाब के एक गांव राजेवाला के पास आतंकवादियों से मुठभेड़ हुई। उन्होंने भिंडरावाला टाइगर फोर्स के एक आतंकवादी एरिया कमांडर सतनाम सिंह सट्टा को मार गिराया, जो गेहूं के खेतों में छुपा हुआ था। इस कार्रवाई के दौरान वह गोलियों से जख्मी हो गये। दूसरे आतंकवादी सैनिक दस्तों पर कारगर फायर डाल रहे थे, लेकिन इसके बावजूद वे अपने दस्ते को लेकर उनके नजदीक पहुंच गये और जबरदस्त मुकाबला किया। इस मुठभेड़ में ए० के० -47 की गोलियों की एक बौछार ने उनकी छाती को छलनी कर दिया। जब उन्हें अमृतसर के सैनिक अस्पताल में ले जाया जा रहा था तो रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गयी।

इस प्रकार नायक जीदन बागे ने उत्कृष्ट कोटि के साहस और कर्त्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

7. मेजर डी प्रताप कुमार (आई सी37016) सेना मेडल गोरखा रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 मार्च 1991)

27 मार्च 1991 को मेजर डी प्रदीप कुमार के नेतृत्व में 4/1 गोरखा रेजिमेंट की अल्फा कम्पनी गांव मुगल चक की निकट रात के नौ बजे घात लगाकर बैठी थी। घात-टुकड़ी की गोलीबारी से सामना होने पर दो आतंकवाद रात के कोई 2345 बजे तरनतारन नदी में कूद गए। मेजर डी प्रदीप कुमार ने तुरन्त अपनी टोल की मदद से भाग रहे आतंकवादियों को घेर लिया। आतंकवादियों ने वितरिका के साथ-साथ दक्षिण की तरफ बढ़ कर घेरे को तोड़ने की कोशिश की। मेजर डी प्रदीप कुमार तुरन्त आतंकवादियों का रास्ता रोकने के लिए वितरिका के किनारे के नजदीक आ गये। आतंकवादियों ने पुल के नीचे पोजिशन ले रखी थी। इन्होंने मेजर डी प्रदीप कुमार पर भारी फायर डाला। मेजर डी प्रदीप कुमार ने अपने साथियों से फायरिंग रोकने को कहा ताकि दोनों तरफ से ही फायरिंग से अपने लोग न हताहत हों। मौके की गम्भीरता को समझते हुए उन्होंने अपनी लाइट मशीन गन उठायी और आतंकवादियों पर फायर किया। यह 20 मीटर के फासले से आतंकवादियों से आमने-सामने की मुठ-भेड़ थी। फिर वे खड़े हो गये और एकदम सामने आते हुए उन्होंने अपनी एल एम जी से भारी गोलाबारी शुरू कर दी और अकेले ही दोनों आतंकवादियों को मार गिराया ।

इस प्रकार मेजर डी प्रदीप कुमार ने उच्च कोटि के साहस, शौर्य और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया है ।

8. 5043672 राइफलमैन जीत प्रसाद श्रेष्ठ, गोरखा रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 29 मार्च 1991)

29 मार्च, 1991 को 4/1 गोरखा रेजिमेंट की अल्फ कंपनी 2100 बजे तक सखीरा गांव के समीप तरनतारन नहर के ऊपर बने पुल पर घात लगा रही थी। राइफलमैन जीत प्रसाद श्रेष्ठ एक बचाव-सन्य-टुकड़ी में हल्की मशीन के तोपची नम्बर एक थे। लगभग 2320 बजे हेडलाइट बंद मोटर साइकिल पर सवार तीन व्यक्ति घात-स्थल के निकट पहुंचे। ललकारने पर आतंकवादियों ने ए के-47 राइफलों से गोलीबारी की और घात लगाने वाली सैन्य टुकड़ी पर हथगोले फेंके। बचाव टुकड़ी ने तुरन्त जवाबी हमला किया। आतंकवादियों ने घात-स्थल से भागने के लिए मोटर साइकिल की गति बढ़ा दी। राइफलमैन जीत प्रसाद श्रेष्ठ ने हल्की मशीन गन के तोपची नम्बर-2 के साथ सड़क के समीप जाकर गोलीबारी की। राइफलमैन जीत प्रसाद श्रेष्ठ आतंकवादियों को बचकर निकलने से रोकने के लिए सड़क पर आए। सड़क बंद करते समय उन्होंने आतंकवादियों पर गो-लियों की भारी बौछार की जिससे वे वहीं ढेर हो गए। परन्तु इस कार्रवाई में जीत प्रसाद श्रेष्ठ के मुंह पर गोली आ लगी जो उनके लिए प्राणघातक सिद्ध हुई ।

इस प्रकार राइफलमैन जीत प्रसाद श्रेष्ठ ने आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस उत्कृष्ट शौर्य एवं कर्त्तव्य-परायणता का परिचय देकर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए ।

9. 3985549 सिपाही कमर चन्द डोगरा रेजिमेंट । (पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 मई 1991 ।)

25 / 26 मई 1991 की रात को गांव सांगे स्क्वेयर के आस-पास के इलाके में घेराबंदी और खोज की कार्रवाई के लिए सिपाही कमर चन्द की यूनिट तैनात की गई थी। 26 मई 1991 को 0500 बजे आतंकवादियों ने अपने को घिरा पाकर घेरा तोड़ने की कोशिश की। इस जबरदस्त मुठभेड़ में आतंकवादियों और भारतीय सेना की टुकड़ियों के बीच भारी गोलाबारी हुई। सिपाही कमर चन्द ने आतंकवादियों के एक गिरोह को उस जगह से नहर की ओर भागते देखा जहां उनकी ड्यूटी थी। उन्होंने उन्हे ललकारा, लेकिन वे भागते रहे। उन्होंने दोबारा चेतावनी दी। लेकिन वे नहीं रूके तो उन्होंने अपने स्वचालित हथियार से सिपाही कमरचन्द पर गोली चलाई। हिम्मत और इरादे के साथ सिपाही कमर चन्द ने आतंकवादियों को भागने का मौका नहीं दिया। इन्होंने अचूक निशाने के साथ गोली चलाई जिससे एक आतंकवादी मारा गया। दूसरे आतंकवादी ने सम-र्पण में हाथ ऊपर कर दिये। लेकिन इससे पहले कि सिपाही कमर चन्द उसे गिरफ्तार कर पाते उसने दौड़ कर छलांग लगाई और नहर में कूद गया। सिपाही कमर चन्द भी तुरन्त नहर में कूदे और उन्होंने उसे अपने काबू में कर लिया। वे आतंकवादी को नहर से बाहर घसीटकर लाये, लेकिन इस बीच में उसने सायनाइड खा लिया और मर गया। बाद में उसकी शिनाख्त हुई और उसका नाम हरदेव उर्फ टीटू बताया गया, जो खालिस्तान के भिंडरावाले टाइगर फोर्स का कमांडर था ।

इस प्रकार सिपाही कमर चन्द ने आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए अदम्य साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

10. कैप्टन सुनील कुमार (आई सी-41991) 5 गोरखा राइफल्स) (फ्रंटियर फोर्स) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 2 अगस्त 1991)

01 / 02 अगस्त 1991 की रात को 6/5 गोरखा राइ-फल्स (फ्रंटियर फोर्स) के दो दस्तों को जम्मू और कश्मीर के बारामुल्ला जिले के गांव मुडीग्राम में तलाशी और घेराबंदी के काम पर लगाया गया। कैप्टन सुनील कुमार को एक दस्ते के कम्पनी अफसर की हैसियत से तैनात किया गया। कैप्टन सुनील कुमार एक घर की घेराबंदी में लगे हुए थे। तभी इन्होंने देखा कि बाजू का एक दरवाजा खुला और उसमें से एक आदमी बाहर निकला। कैप्टन सुनील कुमार ने अन्दाजा लगाया कि यह आदमी हथियारबंद हो सकता है क्योंकि उसकी गोला बारूद पेटी रोशनी

में साफ नजर आ रही थी। चूंकि मकान की घेराबंदी अभी पूरी नहीं हुई थी और उस आदमी के भाग जाने की आशंका थी। इस लिए वे सीधे उस आदमी की ओर बढ़े। सैनिक को देखते ही उस आदमी ने गोलियां चलाई। इस दौरान कैप्टन सुनील कुमार उस व्यक्ति के काफी नजदीक पहुंच गये थे। उनके दाएं हाथ पर एक गोली लगी। गोली लगने के बावजूद ये दौड़ते हुए उस आदमी पर झपटे। इन्होंने उसकी राइफल छीन ली और उसे नीचे गिरा कर उस पर चढ़ बैठे। अब तक कैप्टन सुनील कुमार का काफी खून बह गया था। किन्तु इन्होंने तब तक उस राष्ट्र-विरोधी तत्व को नहीं छोड़ा जब तक दो और जवानों ने आकर उसे पकड़ नहीं लिया। इस तरह इन्होंने वीरता का उदाहरण प्रस्तुत किया उसके परिणामस्वरूप दो हथियार, एक हथगोला, 7 कट्टर राष्ट्र द्रोही तत्वों के साथ हिज़बुल मुजाहिदीन का एक एरिया कमांडर पकड़ा गया।

इस प्रकार कैप्टन सुनील कुमार ने राष्ट्रविरोधी तत्वों के मुकाबले के दौरान उच्च कोटि के साहस वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

11. सेकंड लेफ्टि० विक्रमजीत सिंह संधु (एस० एस०—34475) 18 डोगरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 अगस्त 1991)

18 डोगरा ने 8 अगस्त 1991 को जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के जफरखानी तथा वोलयास कौनार गांव में घेराबंदी और खोज संक्रिया की। सेकंड लेफ्टि० विक्रम जीत सिंह संधु नम्बर 9 प्लाटून का कमान कर रहे थे, लगभग 0630 बजे इन्होंने लगभग 2 से 300 मीटर दूर पेड़ों के झुरमुट में कुछ गतिविधियां देखीं और 6 जवानों को अपने साथ लेकर उस ओर दौड़ पड़े। जैसे ही ये चले राष्ट्रविरोधी तत्वों ने इन पर गोलीबारी कर दी। अपनी सुरक्षा को जोखिम में डालकर और गोलियों की बौछार की परवाह न करते हुए सेकंड लेफ्टि० संधु उस गोलीबारी के स्थल की ओर आगे बढ़ते रहे और उस क्षेत्र को घेर लिया। भारी मात्रा में गोलीबारी की आवाज सुनकर कैप्टन संदीप सांकला भी अपने दल के साथ इस ग्रुप में आ मिले। कैप्टन सांकला ने तत्परता से तीव्र प्रतिक्रिया दल की तैनाती की और सेकंड लेफ्टि० संधु की प्लाटून के सैनिकों को पुनः व्यवस्थित रूप से तैनात किया तथा राष्ट्रविरोधी तत्वों की गोलीबारी चुप कराने के लिए आगे बढ़े। अचानक ही जंगल में किसी आड़ से सिपाही स्वर्ण सिंह पर एक ग्रेनेड फेंका गया, जिससे वे घायल हो गए। भारी गोलीबारी के बावजूद सेकंड लेफ्टि० संधु आगे बढ़ते रहे और राष्ट्रविरोधी तत्वों को उलझा लिया। इस बीच कैप्टन सांकला पर भी सीधा प्रहार हुआ। सिपाही स्वर्ण सिंह भी अचेत हो गए। अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाते हुए सेकंड लेफ्टि० संधु राष्ट्रविरोधी तत्वों की भारी गोली-बारी के बीच रेंगते हुए कैप्टन सांकला तक पहुंचे। इन्होंने कैप्टन सांकला जो कि गंभीर रूप से घायल थे, को उठाया और उन्हें एक ऐसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जहां से वे प्राथमिक सहायता के लिए उन्हें सड़क तक ले गए। इन्होंने घायल हुए साथी जवानों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने की व्यवस्था की। इन्हें अस्थायी चिकित्सा जांच कक्ष में पहुंचा देने के बाद सेकंड लेफ्टि० संधु स्थिति को नियंत्रित करने के लिए वापस उसी स्थान की ओर दौड़े। बाद में घटनास्थल पर इनके स्थानापन्न कमांडिंग अफसर भी इनके साथ हो लिए थे। इन्होंने राष्ट्रविरोधी तत्वों पर हमला किया। इस हमले में राष्ट्रविरोधी तत्वों को अन्ततः चुप होना पड़ा। इनके साहस और कर्तव्यनिष्ठा का बहुत ही लाभदायक प्रभाव पड़ा। आठ राष्ट्रविरोधी तत्व गिरफ्तार किए गए और तीन ए० के०—56 राइफलें तथा बहुत बड़ी मात्रा में गोलाबारूद जब्त किया गया।

इस प्रकार सेकंड लेफ्टि० विक्रमजीत सिंह संधू ने राष्ट्र-विरोधी तत्वों का मुकाबला करते हुए अनुकरणीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

12. 3384099 नायक बलबीर सिंह, 3 सिख

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 अगस्त, 1991)

17 अगस्त, 1991 को 3 सिख की अल्फा कम्पनी के नायक बलबीर सिंह को नायब सूबेदार अमर सिंह के नेतृत्व में एक गश्ती दल के स्काउट के रूप में कार्य करने के लिए तैनात किया गया था। गश्ती दल का संचालन राष्ट्रविरोधी तत्वों को नजर में आ गया और उन्होंने गश्ती दल पर भारी गोलीबारी करनी शुरु कर दी। नायक बलबीर सिंह ने राष्ट्रविरोधी तत्वों को गोलीबारी का कारगर और अचूक रूप से जवाब दिया। अपनी जान के खतरे के बावजूद नायक बलबीर सिंह ने राष्ट्रविरोधियों को दबोचे रखा और उन्हें भागने नहीं दिया। उन्होंने उनके एक संतरी को मार दिया। यह देख राष्ट्रविरोधी तत्व नाले से बच निकलने की कोशिश करने लगे। नायक बलबीर सिंह ने तत्काल अपना ठिकाना बदला और उनके भागने के प्रयास को विफल कर दिया परन्तु ए के—56 राइफल की गोली इनके पेट में आ लगी। नायक बलबीर सिंह ने सुरक्षित स्थान की ओर खिसकते हुए आतंकवादियों पर गोलीबारी जारी रखी। दोनों ओर से गोलीबारी के दौरान एक बार पुनः इनके बाएं हाथ पर गोली लगी परन्तु इन्होंने अपना ठिकाना नहीं छोड़ा और शत्रु को तब तक उलझाए रखा जब तक कि इन्हें यूनिट प्रशासनिक बेस से वापिस आने का आर्डर नहीं मिला।

इस प्रकार नायक बलबीर सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते हुए उत्कृष्ट साहस, पराक्रम और कर्तव्य के प्रति समर्पण की भावना का परिचय दिया।

13. 2500315, नायक धन बहादुर सुंवर, असम राइफल्स। (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 अगस्त, 1991)

17 अगस्त, 1991 को 25 असम राइफल्स ने मणिपुर के उखरुल जिले में आलंग गांव के समीप स्थित एक संदिग्ध शिविर एन०एस०सी०एन० (एस०) की तलाश करने और

उसे नष्ट करने के लिए एक विशेष "ऑपरेशन कसम" शुरू किया। नायक धन बहादुर सुंवर नम्बर 2 सैन्य टुकड़ी का संचालन कर रहे थे। शिविर के निकट पहुंचने पर अपने कुछ साथियों सहित स्व० नायक धन बहादुर सुंवर ने कूल्हे पर बंदूक रख कर गोलीबारी करते हुए शिविर में भूमिगतों पर धावा बोला। इस कार्रवाई के दौरान उनकी टुकड़ी पर भारी गोलीबारी हुई और वे बुरी तरह घायल हो गए। अपनी गंभीर चोटों पर ध्यान न देते हुए वे अथक रूप से गोलीबारी करते रहे। उन्होंने गुत्थम-गुत्था में एक आतंकवादी को उलझा लिया और एक ऐसे आतंकवादी से 9 मि० मी० स्टेन कारबाइन मशीन छीन ली जिसके पास भागने के अलावा कोई चारा नहीं था। इससे पहले कि नायक धन बहादुर सुंवर को इलाज के लिए सुरक्षित स्थान पर ले जाया जाता घावों के कारण उनकी वहीं मृत्यु हो गई।

इस प्रकार नायक धन बहादुर सुंवर ने अति असाधारण कोटि के साहस, वीरता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया तथा आतंकवादियों से लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया।

14. 4068220, राइफलमैन, खेमराज सिंह,
10 गढ़वाल राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 अगस्त, 1991)

गढ़वाल राइफल्स की मुख्यालय कंपनी 10 के राइफलमैन खेमराज स्थानापन्न कमान अफसर मेजर सुनिल कुमार आनन्द की बचाव सैन्य टुकड़ी के सदस्य थे। इस सैन्य टुकड़ी को 24 अगस्त, 1991 को गांव मनिगम (जिला श्रीनगर) में घेराबंदी और खोज-कार्य में लगाया गया था। ये उस सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे जिसे राष्ट्रविरोधी व्यक्तियों को पकड़ने का काम सौंपा गया था। राष्ट्रविरोधी व्यक्ति यूनिवर्सल मशीनगन और अन्य स्वचालित हथियारों से भारी मात्रा में गोलाबारी कर रहे थे। राइफलमैन खेमराज सिंह ने राष्ट्रविरोधी व्यक्तियों को अपने बहुत नजदीक छुपे हुए देख उन पर कई बार गोलियां चलाई। उनमें से एक व्यक्ति ने बचने के लिए घेराबंदी तोड़ने की कोशिश की किन्तु वह पकड़ लिया गया। दूसरा राष्ट्रविरोधी व्यक्ति अपनी यूनिवर्सल मशीन गन से गोलीबारी करता रहा। साहसी राइफलमैन खेम राजसिंह यूनिवर्सल मशीन गन को बंद करने के लिए रेंगकर इस राष्ट्रविरोधी व्यक्ति की ओर बढ़े। जवाबी गोलीबारी के दौरान जब ये राष्ट्रविरोधी व्यक्ति से करीब 10–12 गज की दूरी पर थे तो यूनिवर्सल मशीन गन से निकली एक गोली इनकी बाईं जांघ में आ लगी। गंभीर रूप से घायल होने की वजह से अत्याधिक खून बहने के बावजूद राइफलमैन खेमराज सिंह ए० के०–47 राइफल से गोलीबारी कर रहे राष्ट्रविरोधी व्यक्ति की ओर जब तक रेंगकर बढ़ते रहे जब तक कि दूसरी दिशा से राष्ट्रविरोधी व्यक्ति के समीप मोर्चा लिए हुए उनके साथी सैनिक ने अन्ततः यूनिवर्सल मशीन गन समेत उसे दबोच नहीं लिया। राइफलमैन खेम राज को तुरन्त प्राथमिक उपचार कर उन्हें 92 बेस अस्पताल ले जाया गया। पकड़े गए राष्ट्रविरोधी व्यक्तियों में से एक जमात-ए-इस्लाम और हिजबुल मुजाहिदीन का चीफ एरिया कमांडर गुलाम मुहम्मद वार और दूसरा अल्लाह टाइगर्स का एरिया कमांडर अब्दुल रशीद निकला। इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप अनेक हथियार और भारी मात्रा में गोलाबारूद भी जब्त किया गया।

इस प्रकार राइफलमैन खेमराज सिंह ने राष्ट्रविरोधी व्यक्तियों का मुकाबला करते हुए उत्कृष्ट शौर्य और अदम्य साहस का परिचय दिया।

15. 2676892 लांस नायक जरदीश अहमद, 22 ग्रेनेडियर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 सितम्बर, 1991)

8 दिसम्बर, 1991 को लांस नायक जरदीश अहमद बूरा पट्टन गांव में घेराबन्दी और खोजी संक्रिया के लिए तैनात की गई कंपनी में शामिल थे। छः सशस्त्र उग्रवादियों का पता लगने पर इन्होंने कंपनी के छः अन्य रैंकों को साथ लेकर धान के खेत में छुपे राष्ट्रविरोधी तत्वों का पीछा किया। लांस नायक जरदीश अहमद के पास हल्की मशीन गन थी जिससे इन्होंने उन पर गोलीबारी शुरू कर दी और यह सुनिश्चित किया कि इनके दल के अन्य सदस्य धान के खेत में बिना किसी रुकावट के उनको घेर सकें। लांस नायक जरदीश अहमद ने अपने सामने वाली दलदल और धान के खेत से जैसे ही एक राष्ट्रविरोधी तत्व को बाहर निकलते हुए देखा इन्होंने उस पर अपनी हल्की मशीन गन मारकर उसे अपने कब्जे में ले लिया और बाद में उससे एक पिस्तौल बरामद की। लांस नायक अहमद साहस का परिचय देते हुए अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए आगे की ओर कूदे और एक अन्य राष्ट्रविरोधी तत्व को देखा जो उन पर गोली चलाने ही वाला था। लांस नायक जरदीश अहमद ने अपने कूल्हे पर हल्की मशीन गन रख कर दस मीटर की दूरी से फुर्ती से गोली चला कर राष्ट्रविरोधी तत्व को मार दिया। तत्पश्चात् वे अन्य राष्ट्रविरोधी तत्वों की खोज में दाहिनी ओर मुड़े। अपनी दाहिनी ओर कुछ हलचल देखकर ये अपने सामने की ओर से राष्ट्रविरोधी तत्व की तरफ गहरे दलदल में से होते हुए उसके निकट पहुंचे। एक राष्ट्रविरोधी तत्व ने 10 गज की दूरी से इनके कंपनी कमांडर और रेडियो आपरेटर की तरफ मुड़ कर गोली चलाने का प्रयास किया परन्तु इससे पहले कि वह अपनी गन का घोड़ा दबा पाता, लांस नायक जरदीश अहमद ने उसे मार गिराया। इस संक्रिया के दौरान लांस नायक जरदीश अहमद ने उच्च कोटि की वीरता, पहल शक्ति और साहस का परिचय दिया। अपनी हल्की मशीनगन के अचूक प्रहार और त्वरित कार्रवाई के परिणामस्वरूप ये अपने कंपनी कमांडर सहित दल के साथियों का जीवन बचाने में सफल हुए। इस कार्रवाई में दो दुर्दांत राष्ट्रविरोधी मारे गए।

इस प्रकार लांस नायक जगदीश अहमद ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. 908536 राइफलमैन मोहम्मद सफीर खान, जम्मू और कश्मीर लाइट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 अक्तूबर, 1991)

31 अक्तूबर, 1991 को राइफलमैन मोहम्मद सफीर खान सिबसागर जिले के पनवीचा क्षेत्र में घेराबंदी और तलाशी के काम पर तैनात एक कंपनी के सदस्य थे। क्षेत्र की घेराबंदी के दौरान लगभग 1340 बजे राइफलमैन मोहम्मद सफीर खान और राइफलमैन मदन लाल धान के घने खेत में से गुजर रहे थे कि अचानक केवल 15 मीटर के फासले पर छिपे दो आतंकवादियों से उनकी मुठभेड़ हो गई। उन में से एक ने राइफलमैन मोहम्मद सफीर खान की तरफ एक हथगोला फेंका। अपनी जान की परवाह न करते हुए राइफलमैन सफीर खान ने सब से करीब के आतंकवादी पर धावा बोल दिया। हथगोला उनकी पीठ पीछे फटा, जिससे उनका शरीर गंभीर रूप से घायल हो गया। इसके बावजूद यह बहादुर राइफलमैन आतंकवादी की तरफ लपका और उसे दबोच लिया। राइफलमैन मोहम्मद सफीर खान ने अपनी पकड़ तब तक ढीली न की, जब तक प्लाटून कमांडर और उनकी प्लाटून के दूसरे सदस्य घटना स्थल पर न पहुंच गए। इसके बाद पहले उन्हें अग्रवर्ती मरहम पट्टी स्टेशन और उसके बाद 5 बायुसेना अस्पताल जोरहाट ले जाया गया लेकिन उनकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार राइफलमैन मोहम्मद सफीर खान ने उत्कृष्ट कोटि की वीरता और साहस का परिचय दिया।

17. मेजर कश्मीर सिंह राणा (आई० सी०-37242), 6 सिख

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 नवम्बर, 1991)

आठ नवम्बर, 1991 को मेजर कश्मीर सिंह राणा के नेतृत्व वाली कम्पनी को जम्मू और कश्मीर के इलाके में घेराबन्दी और खोजी संक्रिया के लिए तैनात किया गया था। इन्हें कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट के एरिया कमांडर श्री शैफुद्दीन पीर, जो कि मेजर राणा द्वारा 6 नवम्बर, 1991 को पकड़े गए थे, ने बताया कि कुपवाड़ा जिले का अत्यन्त भयानक आतंकवादी कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट का डिविजनल कमांडर गुलाम मोहम्मद लोन उस इलाके में सक्रिय है। आठ नवम्बर, 1991 को सुबह 5.45 बजे घेराबंदी के लिए मेजर राणा जब अपनी सब-यूनिटों को घेरा डालने के लिए तैनात कर रहे थे तो उन पर भारी गोली-बारी होने लगी। उग्रवादी 300 मीटर की दूरी से गोलीबारी कर रहे थे। मेजर राणा ने शीघ्र ही एक प्लाटून को दक्षिण की तरफ से अपनी यूनिटों को फायर सहायता देने के लिए तैनात किया और त्वरित प्रतिक्रिया करने वाली एक टीम के साथ उस दिशा की ओर गए ताकि राष्ट्र विरोधी तत्वों पर उत्तर की ओर से गोलीबारी की जा सके। मेजर राणा के नेतृत्व में सैनिक टुकड़ी को अपनी ओर बढ़ते देखकर राष्ट्रविरोधी तत्वों ने और अधिक तीव्रता से उनकी टुकड़ी पर गोली-बारी शुरू कर दी। मेजर राणा ने दो नालों के मिलने के स्थान पर एक अन्य दल को तैनात कर दिया ताकि उनके दल को बहुत निकट से फायर सहायता मिल सके। तत्पश्चात् मेजर राणा ने अपने छिपने के स्थान से गोलीबारी कर रहे राष्ट्र विरोधी तत्वों की तरफ तेजी से बढ़े और उन पर झपट पड़े। मेजर राणा के दल और राष्ट्र विरोधी तत्वों के बीच गुत्थमगुत्था हुई। कुछ विरोध के बाद, चार राष्ट्र विरोधी तत्व जिनमें गुलाम मोहम्मद लोन भी शामिल था, जो मेजर राणा के साथ भिड़ रहा था, काबू कर लिए गए और वे बड़ी मात्रा में विस्फोटक सामग्री हथियार और गोलाबारूद सहित जीवित पकड़ लिए गए।

दिसम्बर 1991 में मेजर राणा ने पारम्परिक तौर-तरीकों से हटकर सिविल वाहनों का प्रयोग करते हुए वेश बदलकर बहुत से राष्ट्रविरोधी तत्वों को उनके हथियार और गोलाबारूद सहित पकड़ लिया। फरवरी और मार्च, 1992 में उक्त यूनिट ने राणा के नेतृत्व में 100 हथियार और बड़ी मात्रा में गोलाबारूद बरामद किए। 24 अप्रैल, 1992 को मेजर राणा के नेतृत्व में की गई इस कार्रवाई में हिजबुल मुजाहिदीन का एरिया कमांडर मेहराजदीन मारा गया, सात उग्रवादी पकड़ लिए गए और बहुत से हथियार बरामद किए गए।

इस प्रकार मेजर कश्मीर सिंह राणा ने राष्ट्र विरोधी तत्वों का मुकाबला करते हुए उत्कृष्ट वीरता, असाधारण नेतृत्व और साहस का परिचय दिया।

18. श्री जगदेव सिंह, सिरसा, जिला हिसार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 9 नवम्बर, 1991)

9 नवम्बर, 1991 के दिन, हरियाणा के हिसार जिले के सिरसा शहर में 'साचा सौदा" नामक धार्मिक स्थल पर चल रहे "सतसंग" में भाग लेने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र हुए थे। तभी अचानक वहां स्वचालित हथियारों से लैस कुछ आतंकवादी आ धमके और उन्होंने अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। इस गोलाबारी में 14 लोग मारे गए और 13 लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। इस दौरान भारी खलबली मच गई और लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। वहीं के एक सिख निवासी श्री जगदेव सिंह ने जो मौके पर मौजूद थे, भीड़ पर गोलाबारी कर रहे एक आतंकवादी को दबोच लिया और उसकी ए० के०-47 राइफल की नाल ऊपर की ओर घुमा दी ताकि बाकी गोलियां हवा में दग जाएं। इस दौरान अपने साथी को छुड़ाने के लिए दूसरे आतंकवादी ने आकर बिलकुल नजदीक से उनके सिर में गोली मारी। श्री जगदेव सिंह की तत्काल मृत्यु हो गयी।

2. श्री जगदेव सिंह ने अपने सामने खड़ी मौत के बावजूद अनुकरणीय साहस, तत्परता और सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया और इस तरह अनेक लोगों की जानें बचाई।

19. मेजर अनमोल सिंह घुमन (आई० सी०-40082), 3 महार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 नवम्बर, 1991)

18 नवम्बर, 1991 को लगभग 2130 बजे कश्मीर

घाटी की नियंत्रण रेखा के पार राष्ट्रविरोधी तत्वों के एक गिरोह और हमारी गश्त टुकडी के बीच मुठभेड हुई। मुठभेड़ की सूचना मिलते ही नीलसाह बैंहक के मुकाम पर तैनात कंपनी के नौजवान और जोशीले कमांडर मेजर अनमोल सिंह घुमन कुमुक पहुंचाने के लिए तत्काल आने दल के साथ तेजी से वहां पहुंचे। राष्ट्रविरोधी तत्वों को बच निकलने से रोकने तथा मुठभेड़ स्थल के नजदीक के क्षेत्रों की तलाशी का काम उनके जिम्मे सौंपा गया। इनमें घने जंगल, खड़ी चट्टानें और दुर्गम इलाके पड़ते थे। यह तलाशी अगले 72 घंटों तक चलती रही। खडी चढ़ाई और बहुत देर तक सफलता न मिलने के बावजूद इन्होंने पूरे अटूट उत्साह और पक्के इरादे के साथ अपनी कार्रवाई जारी रखी और आखिर में इन्हें इसमें सफलता मिली। इन्होंने चार राष्ट्रविरोधी तत्वों को चट्टानों के पीछे छिपे हुए पाया। इन्होंने अपने दल को तीन टुकडियों में बांटा और इनमें से दो टुकड़ियों ने उनके बचकर निकल भागने का रास्ता रोक लिया। ये स्वयं तीसरी टुकडी के साथ राष्ट्रविरोधी तत्वों की ओर बढ़े। इस मौके पर राष्ट्रविरोधी तत्वों ने यूनिवर्सल मशीन गन और ए० के०–56 राइफलों से फायर डालना शुरु किया। दुश्मन के फायर और अपनी जान की जरा सी परवाह किए बिना ये दुश्मन की तरफ बढ़ते गए और इस दौरान उन्होंने दुश्मन पर हथगोला फेंका और अपनी टुकड़ी से फायर डलवाया। उन्होने उन चारों राष्ट्र विरोधियों को मार गिराया। मेजर अनमोल सिंह घुमन के जानदार और हौसला बढ़ानेवाले नेतृत्व में की गई इस कार्रवाई से चारों राष्ट्र विरोधी मारे गये और बड़ी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद किया गया। इस प्रकार मेजर अनमोल सिंह घुमन ने अदम्य साहस, वीरता, नेतृत्व और कर्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया।

20. मेजर रामेश्वर लाल (आई सी-27057), गार्डस

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 दिसम्बर, 1991)

मेजर रामेश्वर लाल ने दाहिनी बाजू कटी होने और बायें फेफड़े का एक भाग निकाल दिए जाने से विकलांग होने के बावजूद पंजाब में तैनात अपनी बटालियन में सेवारत रहने का निर्णय लिया। 28 दिसम्बर 1991 को जब ये "आपरेशन रक्षक" के अन्तर्गत अपनी बटालियन का कमान अफसर के रूप में पदभार संभाले हुये थे तब उन्होंने दुमनीवाला गांव के दक्षिण में दो उग्रवादियों के छिपे होने की सूचना मिलने पर उन्हें पकडने के लिए एक गश्ती एवं खोजी अभियान की योजना बनाई। उन्होंने अपनी बटालियन को चार टुकडियों में बांट दिया। एक टुकडी का नेतृत्व उन्होंने स्वयं किया। सुबह नौ बजे के लगभग दो सशस्त्र आतंकवादी मेजर रामेश्वर लाल की टुकडी पर गोली-बारी करते हुए निकटवर्ती पुश्ते की ओर भागे। मेजर रामेश्वर लाल ने दुसरी टुकडी को उस पुश्ते की ओर जाने का आदेश दिया। मेजर रामेश्वर लाल द्वारा की गई तत्काल कार्रवाई से वे आतंकवादी दो टुकड़ियों के बीच घिर गए और उन्होंने अन्धा-धुंध गोली-बारी शुरु कर दी। मेजर रामेश्वर लाल आतंकवादियों की इस गोली-बारी से तनिक भी भयभीत नहीं हुए और अपने साथियों के साथ उनकी ओर दौड़े तथा उनपर प्रभावी ढंग से गोली-बारी शुरू कर दी। इस मुठभेड़ में बब्बर खालसा के दोनों दुर्दांत आंतकवादी मुक्तियार सिंह उर्फ कुख्खा और बूटा सिंह मारे गये। आतंकवादियों से दो राइफलें और 290 राउण्ड गोली-बारूद बरामद हुआ।

इस प्रकार मेजर रामेश्वरलाल के अदम्य साहस, वीरता और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

21. मेजर परमिन्दर सिंह भिण्डर (आई० सी०–31832) 6 गढ़वाल राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 दिसम्बर 1991)

31 दिसम्बर 1991 को लगभग 1700 बजे "आपरेशन राइनो" के अन्तर्गत मेजर परमिन्दर सिंह भिण्डर ने अपने तीन अन्य रैंकों का नेतृत्व करते हुए एक मकान पर छापा मारा और वहां एक उग्रवादी नेता हरिक ज्योति मोहन्ता और उनके दो अन्य साथियों को हथियार डालने और आत्म समर्पण करने को बाध्य कर दिया। बाद में जब वे मोहन्ता को उग्रवादियों के छुपने के दूसरे स्थान पर ले जा रहे थे तो उन पर उग्रवादियों ने गोलीबारी कर दी। दोनों पक्षों में हुई गोली-बारी का लाभ उठाते हुए और उग्रवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी को रोकने का बहाना करते हुए श्री हरिक ज्योति मोहन्ता ने उग्रवादियों के कैम्प में भागने का प्रयत्न किया। मेजर परमिन्दर सिंह भिण्डर ने खतरे की परवाह न करते हुए उग्रवादी का पीछा किया। जब हरिक ज्योति मोहन्ता लड़खड़ाकर गिर पड़ा तो मेजर भिण्डर ने अचूक गोलीबारी करके उसे घायल कर दिया। तत्पश्चात, उन्होंने मोहन्ता को पकड़ लिया और उसे अपने दल के अन्य साथियों को सौंप दिया

इस प्रकार मेजर परमिन्दर सिंह भिण्डर ने उग्रवादियों का सामना करते हुए अदम्य साहस, नेतृत्व और तीक्ष्ण सूझबूझ का परिचय दिया।

22. कैप्टन अमिताभ (एम० एस०–32844) 6 गढ़वाल राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 31 दिसम्बर 1991)

सिद्धार्थ फूकन के बारे में सूचना मिलने पर 31 दिसम्बर 1991 को कैप्टन आलोक सिंह के साथ कैप्टन अमिताभ को तत्काल प्रतिक्रिया कार्रवाई करने वाले दो दलों में तैनात किया गया। इसके बाद ये सात घंटे तक इंतजार करते रहे। 1600 बजे सिद्धार्थ फूकन मोटर साइकिल पर जाते हुए दिखाई दिए। मोटर साइकिल में पीछे की सीट पर बैठा शेलन दत्त कंवर कामरूप डिस्ट्रिक्ट यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम ग्रुप का अध्यक्ष था। कैप्टन अमिताभ के दल ने मोटर साइकिल का सावधानी से पीछा किया। बचाव मार्ग में रूकावट देखकर फूकन ने मोटर साइकिल खड़ी कर दी और जंगल में गली की तरफ दौड़ पड़ा। जब कैप्टन आलोक

सिंह ने फूकन का पीछा शुरू किया तो मोटर साइकिल में पीछे बैठा व्यक्ति सामने की गली की तरफ दौड़ा तो कैप्टन अमिताभ ने उसका पीछा किया। उग्रवादी ने अपनी पिस्तौल निकाली और कैप्टन अमिताभ की तरफ सात गोलियां दागी परन्तु इन्होंने जवाबी गोली नहीं चलाई क्योंकि वह उग्रवादी को जिन्दा ही पकड़ना चाहते थे। लेकिन जब उग्रवादी भागने लगा तो कैप्टन अमिताभ ने दो गोलियां दागकर उसके पांव को घायल कर दिया। इसके बाद इन्होंने उग्रवादी को धर दबोच और गिरफ्तार कर लिया। इन्होंने उग्रवादी को अपने सिर पर गोली मारकर आत्महत्या करने से भी उसे रोका।

इस प्रकार कैप्टन अमिताभ ने उत्कृष्ट शौर्य अदम्य साहस और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

23. (जे० सी०–196530) नायब सूबेदार गजे सिंह विष्ट 15 गढ़वाल राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 2 जनवरी 1992)

22 जनवरी 1992 को भगवानपुरा क्षेत्र में घेरा डालते समय 15 गढ़वाल राइफल्स पर एक मकान के भीतर से भारी गोलीबारी की गई। समय गंवाए बिना नायब सूबेदार गजे सिंह ने अपनी पलटन के साथ उस मकान को घेर लिया, उस मकान में घुसते समय इनके घुटने पर गोली आ लगी। घायल होने के बावजूद ये घिसटकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचे और एक राष्ट्रविरोधी व्यक्ति को मार गिराया। मारा गया व्यक्ति शबीर अहमद बजाज हेकतूल मुजाहिदीन का ऊंचे दर्जे का आतंकवादी था। इन्होंने स्वयं को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए मना किया और आतंकित होने के कारण भाग रहे राष्ट्रविरोधी अन्य व्यक्तियों का पीछा करने के लिए अपने जवानों को प्रेरित किया। यद्यपि नायब सूबेदार गजे सिंह गंभीर रूप से घायल थे फिर भी इन्होंने रेजिमेंट चिकित्सा अधिकारी से अपने उन साथी जवानों का पहले इलाज करने के लिए अनुरोध किया जो इनसे भी अधिक घायल थे। दूसरी मुठभेड़ में घायल सूबेदार गजे सिंह पर तीन गोलियां आ लगी जिससे वे बुरी तरह से घायल हो गए। इसके बावजूद सुरक्षित स्थान पर ले जाए जाने के लिए मना करके ये राष्ट्रविरोधी व्यक्तियों पर तब तक हमला करते रहे जब तक कि इन्होंने गोलीबार करना बंद न कर दिया।

इस प्रकार नायब सुबेदार गजे सिंह विष्ट ने राष्ट्रविरोधी व्यक्तियों का मुकाबला करते हुए उत्कृष्ट शौर्य वीरता और अदम्य साहस का परिचय दिया।

24. 3973740. हवलदार सुभाष चंदर, डोगरा रेजिमेंट (मरणोपरांत)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 मार्च, 1992)

8/9 मार्च 1992 की रात को 8 डोगरा की दो कम्पनियों ने अमृतसर (पंजाब) जिले के बोरछी राजपूताना गांव की ओर जा रहे बहुत से कच्चे रास्तों पर घात लगायी। 22.30 बजे के लगभग बोरछी राजपूताना नानकपुर मार्ग पर एक घात-टुकड़ी ने गांव की तरफ से आते हुए चार आदमियों के एक गिरोह को देखा। इन आदमियों को हवलदार कुलदीप सिंह ने चुनौती दी और इन के बीच जबर-दस्त फ़ायरिंग हुई। वे चारों हथियार बन्द आदमी गेहूं के खेत की ओर दौड़े और भाग निकलने के लिए इन्होंने चारों ओर से फ़ायरिंग शुरू कर दी। इनमें से एक आदमी चिल्लाते हुए अपने गिरोह के लोगों को हथगोला फेंकने के लिए कह रहा था। यह सुनकर हवलदार सुभाष चंदर ने सोचा कि हथगोले फेंकनें के बाद आतंकवादी भाग सकते हैं। उन्हें रोकने के लिए अपनी जान की परवाह न करते हुए वे नजदीकी आतंकवादी पर झपटे और उसे मार दिया। बाद में पता चला कि वह तथाकथित लेफ्टिनेंट जनरल देविन्द्र सिंह उर्फ़ बब्बर खालसा ग्रुप का कमांडो है। इस मुठभेड़ में हवलदार सुभाष चंदर के पेट में ए० के०–47 राइफ़ल की बौछार से निकली एक गोली लगी। एक दूसरे छिपे हुए आतंकवादी ने जब उन्हें लपकते देखा तो उन पर अपनी ए० के०–47 राइफ़ल से गोली चलायी और उन्हें पुरी तरह से घायल कर दिया। गभीर रूप से घायल होने के बावजूद हवलदार सुभाष चंदर ने फ़ायरिंग जारी रखी और इकबाल सिंह नामक दूसरे आतंकवादी को मार गिराया। उन्हें पक्के इरादे से लगातार आगे बढ़ते देखकर आतंकवादी ने गोलियों को एक और बौछार छोड़ी जो उनकी छाती में लगी और उनकी मृत्यु हो गयी।

इस प्रकार हवलदार सुभाष चंदर ने राष्ट्रविरोधी तत्वों से मुठभेड़ में उच्चतम कोटि के साहस और वीरता का प्रदर्शन किया।

25. जी० 72274–डब्ल्यू यांत्रिक परिवहन ड्राइवर अलताफ़ हुसैन।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 मार्च 1992)

सीमा सड़क संगठन की परियोजना वार्तक की 580 (1) ट्रांसपोर्ट प्लाटून के यांत्रिक परिवहन ड्राइवर अलताफ हुसैन को अगस्त 1990 से 44 सड़क सीमा टास्क फोर्स मुख्यालय में पानी के ट्रक के ड्राइवर के तौर पर तैनात किया गया।

14 मार्च 1992 को लगभग 0630 बजे अलोरा से लाकावाली जा रही एक गाड़ी 1350 फीट नीचे घाटी में लुढ़क गयी जिसमें 18 कार्मिक बैठे थे यह खबर सुनते ही श्री अलताफ हुसैन तुरंत घटना स्थल पर पहुचे। इस दुर्घटना की चपेट में आए आठ व्यक्तियों का कुछ पता नहीं लगा सका। घाटी की खड़ी ढलान और भारी फिसलन के कारण उन्हें ढूंढना बेहद मुश्किल हो गया था। 1074 फील्ड वर्कशाप के कमान अफ़सर मेजर भूपिन्दर सिंह इस खबर के सुनते ही दुर्घटना स्थल पर पहुंच चुके थे। उन्होंने रस्सी की मदद से नीचे उतरना शुरू किया। श्री अलताफ हुसैन भी आगे बढ़े और उन्होंने भी अफ़सर के बाद नीचे उतरना शुरू किया।

उन्होंने गंभीर रूप से घायल दस कार्मिकों को 30 मीटर गहरे खड्ड में से खींचने और रस्सी की मदद से ऊपर

पहुंचाने में पूरी मदद की । अन्य व्यक्तियों की निकासी के लिए घाटी में और गहरे उतरने की जरूरत थी और यह काम चोटी पर से या ढलान से फिसककर तेजी से गिरने वाले पथरों की वजह से और खतरनाक हो गया था । श्री अलताफ हुसैन असाधारण साहस दिखाते हुए इस खतरनाक ढलान पर 200 मीटर की गहराई तक नीचे उतरे और हर घायल कार्मिक की निकासी में सफल हुए । इसके बाद गंभीर रूप से घायल चार कार्मिकों को उन्होंने अपने कंधों पर लादा और रस्सी की मदद से ऊपर चढ़ आये ।

इस प्रकार यांत्रिक परिवहन ड्राइवर श्री अलताफ हुसैन ने बहुत से घायल कार्मिकों की जान बचाने की इस कार्रवाई में अदम्य साहस और वीरता का प्रदर्शन किया ।

26. 3978707 नायक भीमसेन, 5 डोगरा (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 2 अप्रैल 1992)

नायक भीमसेन 2 अप्रैल 1992 को जम्मू और कश्मीर में वूलर झील में हरी पत्ती द्वीप से राष्ट्र-विरोधी तत्वों के सोपोर की तरफ बच कर भाग निकलने से उन्हें रोकने के कार्य में लगाई गई एक लाऊंट में थे । जब वे और उनके साथी मछुआरों/लकड़हारों को झील के दूसरी ओर वहां सुरक्षित ले जाने के लिए उनके सामने हो रहे थे जहां अन्य घेरा डालने वाले बाहरी दल तैनात किए गए थे तो उनकी बाऊट पर राष्ट्र-विरोधी तत्वों द्वारा घात लगाकर हमला किया गया । वे एक देशी नौका से और द्वीप से भी गोलाबारी कर रहे थे । इसमें वे और उनके कुछ जवान घायल हो गए थे । उन्होंने यह महसूस किया कि यदि वे राष्ट्र-विरोधी तत्वों को द्वीप से हटाकर तट पर न भेजें तो उनके साथियों का जीवन खतरे में आ जाएगा इसलिए उन्होंने क्रियाशील मोटर वोट को अपने नियंत्रण में लिया तथा अपनी बाऊट को द्वीप की ओर ले गए । इस साहसपूर्ण कार्य से तथा उनके व उनकी बाऊट के सिपाही धनदेव द्वारा राष्ट्र-विरोधी तत्वों पर भारी मात्रा में की गई गोलाबारी ने राष्ट्र-विरोधी तत्वों को इतना हतोत्साहित कर दिया कि वे गोलाबारी बंद करके घने जंगलों में वापिस चले गए । इसके बाद वे अपनी बाऊट को वतलाब घाट के पास रेजिमेंटल सहायता चौकी की ओर ले गए लेकिन वे रास्ते में ही वीरगति को प्राप्त हो गए ।

इस प्रकार नायक भीमसन ने उत्कृष्ट साहस वीरता और कर्तव्य निष्ठा का परिचय देते हुए राष्ट्र विरोधी तत्वों के साथ लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया ।

27. जी/164845-पी आपरेटर एक्सक्वेटिंग मशीनरी दिलबाग सिंह

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 5 अप्रैल, 1992)

सीमा सड़क संगठन के हिमांक परियोजना की 168 फार्मेशन प्लाटून एक्सक्वेटिंग मशीनरी के आपरेटर दिलबाग सिंह को 18.30 फीट की ऊंचाई पर लेहचालुंका सड़क पर से बर्फ हटाने के काम पर लगाया गया ।

06 जनवरी, 1992 को लगभग 1530 बजे लेह्-चालुंका सड़क के 39.5 मि० मी० वाले मुकाम पर भारी हिम स्खलन हुआ और इससे खारडुंगला के सबसे ऊंचे मोटर योग्य पुल का रास्ता रूक गया । पुल का स्थिरक भी टूट गया । पुल बचाने के लिए उसकी तुरन्त मरम्मत की जरूरत थी । जिस डोजर को रास्ता साफ करने के लिए लगाया गया, उस पर भी बर्फीली चट्टानें आ गिरी, ओ० ई० एम० दिलबाग सिंह जो अपने डोजर के साथ 32 कि०मी० के मुकाम पर थे, उन्हें 06 जनवरी, 1992 को 1900 बजे रात को कूच का आदेश दिया गया । रास्ते में ही डोजर बत्ती के न जलने के बावजूद ओ० ई० एम० दिलबाग सिंह मशालों की रोशनी में तुरन्त अपने डोजर को लेकर पूरे रास्ते पर जमा लगभग 2 मीटर मोटी बर्फ की परत को हटाते हुए आगे बढ़े । इस तरह वे सुबह 0400 बजे हिम स्खलन वाले मुकाम पर जा पहुंचे, 07 जनवरी, 1992 के दिन वह सुरक्षा और सुविधा की परवाह न करते हुए किए बगैर लगातार काम करते रहे । तुफानी हवाओं और भारी बर्फबारी के कारण ओ० ई० एम० दिलबाग सिंह थकान से बुरी तरह पस्त होकर 07 जनवरी, 1992 को लगभग 1700 बजे बेहोश कर गिर पडे । लेकिन 15 मिनट बाद वे फिर हरकत में आ गए । होश में आते ही उन्होंने डोजर का चार्ज संभाला और पुल का रास्ता साफ करने में जुट गए । अपना काम पूरा होने तक उन्होंने कोई आराम नहीं किया और इस तरह उन पुल को बचाने में सफल हुए, जो संचार की एक महत्वपूर्ण कड़ी है ।

इस तरह एक और अभियान के दौरान 05 अप्रैल, 1992 को उन्हें सडक के 43 किमी० और 47 किमी० के बीच पडने वाले रास्ते पर से बर्फ हटाने का आदेश दिया गया जिस पर पिछले दो सप्ताह से भारी बर्फ जमा हो गई थी और यातायात के लिए खुला नहीं था । बर्फ हटाने का काम संक्रियात्मक स्तर पर किया जाना था ताकि सियाचिन ग्लेशियर से यूनिटों को निकाला जा सके । 5/6 अप्रैल, 1992 की रात को लगभग 2200 बजे काम के दौरान ओ० ई० एम० दिलबाग सिंह और उनके दो सहायक डोजर सहित बर्फ के नीचे दब गये । असाधारण साहस दिखाते हुए ओ० ई० एम० दिलबाग सिंह ने पहले अपने दो सहायकों को गहरी बर्फ से निकाला । फिर तुरन्त अपने डोजर को निकाला और 06 अप्रैल, 1992 को 0300 बजे तक लगातार काम करते रहे । इस तरह उन्होंने असंभव से दिखने वाले काम को भी पूरा कर दिखाया ।

इस प्रकार एक्सक्वेटिंग मशीनरी के आपरेटर दिलबाग सिंह ने अपने अदम्य साहस और उत्कृष्ट कोटि की कर्तव्य निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

28. कर्नल बिधि चन्द लगवाल (आई० सी०–19922) डोगरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 7 अप्रैल, 1992)

7 अप्रैल, 1992 को खोजकीपुर में खालिस्तान कमांडो फोर्स के डिप्टी चीफ और खतरनाक आतंकवादी अरनैल सिंह

उर्फ बुड और कर्नल बिधि चन्द लगवाल के नेतृत्व में एक प्रहार टोली के बीच मुठभेड़ हुई। आतंकवादी आल इंडिया सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के उपाध्यक्ष श्री बलविन्दर सिंह के मोर्चाबन्द दो मंजिले फार्म हाउस में छिपा हुआ था। चारों तरफ फायर डालने के लिए इससे अच्छी जगह और कोई नहीं हो सकती थी। प्रहार टोली को फार्म हाउस की तरफ आते देखकर आतंकवादी ने उस पर भारी फायर डालना शुरू किया। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए कर्नल बिधि चन्द लगवाल फार्म हाउस की तरफ बढ़ते गये और वहां से इन्होंने आतंकवादी पर राकेट से फायर डलवाया। फलस्वरूप आतंकवादी अपनी पोजीशन छोड़ने पर मजबूर हो गया। आतंकवादी ने निचली मंजिल से फायर डालना जारी रखा और उसने अपनी फायरिंग पोजीशन का चालाकी से इस्तेमाल करते हुए सी० आर० पी० एफ० के एक जवान को मार गिराया। कर्नल बिधि चन्द लगवाल मकान के और नजदीक पहुंचे और गोलियों की बौछार के बीच मकान में घुसने में कामयाब हो गए। कर्नल लगवाल की अगुवाई में फार्म हाउस के हर कमरे की तलाशी ली गयी। इस दौरान आतंकवादी ने कंक्रीट के एक बंकर में पोजीशन ले ली। फास्फोरस और उच्च विस्फोटक ग्रेनेडों का इस्तेमाल करके उसे वहां से भी अपनी पोजीशन छोड़ने को मजबूर किया गया। छह घंटे की गोलाबारी के बाद आखिर में आतंकवादी मारा गया। इसी तरह की एक कार्रवाई में 01 अप्रैल, 1992 को कर्नल बिधि चन्द लगवाल ने श्री धरमपाल सिंह को छुड़ाया जिनका एक आतंकवादी ने 10 लाख रुपये की फिरौती के लिए अपहरण कर लिया था। इन्होंने मुठभेड़ में इस आतंकवादी को मार गिराया। कर्नल बिधि चन्द लगवाल ने बटालियन की सभी कारवाइयों में हिस्सा लिया है जिनमें नौ आतंकवादी मारे गये और हथियार और गोलाबारूद बरामद हुआ।

इस प्रकार कर्नल बिधि चन्द लगवाल ने आतंकवादियों के विरुद्ध अपने अभियान में उच्चतम कोटि के साहस, जोरदार नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

29. 13857736 हवलदार गंगा सहाय 20 कुमाउं

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 अप्रैल 1992)

12 अप्रैल 1992 को 0600 बजे 20 कुमाउं की एक कंपनी के हवलदार गंगा सहाय को 9 अन्य रैंकों और पंजाब पुलिस के दो सिपाहियों सहित कपूरथला जिले में एक व्हीकल चैक पोस्ट का एन० सी० ओ० इंचार्ज बनाया गया था। 20 कुमाऊं के कैप्टन एस० एस० राठौर इस टुकड़ी के अफसर इनचार्ज थे। लगभग 0920 बजे चैक पोस्ट के उत्तर की ओर की सड़क से एक फ़क़फ़ेद मारुति कार आई। कार की तलाशी लेने के लिए कार में बैठे लोगों को जब बाहर आने के लिए कहा गया तो कार चालक कार से बाहर आ गया। जब उसे हाथ ऊपर करने के लिए कहा तो उसने तेजी से पिस्तौल निकाला और हवलदार गंगा सहाय पर गोली चलाने की कोशिश करने लगा। इसके जवाब में लांस नायक किशन चन्द ने अपनी राइफल की मूठ से उस पर एक दम प्रहार किया और उसकी पिस्तौल छीनने की कोशिश की, परन्तु आतंकवादी तेजी से परे हट गया और एक दम निकट से लांस नायक किशन चन्द के सिर पर गोली चला दी। इसी बीच कार की पिछली सीट पर बैठे दूसरे व्यक्ति ने पिछली खिड़की के शीशे से सिपाही राम प्यारे यादव पर गोली चलाई और दोनों आतंकवादी पास के गेहू के खेत में भागने लगे। हवलदार गंगा सहाय ने रेडियो आपरेटर से कुमुक मगवाने के लिए कहा और पांच अन्य रैंकों और पंजाब पुलिस के दो सिपाहियों को घायलों की देखभाल के लिए शीघ्र तैनात कर दो अन्य रैंकों को साथ लेकर भागते हुए आतंकवादियों का पीछा करने लगे। शीघ्र ही उत्तर-पश्चिम की ओर से कैप्टन राठौर भी पहुंच गए और उस मोर्चे से आतंकवादियों पर गोली चलाने लगे। दोनों दल मिल गए और उस तरफ बढ़ने लगे जहां आतंकवादी छुपे हुए थे। हवलदार गंगा सहाय इन दोनो दलों को आड़ देने के लिए सहायता फायर करते रहे ताकि वे आगे बढ़ते हुए सही निकाने पर पहुच जाए और उसके बाद आतंकवादियों पर अंतिम प्रहार के लिए आपस में मिल जाएं बाद में मृतकों की पहचान कर ली गई। उनमें से एक खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजाबवार) के स्वंयभू लेफ्टिनेंट जनरल सुरिन्द्रजीत सिंह उर्फ छिन्दा भाई और स्वयंभू लेफ्टिनेंट जनरल सुरिन्द्रजीत सिंह मल्लीवाल था। दोनों दुर्दांत आतंकवादी थे और उन दोनों ने क्रमशः 500 और 300 लोगों की हत्या की थीं। उनको पकड़ने के लिए. क्रमशः 10 लाख रूपये और 4 लाख रूपये का नगद इनाम घोषित था।

हवलदार गंगा सहाय ने आतंकवादियों से लड़ते हुए उत्कृष्ट साहस पराक्रम सूझबूझ और कर्तव्य के प्रति समर्पण की भावना का परिचय दिया।

30. 4174170 लांस नायक, किशन चंद, 20 कुमाऊं।
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 12 अप्रैल, 1992)

12 अप्रैल, 1992 को 0600 बजे "ए" कम्पनी, 20 कुमाऊं के लांस नायक किशन चंद को वाहन जांच चौकी पर तैनात किया गया। यह चौकी कपूरथला फगवाड़ा सब डिविजन में निहालगढ़ और मौली जमालपुर गांव के सड़क चौराहे पर सेना और पंजाब पुलिस ने मिलकर कायम की थी। लगभग 0920 बजे एक सफेद मारुति कार इस वाहन जांच चौकी के नजदीक पहुंची। लांस नायक किशन चंद ने कार को रुकने का इशारा किया और इसमें बैठे दोनों आदमियों को तलाशी के लिए कार से उतरने को कहा।

कार चलाने वाला व्यक्ति कार में से बाहर निकला और हवलदार गंगा सहाय द्वारा हाथ ऊपर उठाने के लिए कहने पर उसने तेजी से पिस्तौल निकाली और हवलदार गंगा सहाय पर गोली चलाने की कोशिश की। लांस नायक किशन चंद ने अपनी राइफल के बट से उस पर मार की

और पिस्तौल छीनने की कोशिश की । लेकिन आतंकवादी तेजी से पीछे हटा और उसने एकदम नजदीक से गोली चलाई और लांस नायक किशन चंद के सिर में गोली लगी । तभी कार की पिछली सीट पर बैठे दूसरे व्यक्ति ने अपनी पिस्तौल से दूसरे संतरी सिपाही राम प्यारे यादव पर पिछली खिड़की के शीशे में से गोली चलाई । इसके बाद दोनों आतंकवादियों ने निकट के गेहूं के खेतों में से भागना शुरू किया । लांस नायक किशन चंद को प्राथमिक चिकित्सा के लिए तरंत यूनिट एम० आई० कक्ष में और फिर वहां से सैनिक अस्पताल जालंधर ले जाया गया जहां घावों के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया । गेहूं के खेतों में छिपे दोनों आतंकवादियों को दूसरे दस्ते ने घेर लिया और आत्म-समर्पण से इंकार करने पर इस मुठभेड़ में वे दोनों मारे गये । भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद हुआ और उनके साथियों के नामों के कुछ कागजात पकड़े गये ।

इस प्रकार लांस नायक किशन चंद ने आतंकवादियों से मुकाबला करते हुए उत्कृष्ट कोटि के साहस और सूझबूझ का प्रदर्शन किया ।

31. 4350557 हवलदार बसन्त कुमार राय,
इन्फैन्ट्री, 3 असम ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 अप्रैल, 1992)

जिला तरन तारन (पंजाब) में बूचड़ कलां गांव से उग्रवादियों का सफाया करने के लिए 18 अप्रैल 1992 को सेना और पुलिस की संयुक्त कार्रवाई के दौरान उग्रवादी गेहू के खेत में एक खड्ड में मोर्चा लेकर चारों दिशाओं से स्वचालित हथियारों से अचूक गोलीबारी कर रहे थे । सुरक्षा बलों द्वारा नजदीक आने की कोशीश करने पर भारी गोली-बारी करके उन्हें खदेड़ दिया जाता था । ऐसी स्थिति में कमांडिंग अफसर के मार्गरक्षक हवलदार बसन्त कुमार राय एक संयुक्त आक्रमण ग्रुप का नेतृत्व करने के लिए स्वेच्छा से आगे आए । हवलदार बसन्त कुमार राय और उनका सैन्य दल गोलीसह ट्रेक्टर में उग्रवादियों तक पहुंचा । इन्होंने अपने दल के सभी सदस्यों को उग्रवादियों को लगा-तार उलझाए रखने के लिए प्रेरित किया । इन्होंने उग्र-वादियों के मोर्चे पर गोलीबारी कर उन पर आक्रमण कर दिया । इस कार्यवाई में मारे गए उग्रवादी एरिया कमांडर बूटा सिंह और खालिस्तान कमांडो फोर्स (जापफरवाल ग्रुप) के लखविन्दर सिंह थे । इस कार्यवाई में 2 ए० के० 47 राइफलें, एक रेडियो सेट, 3 इलेक्ट्रिक डिटोनेटर और 35 राउंडस बरामद हुए ।

इस प्रकार बसन्त कुमार राय ने उग्रवादियों से मुकाबला करते हुए अदम्य साहस, उत्कृष्ट शौर्य और नेतृत्व का परिचय दिया ।

32. कैप्टन हरबिंदर सिंह गिल
(एस० एस०–34360)
इन्फैंट्री 3 असम ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 अप्रैल, 1992)

23 अप्रैल 1992 को तारन तरन (पंजाब) जिले के गांव बाकीपुर में कैप्टन हरबिंदर सिंह गिल को उनकी "क्विक रिएक्शन टीम" के साथ फार्म हाउसों में छिपे आतंकवादियों को बाहर खदेड़ने का काम सौंपा गया। इस दौरान जबरदस्त मुठभेड़ हुई । आतंकवादियों की भारी गोला-बारी के जबाव में कैप्टन हरबिंदर सिंह गिल ने खुद आगे बढ़कर 84 मि० मी० राकेट लांचर से चार उच्च विस्फोटक गोले फायर किये और उस इमारत को आंशिक रूप से नष्ट करने में सफल हुए, जो उनका टार्गेट थी । इसके बाद मिले-जुले दस्तों के साथ दो बुलेटप्रूफ ट्रैक्टर आगे भेजे गए । स्वचालित हथियारों के जबरदस्त फायर और हथगोलों की बौछार के कारण ट्रैक्टरों को मजबूरन टार्गेट से 75 मीटर पहले ही रोकना पड़ा । इस पर भी कैप्टन हरबिंदर सिंह गिल ने हिम्मत न हारी और "फायर करो" "आगे बढ़ो" की चाल चलते हुए वे दो मिली-जुली टुकड़ियों के साथ आगे बढ़ते गये । इन्होंने इस हमले का खुद नेतृत्व किया, जिसमें एक टुकड़ी रेंगते हुए आगे बढ़ी । उन्होंने कमरे के अंदर एक हथगोला फेंका और अपनी ए० के० 47 राइफल से फायरिंग करते हुए खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजवार ग्रुप) के तथाकथित लेफ्टिनेंट जनरल सुरिन्द्र सिंह मान सहित दो आतंकवादियों को मार गिराया । उनके पास से दो असाल्ट राइफलें, एक ड्रेगुनेफ स्नाइपर राइफल, एक ग्रेनेड लांचर और बड़ी मात्रा में गोलाबारूद बरामद हुआ ।

इस प्रकार कैप्टन हरबिंदर सिंह गिल ने उच्चतम कोटि के साहस वीरता, कर्तव्यनिष्ठा और नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

33. सेकंड लेफ्टिनेंट कृष्ण मुरारी सिंह
(आई० सी०–50102),
6 सिख ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 3 मई 1992)

3 मई 1992 को इमबारजलवाड़ी गांव में राष्ट्र विरोधी तत्वों के खिलाफ अभियान चलाने के लिए 6 सिख की एक कंपनी को तैनात किया गया जिसका नेतृत्व सैकंड लेफ्टिनेंट कृष्ण मुरारी सिंह को सौंपा गया। चार घंटे की चढाई के बाद यह कंपनी गांव में पहुंची । इन्होंने देखा कि कई लोग गांव के उसके दक्षिण में पड़ने वाले इमबारजलवाड़ी नाले की ओर भागने का प्रयास कर रहे हैं । यह देखकर इस अफसर ने पहाड़ी से नीचे की ओर भागते हुए राष्ट्र विरोधी तत्वों का पीछा किया । जब वे पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे तो इन्होंने देखा कि संदिग्ध अपराधी पहाड़ी की तलहटी पर पहुंच गया है और नाला पार कर रहा है । चेतावनी

दिए जाने पर उस राष्ट्र विरोधी तत्व ने इन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी । तत्काल और साहसपूर्ण निर्णय लेते हुए इन्होंने राष्ट्र विरोधी तत्वों को भागने से रोकने के एक मात्र उद्देश्य से अपनी ए के–47 राइफल से उनके ठिकाने पर एक-एक कर गोलियां चालाते रहे । राष्ट्र विरोधी तत्व इनके उद्देश्य को भांप गए और तीन पेड़ों के तनों की आड़ लेते हुए उतनी ही अचूक जवाबी गोलीबारी करने लगे । गोलियों की आवाज सुनते ही मेजर कश्मीर सिंह राणा अपने दल सहित उस अफसर की सहायता के लिए दौड़े । इसी बीच सूबेदार कमलजीत सिंह जो कि सेकंड लेफ्टिनेंट कृष्ण मुरारी सिंह के दल में थे भी वहां पहुंचे । मेजर कश्मीर सिंह राणा और उनके दल ने राष्ट्र विरोधी तत्वों को चुप कराने के उद्देश्य से कवर फायर करना शुरू कर दिया और इस अफसर को उनके निकट पहुंचने में सहायता की । राष्ट्र विरोधी तत्वों से लगभग सौ मीटर की दूरी पर पहुंचने के बाद इन्होंने अपने दल को दो भागों में बांटा । सूबेदार कमलजीत सिंह के नेतृत्व वाले दल को बांई ओर से जाने और राष्ट्र विरोधी तत्वों के भाग निकलने का रास्ता रोकने का आदेश दिया । इन्होंने अपने दल का नेतृत्व स्वयं किया और राष्ट्र विरोधी तत्वों को पकड़ने के लिए सामने से उनकी ओर बढ़े । राष्ट्र विरोधी तत्वों पर नियंत्रण पाने के उद्देश्य से वे उन पर अचूक गोलीबारी करते हुए उनके और नजदीक पहुंच गए और अन्ततः उन्हें अपने शस्त्रों सहित आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया ।

इस प्रकार सेकंड लेफ्टिनेंट कृष्ण मुरारी सिंह ने राष्ट्र विरोधी तत्वों का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस, वीरता और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

34. जे०सी०–180419 सूबेदार बलवन्त सिंह, आर्टिलरी (मरणोपरांत) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 मई, 1992)

शेरशाली–खुनमोह सड़क पर 8 मई, 1992 को सड़क खोलने की संक्रिया के दौरान सूबेदार बलवन्त सिंह को पलटन कमांडर के रूप में तैनात किया गया था । उनसे खरिऊ गांव के समीप संदिग्ध लगने वाले चार युवकों से पूछताछ करने के लिए कहा गया था। चुनौती देने पर उन संदिग्ध युवकों ने भागने का प्रयास किया। उन्होंने गोलीबारी नहीं की क्योंकि इससे सिविलियन हताहत हो सकते थे । उनमें से एक युवक एक मकान में घुस गया । जैसे ही उस मकान पर घेरा डाला गया तो राष्ट्र विरोधी तत्वों ने गोली चला दी । सूबेदार बलवंत सिंह यह अनुमान लगाकर कि राष्ट्र विरोधी तत्व कहां से बच निकल सकता है वहीं चले गए और जैसे ही उस राष्ट्र विरोधी युवक ने बचकर निकलने का प्रयास किया उसे गोली से मार गिरा दिया । परन्तु इस प्रक्रिया के दौरान सूबेदार बलवंत सिंह को ए के–56 राइफल की गोली लगी और उन्होंने घायल होकर वहीं प्राण न्यौछावर कर दिए ।

इस प्रकार सुबेदार बलवंत सिंह ने उत्कृष्ट साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया तथा अपने दल के सदस्यों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और मासूम सिविलियनों की जानें बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुती दे दी।

35. जी–163560–डब्ल्यू, यांत्रिक परिवहन ड्राइवर, प्रबोध सिंह ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 मई, 1992)

सीमा सड़क संगठन की सेवक परियोजना पर लगी 100 सड़क निर्माण कपनी के यांत्रिक परिवहन ड्राइवर श्री प्रबोध सिंह को 100 सड़क निर्माण कंपनी की एक टन वाली टाटा गाड़ी पर तैनात किया गया था ।

14 मई, 1992 को 100 सड़क निर्माण कंपनी के ए०ई०ई० (सी) एस० एम० लोगानाथन को नागालैंड में सड़क के मीरांगकांग–तामलू सेक्टर में काम कर रहे सीमा सड़क संगठन के कार्मिकों और दिहाड़ी मजदूरों को वेतन और भत्ता बांटने के काम पर लगाया गया था । उनकी गाड़ी श्री प्रबोध सिंह चला रहे थे । जब गाड़ी अंगूरी मोकोकचुंग सड़क पर अंगूरी से 14 कि०मी० के फासले पर (नागालैंड) की सरहद से 2 कि० मी० अन्दर) पहुंची तो जैतूनी हरे रंग की वर्दी पहने एक आदमी जंगल में से निकला जिसकी पीठ पर बन्दूक लटकी थी उसने गाड़ी को रुकने का संकेत दिया । श्री प्रबोध सिंह ने अपने सहयात्रियों की जान और सरकारी पैसे गंवाने के भारी खतरे को भांपा और इन्होंने गाड़ी की रफ्तार बढ़ा दी और उसे तामलू पुलिस स्टेशन की ओर भगाया । अचानक गाड़ी के चारों ओर से धुंआधार गोलाबारी शुरू हो गयी । लेकिन श्री प्रबोध सिंह बहादुरी से गाड़ी को आगे बढ़ाते रहे जबकि गाड़ी में यात्रा कर रहे एक शस्त्ररहित सीमा सड़क संगठन के गार्ड, पायनियर एलेग्जेंडर की इस गोलाबारी में मृत्यु हो गयी ।

मोटर गाड़ी ड्राइवर प्रबोध सिंह ने अपनी जान की परवाह न करते हुए अत्यन्त प्रतिकूल स्थितियों में असाधारण वीरता, उच्चतम कोटि की शूरवीरता तथा धीरज का प्रदर्शन किया और सरकार के लगभग 3 लाख रुपये और कई इंसानी जानें बचायी ।

36. जी–081213–एल, पायनियर, अनिरुद्धन । (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 मई, 1992)

1646 पायनियर कंपनी के पायनियर अनिरुद्धन सड़क पुंगरो–मोया–नीमी सड़क पर ड्यूटी पर तैनात थे और 80 सड़क निर्माण कंपनी, सीमा सड़क संगठन की सेवक परियोजना से संलग्न थे ।

पायनियर अनिरुद्धन को उनके दल के साथ चट्टानी हिस्सों को बारूद से उड़ाने के काम पर तैनात किया गया

था । 27 मई, 1992 को 15 मीटर की ऊंचाई पर 85° कोण पर खड़े 60 मीटर के चट्टानी हिस्से को बारूद से उड़ाने की कार्रवाई में छेदों में चार्ज लगाने के लिए उन्हें 40 मीटर भीतर तक जाना पड़ा । विस्फोट के बाद पायनियर अनिरुद्धन अपने दल के साथ यह जांचने के लिए कार्यस्थल पर आये कि वहां से चार्ज साफ हो गये हैं या नहीं । तभी अचानक एक बहुत बड़ी चट्टान चोटी से नीचे की ओर लुढ़कने लगी । खतरे का अंदेशा होते ही उन्होंने चिल्लाकर अपने दल के सदस्यों को वहां से दूर भाग जाने के लिए कहा । साथ ही उन्होंने दो दिहाड़ी मजदूरों को मुकाम से परे धकेला दिया । लेकिन दुर्भाग्यवश वे स्वयं उस चट्टान के नीचे आ गये । उन्हें मलबे से बाहर निकाला गया और निकटवर्ती अस्पताल ले जाते समय उन्होंने दम तोड़ दिया ।

पायनियर अनिरुद्धन ने सौंपा गया काम पूरा करने में और साथियों को बचाने में अपनी जान न्यौछावर कर दी। इस प्रकार उन्होंने उच्चतम कोटि के साहस और कर्तव्य-निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

37. कैप्टन श्याम सुन्दर शर्मा,
(एस० एस०–33748),
1 बिहार ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 मई, 1992)

29 और 30 मई, 1992 की रात को मार्ग में घात लगाते समय 2140 बजे कैप्टन श्याम सुन्दर शर्मा ने देखा कि एक ट्रक्टर नहर के साथ-साथ होकर उनकी ओर आ रहा है । संदेह होने पर कैप्टन शर्मा ने ट्रैक्टर पर सवार व्यक्तियों को अपना परिचय देने के लिए ललकारा । इस पर सवार व्यक्तियों ने स्वचालित हथियारों से भारी गोली-बारी शुरू कर दी । यह जानकर कि ट्रैक्टर पर संवार व्यक्ति आतंकवादी हैं, कैप्टन शर्मा ने अपनी कारबाइन से तुरन्त गोलीबारी शुरू कर दी । कैप्टन शर्मा के ठिकाने का पता चलने पर आतंकवादियों ने इन पर निशाना साधकर इनके दाहिने पांव में गोली मार दी । अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना कैप्टन शर्मा ने लुढ़ककर दूसरा ठिकाना लिया और आतंकवादियों पर गोलीबारी करते हुए किसी भी आतंकवादी को बचकर न निकल पाने के लिए अपने सैनिकों को प्रेरित करते रहे । धीमी गति से गोलीबारी होने पर कैप्टन शर्मा ने किसी के पानी में कूदने की आवाज सुनी । यह देखते हुए कि कुछ आतंकवादी बचने के लिए नहर पार कर रहे हैं तो इन्होंने हवलदार लिंग राज स्वेन को उस क्षेत्र में रोशनी करने के लिए मिनी-फ्लेयर दागने का आदेश दिया । इन्होंने रोशनी के दौरान दो आतंकवादियों को नहर पार करते हुए देखा । बुरी तरह से घायल होने की वजह से अत्याधिक खून बहने के बावजूद कैप्टन शर्मा घिसटकर नहर के पुश्ते के ऊपर आए और आतंकवादियों पर आक्रमण कर उन्हें मार गिराया । इस मुठभेड़ में छः आतंकवादी मारे गए । इस कार्रवाई में चार हथियार यानि दो ए के–47 राइफलें, एक .303 राइफल और एक 9 मि० मी० पिस्तौल तथा भारी मात्रा में गोलाबारूद, दस्तावेज और नकदी बरामद हुई ।

इस प्रकार कैप्टन श्याम सुन्दर शर्मा ने आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए उत्कृष्ट शौर्य अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

38. जी–116892–पी, पायनियर,
बलदेव सिंह ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 1 जून, 1992)

1609 पायनियर कंपनी के पायनियर बलदेव सिंह बर्फ हटाने के लिए मनाली लेह मार्ग पर तैनात किए गए थे । मनाली-लेह मार्ग, उत्तरी सीमा के इलाकों में तैनात सैन्य दस्तों के परम महत्व की है । पायनियर बलदेव सिंह उस अग्रवर्ती टुकडी के सदस्य थे, जिसे महे और पोलकों-गकला होती हुई तगलंगला वैकल्पिक मार्ग से आगे बढ़कर और प्रहार रास्ता खोलना था और इस तरह पांग, लाचू-लुंगला तथा सार्चू से होते हुए बारालायला तक बढ़ना था। पायनियर बलदेव सिंह हिम्मत और इरादे के साथ अपने काम को धीरे-धीरे पूरा करने में जूट गये ।

1 जून, 1992 को सड़क के आर-पार 25 मीटर ऊंचे हिम स्खलन के कारण बारालांचला से 05 कि० मी० पहले दल का कार्य अचानक रूक गया । इस बर्फीनी चट्टान का रूख सड़क की सतह के लंबवत था । चट्टान का एक सिरा तो पहाड़ के तरफ ऊंचे तक चला गया था और दूसरा सिरा 100 मीटर गहरे नाले में था दूसरी ओर एक ने इस काम में जान का खतरा उठाने से इंकार कर दिया । ऐसे में पायनियर बलदेव सिंह स्वेच्छा से आगे आये ।

उन्होंने बर्फीनी चट्टान की सतह के साथ उसकी चोटी की तरफ चढ़ना शुरू किया । आधे रास्ते में ढीली बर्फ में डोजर ने आजू-बाजू फिसलना शुरु कर दिया । खतरे की परवाह किए बिना इन्होने अपने साथ काम करते मजदूरों से ट्रैक के नीचे कुछ पत्थर लगाने के लिए कहा और अपना कार्य जारी रखा । जैसी कि उम्मीद थी, ऊपर लटकती बर्फ ने टूटना शुरू कर दिया और वह इस साहसी आपरेटर पर गिरने लगी । हाथों से बर्फ हटाकर इन्होंने उससे छुटकारा पाया । बर्फीनी चट्टान को हटाने में दो दिन का समय लगा । इस पूरी अवधि में श्री बलदेव सिंह ने केवल कुछ घंटे ही आराम किया ।

इस प्रकार पायनियर बलदेव सिंह ने उच्चतम कोटि के साहस और कार्य परिधि से आगे निकलकर कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

39. 2870311 लांस हवलदार,
चत्तर सिंह,
इन्फैन्ट्री, 21 राजपूताना राइफलस ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 जून, 1992)

4 जून, 1992 को गांव महामा स्क्वेयर, जिला मजीठा के नजदीकी इलाके में कई घाते लगाई गई । लांस हवलदार चत्तर सिंह इस इलाके में घात लगाने वाले दल का स्काउट था । लगभग 2205 बजे एक स्कूटर घात के स्थल के नजदीक पहुंचा । तीन आतंकवादी स्कूटर से कूदे और स्वचालित हथियारों से घात लगाने वाले दल पर असरदार गोलीबारी करने लगे । लांस हवलदार चत्तर सिंह पर भी गोली चलाई गई लेकिन इन्होंने सबसे नजदीक के उस आतंकवादी को अपने फायर से घायल कर दिया, जो पोजीशन लेकर गोलीबारी कर रहा था । घायल आतंकवादी इसके बावजूद लांस हवलदार चत्तर सिंह पर फायर डालता रहा । अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए हवलदार चत्तर सिंह ने आतंकवादी पर धावा बोल दिया और उसे मार गिराया । इन्होंने देखा कि एक और आतंकवादी ने इनके दूसरे साथियों पर फायर करके दो को घायल कर दिया है । लांस हवलदार चत्तर सिंह अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए उस आतंकवादी से भिड़ गये और उसे मार डाला ।

इस प्रकार लांस हवलदार चत्तर सिंह ने आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए उत्कृष्ट कोटि के साहस, बहादुरी और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

40. 3986562, सिपाही प्रकाश चन्द, (मरणोपरांत)
डोगरा रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 8 जून, 1992)

8 जून, 1992 को गांव बहाला में एक मकान की तलाशी लेते समय पांच वरिष्ठ अफसरों और 22 कार्मिकों वाले पुलिस दल को उग्रवादियों ने उसे दुमंजिले मकान की छत पर बंदी बना लिया जिस मकान की पहली और निचली मंजिल पर उग्रवादियों का ही कब्जा था । पुलिस दल को छुड़वाने के लिए सेना बुलाई गई और 2 डोगरा रैजिमेंट को मकान पर घेरा डालने का काम सौंपा गया । भीतरी घेरे के हिस्से के रूप में सिपाही प्रकाश चन्द को उनकी हल्की मशीन गन के साथ उस मकान के यथासंभव निकटतम स्थान पर पोजीशन लेने का काम सौंपा गया ताकि उग्रवादियों की गतिविधियों को रोका जा सके । उग्रवादियों की भीषण गोलीबारी से डरे बिना वे अकेले ही मकान की ओर घिसटते रहे । उनके इस निर्भीक कार्य से अन्य व्यक्तियों को भी प्रेरणा मिली और उन्होंने भी उनका अनुकरण किया । इस त्वरित कार्रवाई से उग्रवादी एकदम घबरा गए और उन्होंने घबराहट में सीढ़ियों की ओर भागने का प्रयास किया ताकि वे सिपाही प्रकाश चन्द के दल के सदस्यों को कम कर सकें । उन उग्रवादियों ने इनकी पोजीशन पर भारी गोलाबारी की ताकि मकान की छत पर हो रही दो उग्रवादियों की गतिविधियों को आड मिल सके । भारी गोलीबारी के बावजूद भी वे दृढ़निश्चय से अपनी पोजीशन पर डटे रहे । अचूक गोलीबारी से उन्होंने उग्रवादियों को तत्क्षण ही मार गिराया । यद्यपि इस कार्रवाई में वे गम्भीर रूप से घायल हो गए थे तथापि जब तक वे अपनी ओटों की वजह से गिर नहीं गए तब तक गोलीबारी करते रहे ।

इस प्रकार सिपाही प्रकाश चन्द ने अनुकरणीय साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और उग्रवादियों से पराक्रमपूर्वक लड़ते हुए उपने प्राणों का बलिदान किया ।

41. 4356756, सिपाही,
अगोई वांगसा, (मरणोपरांत)
असम रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 जून, 1992)

सिपाही अगोई वांगसा खोजी दल का सदस्य था जिसे 16 जून, 1992 को जगतपुरा गांव का घेरा डालने और तलाशी के काम पर तैनात किया गया था । साढ़े बारह बजे के लगभग जब वे एक मकान की तलाशी ले रहे थे तो उस मकान के कोने वाले कमरे में घिरे आतंकवादियों ने उनके दस्ते पर गोलियां चलाई । तलाशी दस्ते ने तत्काल पोजीशन ली और दोनो तरफ से जमकर गोलीबारी हुई । इस दौरान उनके दस्ते के दो व्यक्ति साथ वाले कमरे में फंस गए । इन लोगो की जान को आतंकवादियो से भारी संगीन खतरा पैदा हो गया । उन्हें आतंकवादियो से बचाना जरूरी था । स्थिति की गंभीरता को समझते हुए सिपाही वांगसा कंपाउंड के दरवाजे की तरफ पेट के बल रेंगते हुए आगे बढ़े और आतंकवादियो का ध्यान बंटाने के लिए उन्होने फायर डाला । गोलीबारी करते हुए उन्होने अपने उन दोनो व्यक्तियो को कंपाउंड की दीवार के बाहर सुरक्षित दिशा में निकल जाने का इशारा किया । इस गोलाबारी के दौरान सिपाही वांगसा की छाती में गोली लगी । अपने घाव की परवाह किए बिना उन्होंने आतंकवादियों की गोलियों की बौछार के बीच गेट बंद कर दिया और इस तरह उन्हें फंसा दिया । अस्पताल के रास्ते में ही सिपाही वांगसा ने दम तोड़ दिया अपनी इस वीरतापूर्ण कार्रवाई से सिपाही वांगसा ने अपने जवान साथियों की जान बचायी और आतंकवादियों का तेजी से सफाया कर दिया ।

इस प्रकार सिपाही अगोई वांगसा ने उत्कृष्ट कोटि के साहस और कर्तव्यतिष्ठा का प्रदर्शन किया ।

42. 2984586 लांस नायक परमेश्वर राम,
राजपूत ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 25 जून, 1992)

25 जून, 1992 को लांस नायक परमेश्वर राम दादरपुर, गांव में घेराबंदी और खोजी संक्रिया के लिए जाने

वाले तत्काल प्रति कार्रवाई दल में शामिल थे जिसे एक गहरे नाले के साथ लगी हुई पहाड़ी से होते हुए गांव में जाना था। जब यह तत्काल कार्रवाई दल गांव की ओर बढ़ रहा था तो उनका सामना जंगल में ए के–47 राइफलों से लैस तीन उग्रवादियों से हो गया जैसे ही उग्रवादियों ने इस दल को देखा तो उन्होंने उस पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी और वहां से भागने का प्रयास करने लगे। लांस नायक परमेश्वर राम अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए उग्रवादियों पर 12 फुट ऊंची एक पहाड़ी से कूदते हुए झपट पड़े। इस प्रकार लांस नायक परमेश्वर राम ने उनमें से दो उग्रवादियों को अकेले ही मार गिराया। उन्होंने यह कार्रवाई इतनी तेजी से की, कि तीसरा उग्रवादी हक्का-बक्का रह गया और अपना हथियार छोड़कर भाग खड़ा हुआ। इस गैर-कमीशन अफसर को इस कार्रवाई में छाती और पेट में चोटें आई परन्तु वे उन उग्रवादियों को उनकी दो ए के राइफलों सहित काबू करने और पकड़ने में सफल रहे।

इस प्रकार लांस नायक परमेश्वर राम ने उग्रवादियों का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस, वीरता और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

43. जी/159784 वाई, सुपरिटेंडेंट, बी० आर० ग्रेड II, ठाकुर राम ओढ़ (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 जुलाई, 1992)

377 सड़क अनुरक्षण प्लाटून, केयर 102 सड़क निर्माण कंपनी के सुपरिटेंडेंट वी० आर० ग्रेड II, ठाकुर राम ओढ़ को जनवरी, 1992 के दौरान सीमा सड़क संगठन की परियोजना दंतक के अन्तर्गत निर्धारित समय के भीतर चट्टानों की कटाई के काम पर लगाया गया, जो मध्यवर्ती भूटान में टिन-टिन बि गोम्फू सड़क पर पड़ती थीं।

बी० आर० ग्रेड II ओढ़ ने अनेक अवसरों पर अनेक चुनौतीपूर्ण काम किए। उन्होंने कठिन अवरोधों और अस्थिर जमीन के बावजूद 1.6 कि० मी० पर 130 फुट एस० एस० बेली पुल का निर्माण किया। एक और अवसर पर इन्होंने टी० जी० रोड पर 22 से 24 कि० मी० के बीच सड़क संचार कायम किया, जो चट्टानों के खिसकने से टूट गया था।

13 जुलाई, 1992 के दिन श्री ठाकुर राम ओढ़ टी जी० रोड पर 23 कि० मी० पर चट्टान कटान का कार्य का निरीक्षण कर रहे थे। एक डोजर और कुछ मजदूरों की मदद से मलबा हटाने का काम चल रहा था, ढलान वाले हिस्से के ऊपर जहां डोजर काम कर रहा था एक पेड़ बिल्कुल गिराऊ सा था। यह सोचकर कि पेड़ नीचे गिर सकता है उन्होंने कार्मिकों को पेड़ काटने का निर्देश दिया। इस बीच पेड़ सड़क की ओर झुकना शुरू हो गया। श्री ओढ़ ने सभी लोगों को आसन्न खतरे से चेताया और उन्हें सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए कहा। लेकिन डोजर आपरेटर ओ० ई० एम० राम देव गिरते हुए पेड़ की शाखाओं और ऊपरी पहाड़ी से फिसलते पत्थर के बीच फंस गया। श्री ओढ़ अपनी जान पर खेलते हुए ओ० ई० एम० राम देव को डोजर से बाहर खींच रहे थे तो पेड़ की एक और बहुत बड़ी शाखा ऊपर आ गिरी और श्री ओढ़ जख्मी हो गए। वे घाटी की तरफ गिरे और बेहोश हो गए। बाद में निकटवर्ती एम० आई० कक्ष में ले जाते समय उन्होंने दम तोड़ दिया।

इस प्रकार सुपरिटेंडेंट बी० आर० ग्रेड II ठाकुर राम ओढ़ ने उच्चतम कोटि के साहस, दृढ़ निश्चय और कर्तव्यनिष्ठ का प्रदर्शन किया।

---

44. जे० सी०–175071 सूबेदार दर्शन सिंह रावल
10 गढ़वाल राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 21 अगस्त 1992)

21 अगस्त 1992 को मेजर शिवेन्द्र सिंह के नेतृत्व में 10 गढ़वाल राइफल्स की एक कंपनी को शंकरपुरा गांव में छापा मारने का कार्य सौंपा गया था मेजर शिवेन्द्र सिंह ने गांव के नक्शे का अध्ययन करने के बाद सूबेदार दर्शन सिंह रावल के नेतृत्व वाली प्लाटून को साथ लेकर छापा मारने की योजना बनाई। यह प्लाटून सुबह 9.30 बजे एक हल्के वाहन में पूर्व दिशा की ओर से गांव में घुसी। जब वह प्लाटून गांव में प्रवेश कर रही थी तो सबके आगे चल रहे वाहन पर एक मकान में छिपे राष्ट्र विरोधी तत्वों ने ए के–47 राइफलों से गोलीबारी शुरू कर दी ताकि प्लाटून को आगे बढ़ने से रोका जा सके और अपने साथियों को सजग किया जा सके। यह महसूस करते हुए कि उनके पूरे दल का आगे बढ़ना असम्भव हो गया है सूबेदार दर्शन सिंह राइफलमैन हरेन्द्र सिंह के साथ उस मकान में घुस गए। उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति खिड़की से दूसरे मकान में भागने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने तुरन्त ही उसका पीछा किया और देखा कि वह एक खिड़की से अटारी पर चढ़ रहा है। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बगैर सूबेदार रावल खिड़की के नजदीक गए और मकान के भीतर गोली चला दी। उनके दृढ़ संकल्प को देखते हुए उस उग्रवादी ने अपनी पिस्तौल बाहर की ओर फैंक दी और आत्मसमर्पण की इच्छा प्रकट की। उसके आत्मसमर्पण करने के पश्चात यह पता चला कि वह हिजबुल मुजाहिदीन का जिला प्रमुख (श्रीनगर) ज़फरउल इस्लाम था। उग्रवादियों के छिपने के उस ठिकाने की तत्काल तलाशी लेने पर वहां से बड़ी मात्रा में हथियार और गोलीबारूद बरामद हुआ। गांव की भी तलाशी ली गई और चार अन्य उग्रवादियों को पकड़ लिया गया।

इस प्रकार सूबेदार दर्शन सिंह रावल ने अदम्य साहस वीरता और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया।

45. कर्नल प्रबोध चन्द्र भारद्वाज
(आई० सी०–24178), वीर चक्र,
पैरा रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 अक्तूबर 1992)

13 अक्तूबर, 1992 को 1 पैरा (कमांडो) के कमान अफसर को 19.30 बजे यह सूचना मिली कि कर्षण केबल के टूट जाने के कारण एक केबल कार में 10 यात्री फंस गए हैं । यह केबल कार हिमाचल प्रदेश स्थित परवाणू में टिम्बर ट्रेल टर्मिनल से लगभग 500 मीटर दूर 1300 फुट की ऊंचाई पर हवा में लटक रही थी । इनसे घटनास्थल पर जाने और विशेष बचाव कार्य शुरू करने के लिए कहा गया। इस प्रयोजन के लिए तुरन्त पांच प्रशिक्षित अफसरों और कार्मिकों के एक दल का चयन किया गया । मेजर इवान जोसफ क्रैस्टो से दल का नेतृत्व करने के लिए कहा गया। एक घण्टे के बाद कमान अफसर ने अपने दल के सदस्यों को एकत्र कर विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किया और हेलिकाप्टर व जमीन पर बचाव कार्य में इस्तेमाल किये जाने वाले विभिन्न उपस्करों को इकट्ठा किया । 14 अक्तूबर, 1992 को 0930 बजे कमान अफसर और मेजर इवान जोसफ क्रैस्टो ने पायलटों के साथ विस्तृत हवाई सर्वेक्षण किया। 1630 बजे एम० आई०–17 हेलिकाप्टर से उड़ान भरी गई । कमान अफसर मेजर इवान जोसफ क्रैस्टो के साथ फंसी हुई केबल कार पर उतरने और आपातकालीन सहायता कार्य की देख-रेख करने गए । परन्तु अनेक कठिनाइयों के कारण इस कार्य में सफलता नहीं मिली। कई बार प्रयास करने के बाद मेजर इवान जोसफ क्रैस्टो हेलिकाप्टर से केबल कार की छत पर उतरने में कामयाब रहे । कर्नल प्रबोध चन्द्र भारद्वाज, वीर चक्र ने 14 और 15 अक्तूबर, 1992 को बचाव कार्य की देख-रेख करने के लिए हेलिकाप्टर से भरी गई सभी उड़ानों में भाग लिया। हेलिकाप्टर से समग्र बचाव कार्य का संचालन करने में कर्नल प्रबोध चन्द्र भारद्वाज, वीर चक्र ने उत्कृष्ट योजना बनाकर तदनुसार व्यवस्था करने और जोखिम उठाने में कुशलता का परिचय दिया । यद्यपि इन्हें कई विषम परिस्थितियों का सामना करना पडा । यह भी जानते थे कि यह कार्य अत्यधिक जोखिमपूर्ण है फिर भी ये बचाव कार्य करने में जुटे रहे और इसे सफल बनाना सुनिश्चित किया । इस कार्रवाई में इन्होंने आत्मविश्वास, साहस, दृढ़-संकल्प, दृढ़-निश्चय और वीरता का परिचय दिया।

इस प्रकार कर्नल प्रबोध चन्द्र भारद्वाज, वीर चक्र ने एक जोखिमपूर्ण कार्य को पूर्णतः सफल बनाने में अनुकरणीय साहस, वीरता, दृढ़-निश्चय, तकनीकी क्षमता और व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

46. ग्रुप कैप्टन फाली होमी मेजर वा० मे० (11442)
उड़ान (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 अक्तूबर 1992)

13 अक्तूबर, 1992 को ग्रुप कैप्टन फाली होमी मेजर को परवाणू (हिमाचल प्रदेश) में एक अत्यंत जोखिमपूर्ण और कठिन बचाव अभियान को हाथ में लेने के लिए कहा गया। "टिम्बर ट्रेल" वाहक रोप-वे का कर्षण केबल टूट गया था और 1300 फीट की ऊंचाई पर लटक गई केबल कार में 10 व्यक्ति फंस गए थे । इन्होंने योग्य वायु–कर्मियों और आवश्यक उपकरणों को अपने साथ लेकर दुर्घटना स्थल के लिए उड़ान भरी और 0850 बजे चण्डी मंदिर पहुंच गए । इन्होंने बड़ी तत्परता से स्थिति का विश्लेषण किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पर्यटकों को कार से बाहर निकालने का एकमात्र उपाय यह है कि उन्हें केबल कार से रस्से की सहायता से ऊपर खींच लिया जाए। अपने व्यापक अनुभव और विशिष्ट उड़ान योग्यता के आधार पर यह अनुमान लगाया कि हेलिकाप्टर को केबल कार के ऊपर से गुजर रहे केबलों के निकट स्थिर रखना होगा। यह एक अत्यंत कला एवं अभूतपूर्व निर्णय था। ग्रुप कैप्टन फाली होमी मेजर ने कार में फंसे पर्यटकों को बचाने के लिए एम० आई०–17 हेलीकाप्टर का प्रयोग करने का निर्णय लिया । इन्होंने अपने सहकर्मियों को किए जाने वाले कार्य की पूरी-पूरी जानकारी दी और यह बताया कि किसी भी भूल-चूक का परिणाम घातक होगा। इन्होंने इस कार्य के लिए अपने साथियों को प्रेरित किया और उनका मनोबल बढ़ाया। इन्होंने वायु–कर्मी दल के अभिन्न अंग के रूप में कार्य किया और उड़ाने भी भरीं ।

इनकी देख-रेख में एम० आई०–17 हेलिकाप्टर ने कार में फंसे पांच पर्यटकों को 14 अक्तूबर, 1992 को और शेष को अगले दिन बाहर निकाला ।

इस प्रकार ग्रुप कैप्टन फाली होमी मेजर, वा० मे० ने अपने कुशल नेतृत्व और अदम्य साहस का परिचय देते हुए संकट में फंसे पर्यटकों को बचाया ।

47. विंग कमांडर सुभाष चन्द्र (12957), उड़ान (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 अक्तूबर, 1992)

13 अक्तूबर, 1992 को टिम्बर ट्रेल वाहक रोप–वे का कर्षण केबल टूट गया और केबल कार जिसमें दस व्यक्ति सवार थे, नदी के तल से 1300 फुट की ऊंचाई पर घाटी के बीच लटक गई। 14 अक्तूबर, 1992 को 1400 बजे, विंग कमांडर सुभाष चन्द्र को केबल कार में फंसे पर्यटकों को सुरक्षित बाहर निकालने का काम सौंपा गया । इन्होंने 1410 बजे चंडी मंदिर से उड़ान भरी और दुर्घटना के इलाके में रोप–वे केबलों, एच टी केबलों, दुर्घटनाग्रस्त केबल कार और अन्य बातों का निरीक्षण किया । 1620 बजे विंग कमांडर सुभाष चन्द्र ने बचाव अभियान के लिए उड़ान भरी जोकि अब तक का सर्वाधिक कठिन तथा खतरनाक बचाव कार्य था। घाटी बहुत ही संकरी थी, इसलिए हेलिकाप्टर का प्रचालन अत्यंत सावधानी और कुशलता से किया जाना था और 1350 फीट की ऊंचाई पर रोप–वे के आरम्भिक स्थान पर आकाश में उसे स्थिर खड़ा रखना था। विशिष्ट कौशल और उड़ान कुशलता का उपयोग करते हुए ये अपने हेलिकाप्टर को केबल कार के 30 मीटर की ऊंचाई तक नीचे की ओर ले आए। वह बाईं ओर की केबल हेलिकाप्टर के ऊपर घूमते पंखे से लगभग 3–5 मीटर की दूरी पर ही थी । हेलिकाप्टर को इतनी अधिक

ऊंचाई पर बिना किसी संकेत चिन्ह के और विपरीत दिशा से आती हवा में स्थिर रखना अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य था।

बचाव की यह कार्रवाई 15 मिनट तक चली जो अत्यावश्यक थी। विंग कमांडर सुभाष चन्द्र अपने सहकर्मियों को शांत और उत्साहित करते रहे ताकि उन्हें अत्यधिक एकाग्रचित रखा जा सके। यह अभियान सफल रहा और केबल कार में फंसे पर्यटकों को रस्से की सहायता से ऊपर की ओर हेलिकाप्टर में खींचा जा सका।

इस प्रकार विंग कमांडर सुभाष चन्द्र ने अदम्य साहस, समर्पण भावना और उत्कृष्ट उड़ान-कौशल का परिचय दिया।

48. 13610602 एन हवलदार कृष्ण कुमार, पैराशूट रेजिमेंट (कमांडो)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 अक्तूबर, 1992)

13 अक्तूबर, 1992 को 1930 बजे 1 पैरा (कमांडो) के कमान अफसर को यह सूचना मिली कि अनुकर्षण केबल के खट से बंद होने के कारण एक केबल कार में 10 यात्री फंस गए हैं। यह केबल कार हिमाचल प्रदेश स्थित परवाणु में टिम्बर ट्रेल के समीप 1300 फुट की ऊंचाई पर हवा में झूल रही थी। कमान अफसर से घटना-स्थल पर जाने और विशेष बचाव कार्य की तैयारी शुरू करने के लिए कहा गया। मेजर इवान जोसफ क्रैस्टो के नेतृत्व में पांच व्यक्तियों के एक बचाव दल का चयन किया गया। हवलदार कृष्ण कुमार बचाव दल के सदस्यों में से एक थे। इन्हें मेजर इवान जोसफ क्रैस्टो के बाद केबल कार पर उतरकर समूचे बचाव कार्य में उनकी मदद कर उन्हें हवाई आपातकाल में सहारा देना भी था। 14 अक्तूबर, 1992 को सायंकाल में बचाव कार्य शुरू करते समय हवलदार कृष्ण कुमार हेलिकाप्टर के विचपर उतरे। उसके बाद मेजर इवान जोसफ क्रैस्टो ने उनके "बडी" के रूप में कार्य कर समूचा बचाव कार्य तीव्र गति से किया। इस कार्रवाई के दौरान हेलिकाप्टर में कुछ गड़बड़ हो जाने से केबल कार को अनुकर्षण केबलों से विंच की तार टकरा जाने की वजह से संकट पैदा हो गया। निर्भीक हवलदार कृष्ण कुमार ने केबल कार पकड़ने के लिए आगे की तरफ से कलाबाजी खाकर संकट दूर कर दिया। अपनी जान को भारी जोखिम में डालकर इन्होंने भीषण दुर्घटना को टाल दिया। इस दुर्घटना के होने से न केवल हेलिकाप्टर को बल्कि झूलती केबल कार को भी खतरा हो सकता था। दुर्घटना की आशंका और कम लोग की प्रतीति को ध्यान में रखते हुए बाद में यह निर्णय लिया गया कि गैर-कमीशन प्राप्त अफसर को आगे केबल कार में न उतारे जाने के बजाय फंसे हुए यात्रियों को बचाया जाए। यह अफसर विंच से होकर हेलिकाप्टर में घुसा और उसके बाद इन्होंने शेष बचाव कार्य में हेलिकाप्टर नियंत्रक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हेलिकाप्टर से झूलते हुए हवलदार कृष्ण कुमार प्रत्येक बचाव चक्र के दौरान खतरनाक ढंग से लटके रहे ताकि अनुकर्षक केबलों के बीच विंच को सही ढंग से नियंत्रित कर किसी संभावित खतरे का पूर्वानुमान लगाया जा सके।

इस प्रकार हवलदार कृष्ण कुमार ने अदम्य साहस, व्यावसायिक क्षमता और कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए संकट में फंसे हुए कई यात्रियों की जान बचाने के लिए खतरों भरा काम अपने हाथ में लिया।

गिरीश प्रधान, निदेशक

सं० 67–प्रेज/93 राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्ति—को उसके वीरतापूर्ण कार्य के लिए "शौर्य चक्र का बार" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :—

267944 जूनियर वारंट अफसर वेंकट फणि राजू काला, शौर्य चक्र, एयर फील्ड सेफ्टी आपरेटर

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 दिसम्बर 1991)

4 दिसम्बर, 1991 को ग्वालियर रेयन मिल्स में रासायनिक बॉयलर के फटने और घरेलू गैस सिलेंडरों के फट जाने से भयंकर आग लग गई थी। विस्फोट और आग से सारी बिल्डिंग ढह गई और बहुत से लोग मलबे के नीचे दब गए। ग्वालियर में भारतीय वायुसेना को बचाव कार्य में सहायता देने के लिए बुलाया गया। आधे घंटे के भीतर तीन डी एफ टी, एक एम्बुलेंस और एक एस सी एफ टी को दुर्घटना स्थल पर भेज दिया गया। यद्यपि दुर्घटना स्थल तक सीधे नहीं पहुंचा जा सकता था फिर भी वायुसेना ने आग पर किसी तरह काबू पा लिया। आग पर काबू पा लेने के बाद यह देखा गया कि कुछ गैस सिलेंडरों में से गैस रिस रही है। जूनियर वारंट अफसर राजू, सिलेंडरों के पास पहुंचने के लिए अपनी जान जोखिम में डालकर खतरे की परवाह न करते हुए सिलेंडरों की ओर बढ़े और उन्हें सुरक्षित कर दिया। उसके बाद मलबे और सुलगती आग के बावजूद जूनियर वारंट अफसर राजू अपनी जान की परवाह न करते हुए मलबे को हटाने और भवन के नीचे दबे लोगों को बचाने के काम में जुट गए। जूनियर वारंट अफसर राजू ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और अपनी ड्यूटी के अंतर्गत न आने वाले ऐसे कार्य को हाथ में लिया जिसमें उनकी जान को भारी खतरा था।

इस प्रकार जूनियर वारंट अफसर वेंकट फणि राजू काला, शौर्य चक्र ने उच्च कोटि की वीरता का परिचय देकर अन्यों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया।

गिरीश प्रधान, निदेशक

लोक सभा सचिवालय

(विषय समिति शाखा)

नई दिल्ली–110001, 8 अप्रैल, 1993

सं० 6/1/1/एसी/93—कृषि संबंधी विभागीय स्थायी सदस्य (1993–94) का गठन किया गया है । समिति के समिति निम्नलिखित हैं :—

लोक सभा

1. श्री डी० पंडियन
2. श्री बीरबल
3. श्री नाथू राम मिर्धा
4. श्री जी० गंगा रेड्डी
5. श्री अंकुशराव टोपे
6. श्री शरत् चन्द्र पटनायक
7. श्री गोविन्दराव निकाम
8. कुमारी पुष्पा देवी सिंह
9. श्री चनैया ओडेयर
10. श्री तारा सिंह
11. श्री अनंतराव देशमुख
12. श्री उत्तमराव देवराव पाटिल
13. श्री विदुरा विठोबा नवले
14. श्री राजवीर सिंह
15. कुमारी उमा भारती
16. श्री रूद्रसेन चौधरी
17. श्री गंगा राम कोली
18. डा० गुणवन्त रामभानु सरोदे
19. डा० परशुराम गंगवार
20. श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा
21. श्रीमती कृष्णेन्द्र कौर
22. श्री नीतीश कुमार
23. श्री अर्जुनचरण सेठी
24. श्री विशवशरण सिंह
25. श्री उपेन्द्र नाथ वर्मा
26. श्री जायनल अबेदिन
27. श्री बी० एन० रेड्डी
28. श्री कमला मिश्र मधुकर
29. डा० आर० के० जी० राजुलु
30. श्री शिबू सोरेन

राज्य सभा

31. श्री राम नारायण गोस्वामी
32. श्री हेच० हनुमनतप्पा
33. श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव
34. श्री अनन्त राम जायसवाल
35. डा० बापू कालदाते
36. श्री डेविड लेजर
37. श्री महेश्वर सिंह
38. श्री भूपेन्द्र सिंह मान
39. श्री एन० तंगराज पांडियान
40. श्री एस० के० टी० रामचन्द्रन
41. श्री रामजी लाल
42. डा० एन० तुलसी रेड्डी
43. श्री शिव चरण सिंह
44. श्री सोम पाल
45. श्री के० एन० सिंह

2. अध्यक्ष महोदय ने श्री नीतीश कुमार को समिति का सभापति नियुक्त किया है ।

रेवती बेदी,
उप सचिव

सं० 6/1/1/यू० एण्ड आर० डी० सी०/93—शहरी और ग्रामीण विकास संबंधी विभागीय स्थायी समिति (1993–94) का गठन किया गया है । समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं :—

लोक सभा

1. श्री प्रताप राव बी० भोंसले
2. श्री पी० पी० कालियापेरूमल
3. श्री एन० सुन्दरराज
4. श्री भू० विजयकुमार राजू
5. श्री सज्जन कुमार
6. श्री गंगाधरा सानीपल्ली
7. श्री राजेश खन्ना
8. श्री प्रथू लाल रावत
9. श्री जे० चोक्का राव
10. डा० वाई० एस० राजशेखर रेड्डी
11. श्री विजयराम राजू सलुचार्ला
12. श्री पृथवीराज डी० चव्हाण
13. श्री के० एम० मैथ्यू
14. श्री सुरेन्द्र पाल पाठक
15. श्री रामपाल सिंह
16. श्री देवी बक्स सिंह
17. श्री मदन लाल खुराना
18. श्री कड़िया मुण्डा

19. श्री गिरधारी लाल भार्गव
20. श्री राम सिंह कास्वां
21. श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी
22. श्री सुकदेव पासवान
23. श्री गुलाम मोहम्मद खां
24. श्री सुधीर गिरि
25. श्री सुब्रत मुखर्जी
26. श्री धर्मभिक्षम
27. श्री एन० मुरूगेसन
28. श्री शोभनाद्रीश्वर राव वाड्डे
29. श्री शैलेन्द्र मेहतो
30. श्री फ्रैंक एंथनी

राज्य सभा

31. श्री रामदव भंडारी
32. श्री देवव्रत बिस्वास
33. श्री शिव प्रसाद चनपुरिया
34. चौधरी हरमोहन सिंह
35. श्री सत्यानारायण द्रोणमराजू
36. श्री संघ प्रिय गौतम
37. श्री बी० के० हरिप्रसाद
38. श्री जगमोहन
39. श्री शिवाजीराव गिरिधर पाटिल
40. श्री रामचन्द्रन पिल्लै
41. श्री तेन्नाला बालकृष्ण पिल्लै
42. श्री रामसिंह राठवा

2. अध्यक्ष ने श्री प्रतापराव बी० भोसले को समिति का सभापति नियुक्त किया है।

रेवती बेदी,
उप सचिव

सं० 6/1/1/ एफसीपी एंड पी डी/93—खाद्य नागरिक पूर्ति और सार्वजनिक वितरण संबंधी विभागीय स्थायी समिति (1993–94) का गठन किया गया है। समिति के निम्नलिखित सदस्य हैं :—

लोक सभा

1. श्री बी० एम० मुजाहिद
2. श्री जी० देवराय नायक
3. श्री एन० जे० राठवा
4. श्री राम प्रकाश चौधरी
5. श्री अवतार सिंह भड़ाना
6. डा० (श्रीमती) पदमा
7. श्री ए० जयमोहन
8. श्री आनन्दगजपति राजू पूसापति
9. श्री पवन दीवान
10. श्री सुनील दत्त
11. श्री बी० कृष्ण राव
12. श्री विजय कृष्ण हान्डिक
13. श्री गोपीनाथ गजपति
14. श्री नरेश कुमार बलियान
15. श्री श्याम बिहारी मिश्र
16. श्री डी० जे० टंडेल
17. श्री रामकृष्ण कुसमरिया
18. श्री छोटे लाल
19. श्री पंकज चौधरी
20. प्रो० राम कापसे
21. श्री कबीन्द्र पुरकायस्थ
22. श्री लाल बाबू राम
23. श्री शशि प्रकाश
24. श्री राम अवध
25. श्री सैयद मसूदल हुसैन
26. श्री रामचन्द्र मरोतराव बंगारे
27. श्री मनोरंजन सुर
28. डा० (श्रीमती) के० एस० सौन्द्रम
29. श्री छोटे सिंह यादव
30. श्री बीर सिंह महतो

राज्य सभा

31. श्री सुन्दर सिंह भंडारी
32. श्रीमती मीरा दास
33. श्री बी० वी० अब्दुल्ला कोया
34. श्री मौलाना असद मदनी
35. श्री सुधीर रंजन मजुमदार
36. श्री तारा चरण मजुमदार
37. श्री मूलचन्द मीणा
38. श्री विनोद शर्मा
39. श्री जगन्नाथ सिंह
40. श्री दिण्डीवनम जी० वेंकटरामन्
41. श्री रमेन्द्र कुमार यादव "रवि"

2. अध्यक्ष महोदय ने श्री राम कापसे को समिति का सभापति नियुक्त किया है।

रेवती बेदी,
उप सचिव

सं० 6/1/1/उजो/93—उर्जा सम्बन्धी विभागीय स्थायी समिति (1993-94) का गठन किया गया है । समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं :—

लोक सभा

1. श्री भवानीलाल वर्मा
2. श्री मुरली देवरा
3. श्री मोतीलाल सिंह
4. श्री खेलसाय सिंह
5. श्री खेलन राम जांगडे
6. श्री परसराम भारद्वाज
7. श्री थोटा सुब्बा राव
8. श्री के० पी० रेड्डीया यादव
9. श्री शिव चरण माथुर
10. डा० कृपासिन्धु भोई
11. श्री दलबीर सिंह
12. श्री विलास मुत्तेमवार
13. श्री पी० सी० चाक्को
14. श्री वीरेन्दर सिंह
15. श्री लक्ष्मीनारायण मणि त्रिपाठी
16. प्रो० रीता वर्मा
17. श्री राम टहल चौधरी
18. श्री शंकरसिंह वाघेल
19. श्री जसवंत सिंह
20. श्री केशरी लाल
21. श्री राजेश कुमार
22. श्री अर्जुन सिंह यादव
23. श्री अजित सिंह
24. श्री हाराधन राय
25. श्री अनिल बसु
26. श्री विजय कुमार यादव
27. डा० डी० वेंकटेश्वर राव
28. श्री चित्त बसु
29. श्री मोहन सिंह फिरोजपुर
30. श्री मती दिल कुमारी भण्डारी

राज्य सभा

31. श्री परमेश्वर कुमार अग्रवाल
32. श्री सुनील बसुराय
33. श्री एम० एम० आशिम
34. श्री मनमोहन माथुर
35. श्रीमती इला पंडा
36. श्री जे० एस० राजू
37. श्री दयानन्द सहाय
38. श्री रजनी रंजन साहू
39. श्री वीरेन जे० शाह
40. श्री मतंग सिंह
41. श्रीमती कमला सिन्हा
42. श्री यशवन्त सिन्हा

2. अध्यक्ष महोदय ने श्री जसवंत सिंह को समिति का सभापति नियुक्त किया है ।

के० एम० मित्तल
उप सचिव

सं० 6/1/1/संचार/93—संचार संबंधी विभागीय समिति (1993-94) का गठन किया गया है । समिति के निम्नलिखित सदस्य है :—

लोक सभा

1. कुमारी विमला वर्मा
2. श्री आर० जीवरत्नम
3. श्री श्रवण कुमार पटेल
4. श्री लाईता उम्ब्रे
5. श्री सुरजभानु सोलंकी
6. श्री एन० डेनिस
7. श्री जगमीत सिंह बरार
8. श्री पवन कुमार बंसल
9. श्री कोडीकुन्नील सुरेश
10. श्री बी० देवराजन
11. श्री इरा अन्बारासु
12. डा० बी० जी० जावाली
13. श्री सोमजी भाई डामोर
14. श्री मोहनलाल झिकराम
15. श्री महेश कुमार कनोडिया
16. श्रीमती दीपिका एच० टोपीवाला
17. डा० साक्षीजी महाराज स्वामी
18. श्री ललित उरांव
19. श्री अन्ना जोशी
20. श्री शरद यादव
21. श्री राम पुजन पठेल
22. श्री शिव चरण वर्मा
23. श्री रूपचन्द पाल
24. श्री सत्यगोपाल मिश्र
25. श्री ए० अशोकराज
26. श्री जी० एम० सी० बालयोगी
27. श्री राज किशोर महतो

28. श्री सनत कुमार मंडल
29. श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवसी

राज्य सभा

30. डा० जैड० ए० अहमद
31. श्री प्रकाश यशवन्त अम्बेडकर
32. श्री एम० ए० बेबी
33. श्रीमती कैलाशपति
34. श्री वीरेन्द्र कटारिया
35. श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल
36. श्रीमती जयन्ती नटराजन
37. श्री जी० प्राथापा रेड्डी
38. श्रीमती सुषमा स्वराज
39. श्री विजोल

2. अध्यक्ष ने कुमारी विमला वर्मा को समिति का सभापति नियुक्त किया है ।

के० एम० मित्तल
उप सचिव

सं० 6/1/1/एल० एण्ड डब्ल्यू/93—विभागों से सम्बद्ध श्रम और कल्याण संबंधी स्थायी समिति (1993–94) का गठन कर दिया गया है । समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं :—

लोक सभा

1. श्री डी० के० नायकर
2. श्री एस० बी० थोरात
3. श्री भेरू लाल मीणा
4. श्री के० प्रधानी
5. श्रीमती कमला कुमारी करेदुल्ला
6. कुमारी पद्मश्री कुडूमुल्ला
7. श्री सिद्दप्पा भीमप्पा न्यामगोड
8. डा० पी० वल्लल पेरूमान
9. डा० चिन्ता मोहन
10. श्री ए० प्रताप साय
11. श्रीमती चन्द्र प्रभा अर्स
12. श्री बी० अकबर पाशा
13. श्री रमेश चेन्नितला
14. श्री गया प्रसाद कोरी
15. श्री दत्यात्रेय बंडारू
16. श्री चन्दूभाई देशमुख
17. प्रो० रासा सिंह रावत
18. श्री राम नारायण बैरवा
19. श्री शिव राज सिंह चौहान
20. श्री सुरेशानन्द स्वामी
21. श्री महेन्द्र बैठा
22. श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह
23. श्री गोविन्द चन्द्र मुंडा
24. श्री अजय मुखोपाध्याय
25. श्री रूप चन्द मुरमु
26. श्री विश्वनाथ शास्त्री
27. डा० आर० श्रीधरन
28. श्री राम सागर
29. श्री याइमा सिंह युमनाम
30. श्री सत्येन्द्रनाथ ब्रह्मो चौधरी

राज्य सभा

31. श्री मोहम्मद अमीन
32. मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी
33. श्री एन० ई० बलराम
34. श्री सुशील बरोंगपा
35. श्रीमती विद्या बेनीवाल
36. श्री मुरलीधर चन्द्रकान्त भन्डारे
37. डॉ० फागुनी राम
38. श्री आनन्द प्रकाश गौतम
39. श्री गुंडप्पा कोरवार
40. श्री एस मुथु मणि
41. श्री कामेश्वर पासवान
42. श्री नरेन्द्र प्रधान
43. श्री राम रतन राम
44. श्रीमती रतन कुमारी

2. अध्यक्ष महोदय ने श्रीमती चन्द्र प्रभा अर्स को समिति का सभापति नियुक्त किया है ।

के० एम० मित्तल
उप सचिव

(विषय समिति शाखा)

नई दिल्ली–110001, दिनाँक 9 अप्रैल, 1993

सं० 6/1/1/पी० एण्ड सी० सी०/93–पैट्रोलियम तथा रसायन संबंधी विभागीय स्थायी समिति (1993–94) का गठन किया गया है । समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं :—

लोक सभा

1. श्री बारे लाल जाटव
2. डा० रवि मल्लू
3. श्री सुरेन्द्र सिंह कैरों
4. श्री संत राम सिंगला

5. श्री ए० जी० एस० रामबाबू
6. श्री आर० प्रभु
7. श्री सी० पी० मुदाल गिरियप्पा
8. श्री वी० एस० विजयराघवन
9. श्री अरविन्द तुलसीराम काम्बले
10. श्रीमती सूर्यकान्ता पाटील
11. श्री एम० कृष्णा स्वामी
12. श्री गोपी नाथ गजपति
13. श्री के० राममूर्ति टिंडिवनाम
14. श्री श्रीबल्लभ पाणिग्रही
15. डा० लक्ष्मीनारायण पाण्डेय
16. श्री जनार्दन प्रसाद मिश्र
17. श्री काशीराम राणा
18. श्री रामेश्वर पाटीदार
19. श्री रतिलाल कालीदास वर्मा
20. श्री सोमाभाई पटेल
21. श्री हरि किशोर सिंह
22. श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव
23. श्री रामनिहोर राय
24. श्री उद्धव बर्मन
25. डा० असीम बाला
26. श्री सूर्य नारायण सिंह
27. श्री साईमन मरान्डी
28. श्री पीयूष तीरकी
29. श्री मुही राम सैकिया
30. डा० जयन्त रंगपी

राज्य सभा

31. श्री लक्खीराम अग्रवाल
32. श्री ई० बालानन्दन
33. श्री बलबीर सिंह
34. चोधरी हरि सिंह
35. श्री मोहम्मद मसूद खान
36. श्री पशुमपोन त० किरूट्टिनन
37. श्री जी० वाई० कृष्णन्
38. श्री महेन्दर सिंह लाठर
39. श्री जगदीश प्रसाद माथुर
40. श्री वी० नारायण सामी
41. श्री मैन्ती पद्मनाभम
42. श्रीमती सत्या बहिन
43. श्री विश्वजित पी० सिंह
44. श्री एस० एस० सुरजेवाला
45. श्री दिनेश भाई त्रिवेदी

2. अध्यक्ष महोदय ने श्री श्रीवल्लभ पाणिग्रही को समिति का सभापति नियुक्त किया है ।

आर० के० चटर्जी
उप-सचिव

योजना और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

(सांख्यिकी विभाग)

नई दिल्ली–110001, दिनांक 2 अप्रैल, 1993

सं० एम–13011/1/93-अप्रशा० IV – राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन की शासी परिषद के कार्यों तथा गठन से संबंधित इस विभाग की दिनांक 26 मार्च, 1984 की अधिसूचना संख्या एम–13011/2/80–रा० प्र० सर्वे० II के माध्यम से संशोधित, भारत सरकार के दिनांक 5 मार्च, 1970 की संकल्प संख्या डी० एस०/एस० टी० एस०/4–69 के अनुसरण में, निम्नलिखित सरकारी तथा गैर–सरकारी व्यक्तियों को राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन की शासी परिषद के सदस्यों के रूप में 1 जनवरी, 1993 से दो वर्ष की अवधि के लिए नियुक्त किया गया है :—

क. गैर–सरकारी :

1. प्रो० एन० भट्टाचार्य,
   भारतीय सांख्यिकीय संस्थान,
   203, बी० टी० रोड,
   कलकत्ता–700035 ।
2. प्रो० शिबदास बधोपाधाय,
   भारतीय सांख्यिकीय संस्थान,
   203, बी० टी० रोड,
   कलकत्ता–700035 ।
3. डा० (श्रीमती) कांता आहूजा,
   उप कुलपति, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,
   अजमेर–305001 ।
4. प्रो० आर० राधाकृष्ण ,
   निदेशक, आर्थिक तथा सामाजिक अध्ययन केन्द्र,
   हैदराबाद–560016 ।
5. डा० के० सुन्दरम,
   प्रोफेसर, अर्थशास्त्र,
   दिल्ली स्कूल आफ इकोनोमिक्स,
   दिल्ली–110007 ।

ख. सरकारी :

1. निदेशक, अर्थ तथा सांख्यिकी,
   उड़ीसा सरकार ।
2. निदेशक, अर्थ शास्त्र सांख्यिकी,
   केरल सरकार ।
3. निदेशक, आर्थिक आसूचना विभाग,
   उत्तर प्रदेश सरकार ।

4. सलाहकार (परिपेक्ष्य आयोजना),
योजना आयोग ।

5. प्रभारी अधिकारी,
सांख्यिकीय विश्लेषण तथा संगणक सेवाएं,
भारतीय रिजर्व बैंक,
बम्बई ।

विमै मैनी
अवर सचिव

औद्योगिक विकास विभाग
(तकनीकी विकास महानिदेशालय)
नई दिल्ली, दिनांक 24 मार्च 1993
संकल्प

सं० सी० एल० ई०/11(18)/93—भारत सरकार ने लैम्प, फिटिंगस तथा कम्पोनेंट्स उद्योग के लिए निम्नलिखित संरचना के साथ इस संकल्प के जारी होने तक दो वर्ष की अवधि के लिए एक विकास नामिका के पुनर्गठन का निर्णय लिया है :—

1. श्री एच० एस० ममाक, मेसर्स पीको इलेक्ट्रोनिक्स एंड इलेक्ट्रिकल्स लि०, ब्लाक "ए", शिवसागर स्टेट, डा० एनी बेसेंट रोड, बम्बई–400010 ।	अध्यक्ष
2. डी० सी० (एस० एस० आई०) कार्यालय का प्रतिनिधि, निर्माण भवन, नई दिल्ली–110011 ।	सदस्य
3. योजना आयोग का प्रतिनिधि, योजना भवन, नई दिल्ली ।	सदस्य
4. भारतीय मानक ब्यूरो का प्रतिनिधि, मानक भवन, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली ।	सदस्य
5. मेसर्स अपार लि० का प्रतिनिधि, नाडियाड (गुजरात) ।	सदस्य
6. मेसस सिल्वेनिया एंड लक्ष्मण लि० का प्रतिनिधि । नई दिल्ली ।	सदस्य
7. मेसर्स एच० एम० टी० लि० (लैम्प इकाई) का प्रतिनिधि हैदराबाद ।	सदस्य
8. मेसस सूर्या रोशनी लि० का प्रतिनिधि नई दिल्ली ।	सदस्य
9. मेसर्स क्राम्पटन ग्रीव्स लि० का प्रतिनिधि बम्बई ।	सदस्य
10. मेसर्स ई० सी० ई० उद्योग लि का प्रतिनिधि नई दिल्ली ।	सदस्य
11. मेसर्स मैसूर लैम्प वर्क्स लि०, बंगलूर का प्रतिनिधि	सदस्य
12. मेसर्स कल्याना लैम्पस एंड कम्पोनेंट्स लि० मद्रास का प्रतिनिधि	सदस्य
13. मै० एस० एल० सी० उद्योग लि०, बंगलूर का प्रतिनिधि	सदस्य
14. मेसर्स विजय वायर्स एंड फिलामेंट्स (प्रा०) लि मैसूर का प्रतिनिधि	सदस्य
15. इलेक्ट्रिक लैम्प तथा कम्पोनेंट निर्माणकर्ता संघ का अध्यक्ष	सदस्य
16. श्री एस० आर० आनन्द, परामर्शदाता	सदस्य
17. श्री के० के० तनेजा, भूतपूर्व उमनि, तविमनि	सदस्य सदस्य
18. श्री एस० के० पल्हन, औद्योगिक सलाहकार त० वि म नि० ।	सदस्य
19. श्री पी के सुंकारिया, विकास अधिकारी, त० वि० म० नि०, उद्योग मंत्रालय, उद्योग भवन, नई दिल्ली ।	सदस्य- सचिव

नामिका के संदर्भ की शर्तें निम्न होंगी :—

1. गुणवत्ता मूल्य तथा उत्पादकता के संदर्भ में भारत में प्रौद्योगिकी के वर्तमान स्तर तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का मूल्यांकन ।
2. लैम्प तथा फिटिंग में नई प्रौद्योगिकी द्वारा ऊर्जा संरक्षण ।
3. उद्योग की विकास रूपरेखा ।
4. अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में उद्योग को प्रतिस्पर्धि बनाने के लिए विकसित उत्पाद तथा उत्पादन की आवश्यकताओं पर विचार करना ।
5. उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए भविष्य में उद्योग द्वारा आवश्यक मूल्य निवेशों का मूल्यांकन करना ।
6. कोई और पहलू जिसे नामिका उद्योग के विकास के लिए आवश्यक समझती हो ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों को भेज दी जाए । यह भी आदेश दिया जाता है कि सामान्य सूचना के लिए संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

मदन मोहन
निदेशक (प्रशासन)

इलेक्ट्रानिकी विभाग
(इलेक्ट्रानिक्स निकेतन)
नई दिल्ली–110003, दिनांक 8 अप्रैल 1993
संकल्प

सं० 25(1)/92 ई० आर० एंड डी० सी० आई०—1. भारत सरकार ने इलेक्ट्रानिकी विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण

के अन्तर्गत कलकत्ता, लखनऊ, मोहाली, पुणे तथा तिरुवनन्तपुरम स्थित पांच स्वायत्त पंजीकृत वैज्ञानिक संस्थाओं जिन्हें इस समय इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र (ई आर एण्ड डी सी) के नाम से जाना जाता है, को एक साथ मिलाते हुए भारतीय इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र (ई० आर० एंड डी० सी० आई०) के नाम से जानी जाने वाली एक स्वायत्त पंजीकृत वैज्ञानिक संस्था की स्थापना करने का निर्णय किया है ।

2. भारतीय इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र की संस्था पंजीकरण अधिनियम, 1960 के अन्तर्गत पंजीकृत किया जाएगा जिसका पंजीकृत कार्यालय इलेक्ट्रानिक्स निकेतन, 6 केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003 में स्थित होगा जबकि पांच केन्द्र ई० आर० एण्ड डी० सी० आई० के तत्वाधान में तथा इसके नियंत्रण के अंतर्गत अपने-अपने स्थापना स्थलों से कार्य करते रहेंगे ।

3. ई० आर० एंड डी० सी० आई० के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित होंगे :—

(क) अद्यतन तकनीकी जानकारी की इलेक्ट्रानिकी प्रौद्योगिकी अनुपयोग में उन्मुख क्षेत्र विशिष्ट अनुसंधान डिजाइन तथा विकास के कार्य करना जिसमें ग्रामी अनुप्रयोग शामिल हैं ताकि तकनीकी जानकारी का सृजन हो सके और उसके उत्पादन के लिए देश की विभिन्न विनिर्माण इकाइयों को उसकी डिलीवरी की जा सके ।

(ख) क्षेत्र में उद्योग को विशेषकर लघु उद्योग को अनुसंधान तथा विकास संबंधी सहायता उपलब्ध करने के जरिए देश में इलेक्ट्रानिकी उद्योग के विकास को बढ़ावा देना ।

(ग) प्रौद्योगिकी विकास के लिए क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाना तथा अन्य राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं तथा शैक्षणिक संस्थानों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करना जिससे प्रौद्योगिकीय क्षमता हासिल करके उसे बरकरार रखा जा सके, आत्मनिर्भरता में अभिवृद्धि की जा सके तथा इलेक्ट्रानिकी प्रौद्योगिकी मे संबंधित सामरिक क्षेत्रों में कमजोरी को कम किया जा सके ।

4. इलेक्ट्रोनिकी विभाग के प्रभारी मंत्री नई दिल्ली स्थित भारतीय इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र के "विजिटर" होंगे ।

5. नई दिल्ली स्थित भारतीय इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र का प्रबंध इलेक्ट्रानिकी विभाग भारत सरकार द्वारा यथा अनुमोदित अन्तर्नियमावली तथा नियमों एवं विनियम के अनुसार अधिशासी परिषद तथा कार्यकारी समिति द्वारा किया जाएगा । अधिशासी परिषद तथा कार्यकारी समिति का गठन नीचे दिए अनुसार होगा :—

1. अधिशासी परिषद

सचिव, इलेक्ट्रानिकी विभाग	—	अध्यक्ष
2. पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल राज्य सरकारों के प्रतिनिधि	—	सदस्य
3. उद्योग के प्रतिनिधि	—	सदस्य
4. राष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान संस्थानों के प्रतिनिधि	—	सदस्य
5. संयुक्त सचिव तथा वित्तीय सलाहकार लेक्ट्रानिकी विभाग	—	सदस्य
6. इलेक्ट्रानिकी विभाग में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम तथा संस्था अनुभाग के प्रभारी संयुक्त सचिव	—	सदस्य
7. सभी इलेक्ट्रानिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्रों के निदेशक	—	सदस्य
8. महानिदेशक	—	सदस्य-सचिव

II. कार्यकारी समिति

1. महानिदेशक	—	अध्यक्ष
2. राज्य सरकार राज्य स्तरीय इलेक्ट्रानिकी विकास निगम के प्रतिनिधि	—	सदस्य
3. उद्योग के प्रतिनिधि	—	सदस्य
4. अनुसंधान तथा विकास के वास्तविक प्रयोगकर्ताओं के प्रतिनिधि	—	सदस्य
5. वित्तीय सलाहकार इलेक्ट्रानिकी विभाग के प्रतिनिधि	—	सदस्य
6 ईआरएंड डीसी प्रभाग इलैक्ट्रोनिकी विभाग के प्रतिनिधि		सदस्य
7. संबंधित ईआरएंडडीसी के निदेशक		सदस्य-सचिव

6. अधिशासी परिषद के अध्यक्ष तथा उसके सदस्य अन्तर्नियमावली में निर्धारित उद्देश्यों को हासिल करने की दृष्टि से भारतीय इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, नई दिल्ली को संस्था के रूप में पंजीकृत कराने तथा उसकी स्थापना करने के लिए प्राधिकृत हैं ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी संबंधित को भेजी जाए ।

नी० गोपालस्वामी
संयुक्त सचिव

संकल्प

सं० 25(1) 92–ई आर एण्ड सी आई०—1. भारत सरकार ने इलेक्ट्रानिकी विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत औरंगाबाद, कालीकट, गोरखपुर, इम्फाल, मोहाली तथा श्रीनगर स्थित छह स्वायत्त पंजीकृत वैज्ञानिक संस्थाओं जिन्हें इस समय इलेक्ट्रानिकी डिजाइन तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र (सी० ईडीटी के नाम से जाना जाता है को एक साथ मिलाते हुए भारतीय इलैक्ट्रोनिकी डिजाइन तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र (सी ई डी टी आई) के नाम से जानी जाने वाली एक स्वायत्त पंजीकृत वैज्ञानिक संस्था की स्थापना करने का निर्णय किया है।

2. भारतीय इलेक्ट्रानिकी डिजाइन तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र को संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत पंजीकृत किया जाएगा जिसका पंजीकृत कार्यालय इलेक्ट्रोनिक्स निकेतन 6 केन्द्रीय कार्यालय परिसर लोदी रोड नई दिल्ली—110003 में स्थित होगा जबकि छह केन्द्र सी ई डी टी आई के तत्वावधान में तथा इसके नियंत्रण के अंतर्गत अपने-अपने स्थापना स्थलों से कार्य करते रहेंगे।

3. सी ई डी टी आई के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित होंगे :—

(क) इलेक्ट्रानिकी उत्पाद डिजाइन, विकास तथा विनिर्माण के सभी पहलुओं में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के जरिए इलेक्ट्रानिकी डिजाइन तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जनशक्ति को प्रशिक्षित करना।

(ख) इलेक्ट्रानिकी के क्षेत्र में संभावित उद्यमकर्ताओं तथा डिजाइनरों का पता लगाना तथा उन्हें सलाह, मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण के जरिए प्रेरित करना ताकि वे सफल उद्यमकर्ता बन सकें।

(ग) उद्योगों, अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशालाओं तथा शैक्षणिक संस्थानों की आवश्यकताओं को समझने के लिए उनके साथ घनिष्ठ रूप से सम्पर्क स्थापित करना और इस प्रकार सीईडीटी की सेवाओं कार्यकलापों को संगत तथा यथार्थ बनाए रखना।

(घ) परामर्श सेवा के आधार पर इलेक्ट्रानिकी उत्पाद विकास तथा डिजाइन के कार्य आरम्भ करना।

4. इलेक्ट्रानिकी विभाग के प्रभारी मंत्री नई दिल्ली स्थित भारतीय इलेक्ट्रानिकी डिजाइन तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र के "विजिटर" होंगे।

5. नई दिल्ली स्थित भारतीय इलेक्ट्रानिकी डिजाइन तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र का प्रबंध इलेक्ट्रानिकी विभाग भारत सरकार द्वारा यथा अनुमोदित अन्तर्नियमावली तथा नियमों एवं विनियमों के अनुसार अधिशासी परिषद तथा कार्यकारी समिति द्वारा किया जाएगा। अधिशासी परिषद तथा कार्यकारी समिति का गठन नीचे दिए अनुसार होगा :—

I. अधिशासी परिषद

1.	सचिव इलेक्ट्रानिकी विभाग	—	अध्यक्ष
2.	महाराष्ट्र राज्य सरकार के प्रतिनिधि	—	सदस्य
3.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि	—	सदस्य
4.	उद्योग के दो प्रतिनिधि	—	सदस्य
5.	सी ई डी टी स्रोत केन्द्र (भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलौर) के प्रतिनिधि	—	सदस्य
6.	संयुक्त सचिव तथा वित्तीय सलाहकार इलेक्ट्रानिकी विभाग	—	सदस्य
7.	इलेक्ट्रानिकी विभाग में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम तथा संस्था अनुभाग के प्रभारी संयुक्त सचिव	—	सदस्य
8.	सभी इलेक्ट्रानिकी डिजाइन तथा प्रौद्योगिकी केन्द्रों के निदेशक	—	सदस्य
9.	महानिदेशक	—	सदस्य-सचिव

II. कार्यकारी समिति

1.	महानिदेशक	—	अध्यक्ष
2.	राज्य सरकार के प्रतिनिधि	—	सदस्य
3.	शैक्षणिक संस्थान के प्रतिनिधि	—	सदस्य
4.	उद्योग के प्रतिनिधि	—	सदस्य
5.	वित्तीय सलाहकार इलेक्ट्रानिकी विभाग के प्रतिनिधि	—	सदस्य
6.	सी० ई० डी० टी० प्रभाग, इलेक्ट्रानिकी विभाग के प्रतिनिधि	—	सदस्य
7.	संबंधित सी० ई० डी० टी० के निदेशक	—	सदस्य-सचिव

6. अधिशासी परिषद के अध्यक्ष तथा उसके सदस्य अन्तर्नियमावली में निर्धारित उद्देश्यों को हासिल करने की दृष्टि से भारतीय इलेक्ट्रानिकी डिजायन तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र नई दिल्ली को संस्था के रूप में पंजीकृत कराने तथा उसकी स्थापना करने के लिए प्राधिकृत है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी संबंधित को भेजी जाए।

वी० गोपालस्वामी
संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1993

No. 66-Pres/93.—The President is pleased to approve the award of 'SHAURYA CHAKRA' to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. Shri Balwinder Singh Sandhu
2. Shrimati Jagdish Kaur Sandhu
3. Shri Ranjit Singh Sandhu
4. Shrimati Balraj Kaur Sandhu

} Village & Post Office Bhikhiwind, Tehsil Patti District Amritsar,

(Effective date of the award : 30th September, 1990).

S/Shri Balwinder Singh Sandhu and his brother Ranjit Singh Sandhu are opposed to the activities of the terrorists. They are obviously in the hit list of the terrorists. The terrorists have so far made 16 attempts to wipe out the Sandhu's family within a span of about 11 months. The terrorists attacked them in groups of 10 to 200, but everytime the Sandhu brothers with the help of their brave wives, Smt. Jagdish Kaur Sandhu and Smt. Balraj Kaur Sandhu have successfully foiled the attempts of militants to kill them.

The first attack on the Sandhu family was made on 31st January, 1990, and the last on 28th December, 1991. But the deadliest attack was made on 30th September, 1990. On that day, about 200 terrorists surrounded the Sandhu's house from all sides and attacked them continuously for 5 hours with deadly weapons including rocket launchers. The attack was well planned and the approach road of the house was blocked by spreading underground gun mines so that no help from police forces could reach them. Undaunted, the Sandhu brothers and their wives fought the terrorists with their pistols and sten-guns provided by the Government. The resistance shown by the Sandhu brothers and their family members forced the terrorists to retreat.

All these persons have displayed courage and bravery of a high order in facing the attack of the terrorists and foiling their repeated murderous attempts.

5. Shri Rajkumar Nema, Damoh Madhya Pradesh (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 18th January 1991)

On 18th January, 1991, two school going girls aged 6-7 years were crossing the railway track near the closed Patharia Railway Gate on Beena-Katni main railway line. At this point of time, a goods train was coming from Katni towards Sagar and on another railway track, a railway engine was passing. Shri Rajkumar Nema who was present near the Gate saw that both the girls were on the verge of being run over by the goods train. He immediately rushed towards them and pushed them aside. In doing so, the lives of two children were saved, but unfortunately Shri Nema dashed against the railway engine on the other track and died instantly.

2. Shri Rajkumar Nema exhibited conspicuous courage and bravery in saving the lives of two children and made the supreme sacrifice of his life.

6. 4255634 Naik Jidan Bage, Bihar Regiment, 7 Bihar. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 27th February 1991)

Naik Jidan Bage on 7 Bihar had an encounter with militants near village Rajewala in Punjab in the night of 27th/28th February 1991. He shot dead a terrorist, Area Commander Satnam Singh Satta of Bhindrawale Tiger Force who was hiding in the wheat fields. However, he received bullet injury in this action. Other militants were firing upon the troops effectively, he led his section forward to close on to the militants, and a bitter fight ensured. He received AK-47 burst on his chest. While he was being taken to the Military Hospital, Amritsar, he died on the way.

Naik Jidan Bage, thus, displayed conspicuous courage and devotion to duty.

7. Major D Pradeep Kumar (IC-37016), SM, Gorkha Regiment.

(Effective date of the award : 27th March, 1991).

On 27th March 1991, Alfa company of 4/1 Gorkha Regiment under Major D Pradeep Kumar laid an ambush near village Mughal Chak by 2100 hours. Faced with the fire of the ambush party, two terrorists jumped into the Tarn Taran Distributary at about 2345 hours. Major D Pradeep Kumar immediately cordoned the fleeing terrorists with the help of his party. The terrorists attempted to break the cordon by moving south along the distributary. Major D Pradeep Kumar now moved close to the bank of the distributary to block the terrorists. The terrorists had taken position under the bridge and brought down heavy volume of fire on Major D Pradeep Kumar. Major D Pradeep Kumar instructed others to stop firing to avoid casualties due to cross fire. Thereafter he picked up the Light Machine Gun and fired at the terrorists. He had to fight a face to face duel with the terrorists at a range of 20 metres. He then stood up and completely exposing himself brought down heavy volume of fire from his LMG and single handedly shot down both the terrorists.

Major D Pradeep Kumar, thus, displayed conspicuous courage, bravery and devotion to duty in the face of terrorists.

8. 5043672 Rifleman Jit Prasad Shrestha, Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 29th March, 1991).

On the 29th March 1991, Alfa company of 4/1 Gorkha Rifles laid an ambush at bridge over Tarn Taran Distributary near village Sakira by 2100 hours. Rifleman Jit Prasad Shrestha was Light Machine Gunner Number 1 of a covering party. At about 2320 hours, three persons on a motorcycle with headlights off approached the ambush site. When challenged, the terrorists fired with AK-47 rifles and threw grenades at the ambush party. The covering party immediately retaliated. The terrorists increased speed of the motorcycle in order to get away from the ambush. Rifleman Jit Prasad Shrestha alongwith Light Machine Gun Number 2 moved closed to the road and fired. Rifleman Jit Prasad Shrestha came on the road to prevent the terrorists from escaping. While physically blocking the road, he sprayed bullets on the terrorists who crashed to the ground due to the heavy volume of fire. However, Rifleman Jit Prasad Shrestha also got a bullet injury in his face which proved fatal.

Rifleman Jit Prasad Shrestha, thus, displayed conspicuous courage bravery and devotion to duty and made the supreme sacrifice of his life while fighting with the terrorists.

9. 3985549 Sepoy Kamar Chand, Dogra Regiment.

(Effective date of the award : 26th May, 1991).

On the night of 25th/26th May 1991, the unit of Sepoy Kamar Chand was deployed for conducting the cordon and search operation in the area adjoining village Sange. At 0500 hours on the 26th May 1991, the militants finding themselves besieged, tried to break the cordon. A fierce encounter took place in which intense automatic fire was exchanged between terrorists and the Indian troops. Sepoy Kamar Chand saw a group of militants fleeing towards a canal near his place of duty. He challenged them but they continued to run. He warned them again. But they did not stop and fired on Sepoy Kamar Chand from automatic weapons. Displaying courage and determination, Sepoy Kamar Chand did not allow the militants to escape. He took correct aim and shot at one of the militants. Another militant raised his arm in surrender, but before Sepoy Kamar Chand could arrest him, he bolted and jumped into the canal Sepoy Kamar Chand also jumped into the canal and over powered him. The militant was dragged out of the canal but he consumed cyanide and died. He was later identified as Hardev alias

Tito, an area commander of Bhindrawale Tiger Force of Khalistan.

Sepoy Kamar Chand, thus, displayed conspicuous courage and devotion to duty in his fight against the terrorists.

10. Captain Sunil Kumar (IC-41991), 5 Gorkha Rifles (Frontier Force)

(Effective date of the award : 2nd August, 1991).

On the night of 1st/2nd August 1991 two columns of 6/5 Gorkha Rifles (Frontier Force) were detailed to carry out search and cordon operation in village Mundigram of Baramulla District in J & K, Captain Sunil Kumar was detailed to accompany a column as a Company Officer. As Captain Sunil Kumar was in the process of cordoning off a house, he noticed a door on the side opening and a man getting out. Captain Sunil Kumar realised that the man was armed as the ammunition belt worn by him was visible in the light. Since the house was still to be cordoned off and the possiblity of the man getting away could not be ruled out, he moved towards the man. On seeing the army personnel, the man opened fire. Captain Sunil Kumar, who had come close to the person, was hit in right arm by a bullet. Inspite of being hit, Captain Sunil Kumar ran and pounced upon the person, snatched his rifle and pinned him down. Captain Sunil Kumar was profusely bleeding by now but did not let the anti-national element move till two other ranks took over from him. The personal example set by Captain Sunil Kumar motivated his team which captured two weapons, one grenade and apprehended an area commander of Hizbul Mujahideen alongwith 7 other hardcore anti-national elements.

Captain Sunil Kumar, thus, displayed conspicuous gallantry, courage and leadership in the face of anti-national elements.

11. Second Lieutenant Bikramjit Singh Sandhu (SS-34475), 18 Dogra.

(Effective date of the award : 8th August 1991).

On the 8th August, 1991, 18 Dogra undertook a cordon and search operation of village Zafarkhani and Wolyas Kaonar in the District of Kupwara in Jammu and Kashmir. At about 0630 hours, Second Lieutenant Bikramjit Singh Sandhu who was commanding the No. 9 Platoon observed some movement in a clump of trees approximately two to three hundred metres away and rushed towards the site with six jawans. As he moved, the anti-national elements opened AK fire on him. Risking his personal safety and undeterred by the volume of fire, Second Lieutenant Sandhu kept advancing towards the site of fire and managed to cordon off the area. Hearing the heavy volume of fire, the group was jointed by Captain Sandeep Shankla alongwith his team. Captain Shankla deployed his quick reaction team and readjusted the members of the Second Lieutenant Sandhu's platoon and moved up to silence the fire. Suddenly a grenade was thrown from a hide in the jungle at Sepoy Swaran Singh as a result of which he was injured. Inspite of heavy burst fire, Second Lieutenant Sandhu continued to advance and engage the anti-national elements. In the meantime, Capt Shankla also received direct hit. Sepoy Swaran Singh also fell unconscious. While encouraging his men, Second Lieutenant Sandhu, under heavy volume of fire from the anti-national element, crawled upto Captain Shankla. He picked up Captain Shankla who was very seriously injured and brought him up to a safer place from where he carried him upto the road head for first aid. He also organised the evacuation of fellow injured jawan. After handing them over at the temporary Medical Inspection Room, Second Lieutenant Sandhu rushed back to the spot to take control of the situation. He was subsequently joined by his officiating Commanding Officer at the place of the incident. He made an assault on the anti-national elements. This attack finally silenced the anti-national elements. His courage and devotion to duty had a salutary effect. Eight anti-national elements were arrested and three AK-56 rifles and large quantity of ammunition were captured.

Second Lieutenant Bikramjit Singh Sandhu, thus, displayed conspicuous courage and devotion to duty in the face of anti-national elements.

12. 3384099 Naik Balbir Singh, 3 Sikh.

(Effective date of the award : 17th August, 1991).

On the 17th August, 1991, Naik Balbir Singh of Alfa Company 3 Sikh was detailed to act as scout of the patrol party led by Naik Subedar Amar Singh. The movement of the patrol party was spotted by the anti-national elements who brought down heavy fire on the party. Naik Balbir Singh retaliated with effective and accurate fire on the anti-national elements. Despite danger to his own life Naik Balbir Singh kept the anti-national elements pinned down and prevented them from escaping. He killed their sentry. On seeing that the anti-national elements were trying to escape in the Nallah, Naik Balbir Singh quickly changed his position to foil their attempts to escape but was hit on the stomach by a burst of AK-56 rifle fire. Naik Balbir Singh moved to a safer position and continued to bring down effective fire on the militants. During this exchange of fire, he was once again hit by a bullet in his left hand, but he did not leave his position and kept on engaging the enemy till he was ordered to be evacuated to the unit administrative base.

Naik Balbir Singh thus displayed conspicuous courage gallantry and devotion to duty while fighting against the militants.

13. 2500315 Naik Dhan Bahadur Sunwar, (*Posthumous*) Assam Rifles.

(Effective date of the award : 17th August, 1991)

On the 17th August 1991, Special Operation 'KASAM' was launched by 25 Assam Rifles to seek and destroy a suspected NSON (S) Camp located near village Alang in UKHRUL district of Manipur. Naik Dhan Bahadur Sunwar was performing the task of Number two scout of the column. On reaching near the location of the camp, Late Naik Dhan Bahadur Sunwar along with some of his colleagues charged upon the Camp of the underground while firing from his position. During this act, the party came under heavy fire and he was badly wounded. Unmindful of his serious injuries, he kept on firing relentlessly. He engaged the militants in hand to hand fight and managed to snatch one 9 mm sten carbine Machine from one of the hostiles who had no alternative but to flee. Before Naik Dhan Bahadur Sunwar could be evacuated, he succumbed to the injuries.

Naik Dhan Bahadur Sunwar, thus, displayed conspicuous courage, valour and devotion to duty and made supreme sacrifice of his life while fighting with the militants.

14. 4068220 Rifleman Khemraj Singh, 10 Garhwal Rifles.

(Effective date of award : 24th August, 1991)

Rifleman Khemraj Singh of Headquarters Company 10, Garhwal Riflfles was a member of protection party of the officiating Commanding Officer Major Sunil Kumar Anand. The battalion was detailed for cordon and search operation in village Manigam (District Srinagar) on the 24th August, 1991. He was leading a party entrusted with the task of apprehending the anti-national elements. The anti-national elements were firing heavily with a Universal Machine Gun and other automatic weapons. Rifleman Khemraj Singh spotted the anti-national elements hiding very closely to him and fired at them a number of times. One of the anti-national elements tried to break the cordon in a bid to escape but was apprehended. The second anti-national element continued to fire with his Universal Machine Gun. In a daring act, Rifleman Khemraj Singh crawled and moved towards the anti-national element in order to silence the Universal Machine Gun. In the cross fire, he was hit by a burst from the Universal Machine Gun on his left thigh just when he was about 10-12 yards from the anti-national element. Seriously injured and bleeding profusely, Rifleman Khemraj Singh continued to crawl towards the anti-national element, firing from his AK-47 rifle, till the anti-national element alongwith his Universal Machine Gun was finally overpowered by his comrades who had closed on the anti-national element from other directions. Rifleman Khemraj Singh was immediately rendered first aid and was rushed to Hospital. The apprehended anti-national elements were later identified as Ghulam Mohammad War, Chief Area Commander of Jamait-E-Islam and Hizbul Mujahidin and Abdul Rashid, Area Commander of Allah Tigers. This operation also resulted in seizure of a number of weapons alongwith huge quantity of ammunition.

Rifleman Khemraj Singh, thus, displayed conspicuous gallantry and courage in the face of anti-national elements.

15. 2676892 Lance Naik Jardish Ahmed, 22 Grenadiers.

(Effective date of the award : 8th September, 1991).

On the 8th September, 1991, Lance Naik Jardish Ahmed formed a part of the company, detailed to carry out a cordon and search operation in village Buran Pattan. On locating a group of the six armed militants alongwith six other ranks of the company pursued the [illegible] into the paddy fields. Lance Naik [illegible] a Light Machine Gun with which he fired at the anti-national elements and ensured that the other members of his team could move freely into the paddy fields and form a cordon. Lance Naik Jardish Ahmed spotted an anti-national element rising out of the swamp and paddy field next to him and clubbed him with his Light Machine Gun and captured him. Subsequently, one pistol was recovered from the anti-national element. Lance Naik Ahmed with enthusiasm and in utter disregard of his personal safety splashed forward and spotted another anti-national element who was about to fire. Lance Naik Jardish Ahmed's Light Machine Gun quickly fired from his hip from a distance of 10 metres and killed the anti-national element. He then moved to his right searching for the other anti-national elements. Seeing some movement at the right he closed in through the thick swamps, towards the rear of the anti-national elements. One anti-national element tried to turn and fire towards his company commander and Radio operator from a distance of 10 yards but before he could press the trigger, he was shot dead by Lance Naik Jardish Ahmed. In this operation, Lance Naik Jardish Ahmed displayed bravery initiative and courage of a high order. Due to his accurate employment of Light Machine Gun and his quick action, the lives of his team mates including his company commander were saved and two hard core anti-national elements were killed.

Lance Naik Jardish Ahmed thus displayed conspicuous courage leadership and devotion to duty while fighting with anti-national elements.

16. 9085366 Rifleman Mohd Safeer Khan, Jammu and Kashmir Light Infantry. *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 31st October, 1991).

On the 31st October, 1991, Rifleman Mohd Safeer Khan was a member of company deployed for cordon and search operation in area Panbecha in Sibsagar District. At approximately 1340 hours while cordoning off the area, Rifleman Mohd Safeer Khan and Rifleman Madan Lal were going through a thick paddy field when they suddenly encountered two militants hiding just 15 metres away. One of them hurled a grenade towards Rifleman Mohd Safeer Khan. In utter disregard of his personal safety, Rifleman Safeer Khan charged on the militant closest to him. Even as the grenade detonated behind him, inflicting serious injuries on his body, this brave Rifleman lunged towards the militant and overpowered him. It was only when the Platoon Commander and other numbers of his Platoon arrived at the scene that Rifleman Mohd Safeer Khan released his grip on the militant. Thereafter, he was evacuated to the Advance Dressing Station first and then to 5, Air Force Hospital Jorhat, but he did not survive.

Rifleman Mohd Safeer Khan, thus, displayed conspicuous gallantry and courage.

17. Major Kashmir Singh Rana (IC-37242), 6 Sikh.

(Effective date of the award : 8th November, 1991).

On 8th November, 1991, the company led by Major Kashmir Singh Rana was deployed to cordon and search operation in an area in J&K. He was informed by Shri Safudin Peer, area commander of Kashmir Liberation Front, who was captured by Major Rana on the 6th November, 1991 that Gulam Mohamad Lone the most dreaded terrorist of Kupwara District, Divisional Commander of Kashmir Liberation Front was operating in this area. At 0545 hours on the 8th November, 1991, while Major Rana was deploying his sub units for the cordon, they came under heavy fire. The militants were firing from a distance of 300 metres. Major Rana quickly deployed one platoon to give fire support from South and moved with his quick reaction team in the direction of the fire to out-flank the anti-national elements from the north. Seeing the party led by Major Rana approaching them, the anti-national elements shifted the fire towards his party with greater intensity. Major Rana deployed another group at nullah junction to give close fire support to his party. Thereafter, Major Rana moved swiftly and pounced on the anti-national elements firing from their hide out. Hand to hand fight ensued between Major Rana's party and the anti-national elements. After some resistance four anti-national elements including anti-national element Gulam Mohamad Lone, who grappled with Major Rana, were overpowered and captured alive alogwith large cache of arms and ammunition.

In December, 1991, Major Rana with unconventional tactics, using civil vehicle and travelling incognito captured several anti-national elements with their weapons and ammunition. In February and March, 1992, the unit under Major Rana recovered 100 weapons and large quantity of ammunition. On 24th April, 1992, in an operation led by Major Rana, one area commander, Meharaj Din of Hizbul Mujahideen was killed, seven militants were apprehended and several weapons were recovered.

Major Kashmir Singh Rana, thus, displayed conspicuous gallantry, remarkable leadership and courage in the face of anti-national elements.

18. Shri Jagdev Singh, Sirsa, District Hissar *(Posthumous)*

(Effective date of the award : 9th November, 1991)

On the 9th November, 1991, a large number of devotees had assembled in front of 'Sacha-Sauda', a religious place in the city of Sirsa district of Haryana to attend a 'Satsang'. Suddenly, some terrorists came to this place armed with automatic weapons and started firing indiscriminately. As a result, 14 persons were killed and 13 persons suffered serious injuries. There was a great commotion and confusion and everyone ran helter skelter in order to save his life. At that time, Shri Jagdev Singh, a local Sikh resident, who was present at the spot, caught hold of one of the terrorists firing at the crowed and turned the barrel of his AK-47 rifle upward with the result that all the remaining bullets were fired in the air. In the meantime, another terrorist came and shot him in the head from point blank range in order to free his accomplice. Shri Jagdev Singh died on the spot.

2. Shri Jagdev Singh exhibited exemplary courage, promptitude and presence of mind in the face of imminent death and saved the lives of a large number of persons.

19. Major Anmole Singh Ghuman (IC-40082), 3 Mahar.

(Effective date of the award : 18th November, 1991)

On the 18th November, 1991 at about 2130 hours an encounter took place between a group of anti-national elements infiltrating through the Line of Control into the Kashmir Valley and an ambush party. On receipt of the information about encounter, a party under Major Anmole Singh Ghuman, a young and energetic Company Commander located at Nilsah Baihk in the valley rushed to the site of the encounter for providing reinforcement. He was entrusted with the task of preventing the anti-national elements from escaping and conducting a search in the vicinity of the area of encounter having thick jungles, steep gradients and difficult terrain. The search continued for 72 hours. Despite the arduous climb and lack of success for a considerable period of time, with indefatigable spirit, dogged determination, he continued his work, which ultimately bore fruit. He saw four anti-national elements hiding behind some boulders. He split his party into three groups, of which two groups blocked their route of escape. He himself proceeded with the third group towards the anti-national elements. At this juncture, the anti-national elements opened fire on his group with a Universal Machine Gun and AK-56 rifles. Undeterred by hostile fire and in utter disregard of his personal safety, he closed on the anti-national elements, lobbing a grenade on them and directing the fire of his group. He killed all the four anti-national elements. In the operation conducted under the dynamic and inspiring leadership of Major Anmole Singh Ghuman, 4 anti-national elements were killed and large cache of arms and ammunition was captured.

Major Anmole Singh Ghuman, thus, displayed conspicuous gallantry, courage, leadership and devotion to duty.

20. Major Rameshwar Lal (IC-27057), Guards.

(Effective date of the award : 28th December, 1991).

Major Rameshwar Lal, though physically handicapped due to the amputation of the right arm and removal of a portion

of his right lung, preferred to serve his battalion deployed in Punjab. On 28th December, 1991, while officiating as the Commanding Officer of the battalion in OP RAKSHAK, Major Rameshwar Lal planned a patrolling cum search mission South of Village DUMNIWALA to capture two terrorists reported to be hiding in this area. He organised the battalion into four company size columns. He himself led one of these columns. Around 0900 A.M. two armed terrorists fired at Major Rameshwar Lal's column and ran towards an antiflood embankment closely. He ordered another column to approach the said embankment. The terrorists, thus having been hemmed in between the two columns due to swift action of Major Rameshwar Lal, started firing indiscriminately. Major Rameshwar Lal, undeterred by the fire of terrorists, ran ahead with his men and brought effective fire on the terrorists. In this encounter both the dreaded hardcore terrorists namely Mukhtiar Singh alias Kukha and Buta Singh of Babbar Khalsa Group were killed. Two rifles and 290 rounds of ammunition were recovered from the terrorists.

Major Rameshwar Lal thus displayed conspicuous courage bravery and devotion to duty.

21. Major Perminder Singh Bhinder (IC-31832), 6 Garhwal Rifles.

(Effective date of the award : 31st December, 1991).

On 31st December, 1991, at approx 1700 hours in 'OP RHINO', Major Perminder Singh Bhinder personally led a search party with three other Ranks into a house and forced Hirek Jyoti Mohanta, a militant leader with two other associates to lay down their weapons and surrender. Later on when he was escorting Mohanta to another hideout, they were fired at by militants. Taking advantage of cross fire and on the pretext of making the militants to stop firing, Hirek Jyoti Mohanta tried to escape to the militants camp. Major Perminder Singh Bhinder regardless of the danger pursued him. When Mohanta stumbled and fell, Major Bhinder fired and wounded Hirek Jyoti Mohanta with his accurate firing. Thereafter, he apprehended Mohanta and handed him over to the covering party.

Major Perminder Singh Bhinder thus displayed conspicuous courage, leadership and presence of mind in face of militants.

22. Captain Amitabh (SS-32844), 6 Garhwal Rifles.

(Effective date of the award : 31st Dec., 1991)

On 31st December, 1991, on getting information about Siddharth Phukan, Captain Amitabh alongwith Captain Alok Singh deployed two quick reaction teams and lay in wait for seven hours. At 1600 hours Siddharth Phukan was spotted on a motor cycle with one pillion rider who was identified as Sailan Dutta Kanwar, President Kamrup District United Liberation Front of Assam Group. The motor cycle was discreetly followed by the team of Captain Amitabh. The team of Captain Alok Singh was deployed on a parallel road to prevent the escape from the front. Finding the escape route blocked, Phukan stopped the motor cycle and ran into a side street. While Captain Alok Singh started chasing Phukan, the pillion rider of the motor cycle ran into a opposite alley and was chased by Captain Amitabh. The militant took out his pistol and fired seven shots towards Captain Amitabh, who did not return the fire as he wanted to capture the individual alive. However, when the individual appeared to be getting away, Captain Amitabh fired two shots and injured him in his leg. Thereafter, he single handedly grappled with the terrorist and arrested him. He also prevented the terrorist from committing suicide.

Captain Amitabh. thus, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty.

23. JC-196530 Naib Subedar Gaje Singh Bisht, 15 Garhwal Rifles

(Effective date of the award : 2nd January, 1992)

On the 2nd Jan., 1992 while laying a cordon in Bhagwanpora area, 15 Garhwal Rifles was heavily fired upon from inside a house. Without losing any time, Naib Subedar Gaje Singh cordoned off the house with his platoon. While entering the house, he was hit by a bullet on his knee. Despite the injury, he dragged himself to a safer place and killed one anti-national element, who turned out to be Shabir Ahmad Bazaz, a top militant of Haiktul Mujahideen. Refusing to be evacuated, he motivated his jawans to chase other anti-national elements fleeing away in panic. Though Naib Subedar Gaje Singh was himself seriously injured, he asked the Regimental Medical Officer to attend to his fellow jawans first since they were more serious. In another encounter Naib Subedar Gaje Singh had sustained three bullet injuries and was badly wounded. But he refused to be evacuated and kept on engaging the anti-national elements till the anti-national elements stopped their firing.

Naib Subedar Gaje Singh Bisht, thus, displayed conspicuous gallantry, valour and courage in his fight against the anti-national elements.

24. 3973740 Havildar Subhash Chander, (Posthumous) Dogra Regiment

(Effective date of the award : 8th March, 1992)

On the night of 08th/09th March 1992 two Companies of 8 Dogra had laid an ambush on the different tracks leading to the village Borchhi Rajputana in the district of Amritsar (Punjab). At about 2230 hours, an ambush party deployed at track Borchhi Rajputana Nanakpur noticed a group of four persons approaching from the village. These persons were challenged by Havildar Kuldip Singh and there was heavy exchange of fire. The four armed men ran into the cover of the wheat field and started firing in a bid to escape. One of them was shouting and asking his group members to throw a grenade. On hearing this, in order to prevent the terrorists from escaping after lobbing grenades, Havildar Subhash Chander, unmindful of his personal safety, charged at the nearest terrorist and killed him. He was later identified as self styled Lieutenant General Devinder Singh alias commando of the Babbar Khalsa group. In the process he was hit in his abdomen by a burst of AK-47 rifle. Another hidden terrorist who saw him charging fired at him with his AK-47 rifle injuring him gravely. Inspite of his grave injuries Havildar Subhash Chander kept on charging and firing his stengun at the second terrorist named Iqbal Singh and killed him. Seeing his continued and determined charge, the terrorist fired a second fatal burst which hit Havildar Subhash Chander in his chest.

Havildar Subhash Chander, thus, displayed conspicuous gallantry and courage in the face of anti-national elements and laid down his life, making the supreme sacrifice.

25. G/G/172274-W Mechanical Transport Driver Altaf Hussain

(Effective date of the award : 14th March, 1992)

Mechanical Transport Driver Altaf Hussain of 580(I) Tpt Platoon, Project Vartak of Border Roads Organisation was deployed as a driver on a water truck w.e.f. August 1990 at Headquarters 44 Border Roads Task Force.

On the 14th March, 1992 at about 0630 hours, a vehicle carrying 18 personnel from Along to Likabli rolled around 1350 feet down the valley. On hearing the news Shri Altaf Hussain rushed to the spot of accident immediately. Eight persons involved in the accident could not be traced. Steep gradient of the valley and slippery conditions made the task of locating them extremely difficult. Officer Commanding 1074 Field Workshop, Major Bhupender Singh who on getting the news had also reached the spot, started climbing down the slope with the help of a rope. Shri Altaf Hussain volunteered to follow the Officer and descended down. He rendered all help in evacuating ten seriously inured personnel from the depth of 30 metres by manual lifting and rope climbing. The rescue of their men required further descent into the valley which was more dangerous because of shooting stones from the top or the gradient. Shri Altaf Hussain displayed exceptional courage, moved down to a depth of over 200 metres on the treacherous slope and succeeded in evacuating each and every injured personnel. Thereafter, he carried four severely injured personnel on his shoulders to the top by climbing with the help of a rope.

Mechanical Transport Driver Altaf Hussain has, thus, displayed conspicuous bravery and exemplary courage in saving the lives of several inured personnel.

26. 3978707 NAIK BHIM SAIN,
5 DOGRA (Posthumous)

(Effective date of the award : 2nd April, 1992)

On the 2nd April 1992, Naik Bhim Sain was in one of the Baut tasked to prevent anti national elements from escaping towards Sopore from the Hari Batti island in Wular Lake in J&K. While he and his colleagues were rounding off fishermen/wood cutters to conduct them safely to the other side of the lake where the outer cordon parties were deployed, his Baut was ambushed by an anti national elements. They were firing from a country boat and from the island also. He along with four Jawans was injured. Realising that the lives of his colleagues were in danger if he did not eliminate the anti-national elements on the island and move to the shore, he took over the control of the operational boat motor and moved his Baut towards the island. This courageous action and the heavy volume of fire brought down on the anti-national elements by him and Sepoy Dhan Dev of his Baut so unnerved the anti-national elements that they stopped firing and retreated into the thick willow forest. He, thereafter, moved the Baut towards the Regimental Aid Post at Watlab Ghat and succumbed to his injuries on way.

Naik Bhim Sain, thus, displayed conspicuous courage, bravery and devotion to duty and made the supreme sacrifice of his life while fighting against the anti-national elements.

27. G/164845-P OPERATOR EXCAVATING MACHINERY
DILBAGH SINGH

(Effective date of the award : 5th April, 1992)

Operator Excavating Machinery Dilbag Singh of 168 Formation Platoon, Project HIMANK of Border Roads Organisation was deployed for snow clearance on LEH-CHALUNKA road at an altitude of 18,380 feet.

On the 6th January, 1992 at about 1530 hours, a heavy evalanche came down at KM 39.5 on road Leh-chalunka blocking the approach to the highest motorable bridge at KHARDUNGLA. The anchorage of the bridge was also damaged. Hence, immediate restoration was required to save the bridge. The dozer which was deployed to clear the approach had also come under the avalanche. OEM Dilbagh Singh who was deployed at KM 32 with his dozer was ordered to move in the night on the 6th January 1992 at 1900 hours. OEM Dilbag Singh moved immediately with his dozer cleaning about 2 metres of snow accumulation almost all the way with the help of 'mashals' as dozer light had also failed on the way and reached the place of avalanche : at 0400 hours in the morning. Without any break he continued to work throughout the day on the 7th January, 1992 regardless of his personal safety and comfort. Due to heavy wind and huge snow drifts OEM Dilbagh Singh, collapsed at about 1700 hours on the 7th January, 1992 on account of physical exhaustion but was revived in about 15 minutes. Soon on regaining consciousness he insisted upon taking charge of the dozer and continued to clear the approach to the bridge. He did not take any rest until he completed his task, thereby saving the bridge which is the vital communication link.

In an another mission, he was ordered to clear the snow on the road between Km 43 and 47 on the 5th April, 1992, which was not open to traffic for the previous two weeks due to heavy snow. The snow clearance task was to be taken up on operational basis so that the units at Siachen glacier could be de-inducted. While working on the night of 5th/6th April 1992, at about 2200 hours, OEM Dilbagh Singh and two helpers were buried under a heavy snow slide alongwith his dozer. Displaying exceptional courage OEM Dilbagh Singh first extricated his two helpers from the deep snow. Thereafter, without any rest, he retrieved his dozer and continued to work upto 0300 hours on the 6th April 1992 to complete the seemingly impossible task.

Operator Excavating Machinery Dilbag Singh, thus, Displayed conspicuous courage and remarkable dedication to duty.

28. COLONEL BIDHI CHAND LAGWAL (IC-19922), DOGRA

(Effective date of the award : 7th April, 1992)

On the 7th April 1992 an encounter took place at Khojkipur between dreaded terrorist Jarnail Singh alias Buh, Deputy Chief Khalistan Commando Force and the assault party led by Colonel Bidhi Chand Lagwal. The terrorist was located in a fortified double storeyed farm house of Shri Balwinder Singh, Vice President of All India Sikh Students Federation. It provided excellent place for firing in all directions. Seeing the assault party coming to the farm house, the terrorist brought heavy fire upon the party. Unmindful of his personal safety, Colonel Bidhi Chand Lagwal started Rocket Launch fire at the terrorist forcing him to abandon position. The terrorist continued fighting from the ground floor and killed one CRPF Jawan. Colonel Bidhi Chand Lagwal surrounded the building and forced entry under a hail of fire. The terrorist then took position in a concrete bunker inside the house. He was, however, forced to come out of his position by use of phosphorous and grenades. The encounter lasted about six hours. Ultimately the terrorist was killed.

In a similar action on 01 April 1992, Colonel Bidhi Chand Lagwal rescued Shri Dharam Pal Singh, kidnapped by terrorists for a ransom of Rs. 10 lakhs, after killing one terrorist during the encounter. Colonel Bidhi Chand Lagwal has participated in all Battalion operations resulting in elimination of nine terrorists and recoveries of large quantity of arms and ammunition.

Colonel Bidhi Chand Lagwal, thus, consistently displayed conspicuous courage, dynamic leadership and devotion to duty in anti-terrorist operation.

29. 13857736 HAVILDAR GANGA SAHAY,
20 KUMAON

(Effective date of the award : 12th April, 1992)

At 0600 hours on the 12th April, 1992, Havildar Ganga Sahay of A Coy 20 KUMAON was deployed as the NCO Incharge of a Vehicle Check Post (VCP) in Kapurthala District, along with 9 ORs and two constables of Punjab Police. Captain S S Rathore of 20 KUMAON was the OIC of this contingent. At about 0920 hours, one white Maruti car came to the check-post on the road leading from the North. On being asked to come out for a search, the person driving the car came out, but on being asked to raise his hands, swiftly took out pistol and tried to shoot at Havildar Ganga Sahay. L/Nk Kishan Chand promptly reacted, hit him with his rifle butt and tried to snatch his pistol but the militant moved away swiftly and fired a shot at point blank range, hitting L/Nk Kishan Chand in the head. Simultaneously, the second person sitting on the rear seat on the car fired from another pistol at Sepoy Ram Pyare Yadav through the rear window glass and both started running into the adjoining wheat field. Havildar Ganga Sahay asked the Radio Operator to call for reinforcement, quickly detailed five ORs and the two police constables to look after the casualities and thereafter, started chasing the fleeing militants with the remaining two ORs. Soon Captain Rathore also reached the site from the North West and started bringing down fire on the militant from that flank also. Both the parties joined and moved towards the place where militants were hiding. Havildar Ganga Sahay covered their move for their correct positioning, and he joined for the final assault on the militants. Their bodies were later identified as that of self styled (SS) Lieutenant Generals of Khalistan Commando Force (Panjwar), namely Surinderjit Singh alias Chhinda Bhai and SS Lieutenant General Surinderjit Singh Mallowal. Both of them were hard core militants and had committed 500 and 300 killings respectively and carried cash awards of Rs. 10 and 4 lakhs respectively on their heads.

Havildar Ganga Sahay thus displayed conspicuous courage, valour, presence of mind and devotion to duty while fighting with the terrorists.

30. 4174170 LANCE NAIK KISHAN CHAND, 20 KUMAON (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12th April, 1992)

At 0600 hours on the 12th April, 1992, Lance Naik Kishan Chand of 'A' Coy. 20 Kumaon was deployed on a Vehicle Check post established jointly by the Army and the

Punjab Police at the Road junction of Nihalgarh and Mauli Jamalpur villages phagwara Sub-Division of Kapurthala District. At about 0920 hours one white Maruti car approached this vehicle Check post. Lance Naik Kishan Chand signalled the Car to stop and asked both its male occupants to come out for a physical check. The person driving the car came out and on being told by Havildar Ganga Sahay to raise his hands, swiftly took out a pistol and tried to shoot at him. Lance Naik Kishan Chand hit him with his rifle butt and made an attempt to snatch the pistol but the militant moved away swiftly and fired a shot at the point blank range hitting Lance Naik Kishan Chand in the head. Simultaneously, the second person sitting on the rear seat of car fired with another pistol at the second santry Sepoy Ram Pyare Yadav, through the rear window glass. Both militants then started running into the adjoining wheat field. Lance Naik Kishan Chand was evacuated immediately to the Unit MI Room for First aid and further to the MH Jalandhar, where the succumbed to his injuries. Both militants who took position in a wheat field, were cordoned off by another party of troops and subsequently shot dead in the ensuing encounter, on refusing to surrender. A large quantity of arms and ammunition were captured and some papers having the names of accomplices were seized.

Lance Naik Kishan Chand, thus, displayed conspicuous gallantry and persence of mind in the face of militants and supreme sacrifice of his life while performing his duties.

31. 4350557 HAVILDAR BASANTA KUMAR ROY, 3 ASSAM

(Effective date of the award : 18th April, 1992)

On the 18th April, 1992, during a joint operation of army and police to flush-out militants in village Bucher Kalan, District Taran Taran (Punjab), the militants had taken position in a khud inside a wheat field and were firing effectively with automatic weapons in all directions. Any effort by the security forces to close in was being retaliated with a heavy volume of fire. At this juncture, Havildar Basanta Kumar Roy and his party approached the militants in bullet proof tractor. While closing in, he exhorted all the members to engage the militants relentlessly. He himself charged at the position of militants killing them. The slain militants were identified as Buta Singh, Area Commander and Lakhwinder Singh of Khalistan Commando Force (Zaffarwal Group). Two AK-47 rifles, one radio set, 3 electric detonators and 35 rounds were recovered.

Havildar Basanta Kumar Roy thus displayed conspicuous courage, bravery and leadership while fighting with militants.

32. CAPTAIN HARBINDER SINGH GILL (SS-34360) INFANTRY 3 ASSAM

(Effective date of the award : 23rd April 1992)

On 23rd April 1992 during a fierce encounter at village Bakipur District Tarn Taran (Punjab), Captain Harbinder Singh Gill alongwith his Quick Reaction Team was assigned the task of flushing out militants from a group of farmhouses. In the face of heavy firing by the militants Captain Harbinder Singh Gill personally fired four rounds of high explosive from 84 mm Rocket Launcher, and succeeded in destroying the target building partially. Thereafter, two bullet proof tractors with composite parties were sent forward. However, the tractors were forced to halt 75 metres short of the target due to heavy auomatic and grenade fire. Undeterred by the holdup, Captain Harbinder Singh Gill moved forward with two other composite groups by adopting 'fire and move' technique. Crawling forward personally led the assault with one of the groups. He lobbed a grenade inside the room and charged with his AK-47 rifle killing two militants including Surinder Singh Mana, self styled Lt Gen of Khalistan Commando Force (Panjwar Group). Two assault rifles, one Dragunov sniper rifle, one grenade launcher alongwith large quantity of ammunition were recovered.

Captain Harbinder Singh Gill, thus, displayed conspicuous courage, bravery, devotion to duty, and leadership.

33. SECOND LIEUTENANT KRISHNA MURARI SINGH (IC 50102), 6, SIKH

(Effective date of the award: 3rd May, 1992)

On 3rd May, 1992, a company of 6 Sikh was entrusted with the task of carrying out an operation against anti-national elements in village imbarzalwari under the leadership of 2nd Lt. Krishna Murari Singh. After four hours of climb the company reached the village. It was observed that a number of individuals were trying to escape from the village and going towards Imbarzalwari Nala on the South. Seeing this, the officer gave a chase to the anti-national elements, sprinting down the spur. When the officer reached the tip of the spur, he noticed that the suspects had reached the base of the spur and were crossing the Nala. On being challenged, the anti-national elements brought down heavy volume of fire upon the Officer. Taking quick and hold decision, the officer subjected the location of the anti-national elements to single shot point fires from his AK-47 rifle with the sole aim of preventing the anti-national elements from escaping. The anti-national elements observed this tactic, took cover behind the three trunks and returned fire with the same accuracy. Hearing the shots, Major Kashmir Singh Rana rushed to the aid of the officer with his team. In the meantime, Subedar Kamaljit Singh, who was part of the party of 2nd Lt Krishna Murari Singh also came. Major Rana and his party started giving covering fire to pindown the anti-national elements and enable the officer to close in. After reaching a place about 100 metres away from the anti-national elements, he divided his party into two. The one under Subedar Kamaljit Singh was ordered to go from the left and cut off the escape route of the anti-national elements. The Officer himself led his party from the front and went towards the anti-national elements to apprehend them. While he kept on firing accurately to pin down the anti-national elements, he moved closer and, ultimately forced the anti-national elements to surrender along with their weapons.

Second Lieutenant Krishna Murari Singh, thus, displayed conspicuous courage, bravery and devotion to duty in the face of anti-national elements.

34. JC-180419 SUBEDAR BALWANT SINGH, ARTILLERY (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 8th May, 1992)

During Road Opening Operations on road Shershali-Khunmoh on the 8th May 1992, Subedar Balwant Singh was detailed as a Platoon Commander. He was asked to interrogate four suspicious looking youngmen near village Khrew. On challenging, the suspects tried to run. He did not open fire as it would have caused casualties to the civilians. One of them hid himself in a house. As soon as the house was cordoned off, the anti-national element opened fire. Subedar Balwant Singh, anticipating the route of escape of the anti-national element placed himself there and shot him dead as he tried to escape. However, during the process, Subedar Balwant Singh got a burst of AK56 fire and succumbed to the injuries.

Subedar Balwant Singh, thus, displayed conspicuous courage and devotion to duty and made the supreme sacrifice of his life in order to ensure the safety of his team members and prevent the loss of lives of innocent civilians.

35. G/163560-W MECHANICAL TRANSPORT DRIVER PROBODH SINGH

(Effective date of the award : 14th May, 1992)

Shri Probodh Singh, A Mechanical Transport Driver of 100 Road Construction Company, Project Sewak of Border Roads Organisation was detailed on Vehicle Tata 1 Tonner of 100 Road Construction Company.

2. On the 14th May 1992, AEE(C) SM Loganathan of 100 Road Construction Company was detailed for disbursement of pay and allowances to BRO Personnel and casual labourers working on road sector Merangkong Tamlu Sector in Nagaland. with a vehicle driven by Shri Probodh Singh When the vehicle reached KM 14 from Anguri (2 Kms inside Nagaland) on Anguri Mokokchung Road. one person in olive green uniform, carrying a gun behind his back came out of the Jungle and signalled the vehicle to stop. Shri Probodh Singh sensing grave danger to the lives of the co-travellers and loss of Govt. money, increased the speed and drove the vehicle towards Tamul Police Station. All of a sudden, there was indiscriminate firing from all sides of the vehicle but, Shri Probodh Singh manoeuvred the vehicle forward courageously even though one unarmed BRO guard, Pioneer Alexender Travelling in the vehicle was killed in the firing.

3. MT/Driver Probodh Singh showed exceptional courage, conspicuous bravery and fortitude in the most adverse situation in utter disregard of his personal safety and saved Govt. cash to the tune of Rs. three lakhs and several human lives,

36. G/081213-L PIONEER ANIRUDHAN (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 27th May, 1992)

Pioneer Anirudhan of 1646 Pioneer Company was attached to 80 Road Construction Company Project Sewak of Border Roads Organisation for worksite duties, on road Pungro-Moya-Nimi Road.

Pioneer Anirudhan was deployed for blasting operation on the rocky portions alongwith his team. On the 27th May 1992, when he was engaged in blasting a rocky portion of 60 mtrs in length at a height of 15 metres and at an angle of 85 degrees, he penetrated about 40 metres deep into the rock to charge the holes. After blasting, Pioneer Anirudhan alongwith his team came back to the site of work after some hours to check and see if the site had been cleared of the charges. All of a sudden, a huge rock started rolling down from the top. Sensing danger, he shouted asking his team members to run away. He smultaneously pushed two casual labourers away from the spot, but unfortunately he himself came under the rock, Through he was extricated from the debris, he succumbed to his injures on the way to the nearest hospital.

Pioneer Anirudhan laid down his life not only for carrying out the assigned task in utter disregard of his personal safety but also saving the lives of his colleagues. He, thus, displayed conspichous courage and a high order of devotion to duty.

37. CAPTAIN SHYAM SUNDER SHARMA (SS-33748) 1 BIHAR

(Effective date of the award : 30th May, 1992)

While on his way to lay ambush on the night of 29th & 30th May, 1992 at about 2140 hours Captain Shyam Sunder Sharma observed a Tractor coming along the canal in his direction. Getting suspicious Captain Sharma challenged the persons on the tractor to prove their identity. The persons riding on the tractor opended heavy fire from automatic weapons. Realising that the persons travelling on the tractor were terrorists, Captain Sharma immediately opened fire with his carbine. Since his location was revealed. Captain Sharma became the target of the terrorists and was hit by terrorist fire in the right foot. In utter disregard of his own safety, Captain Sharma rolled over a different position and continued firing at the terrorists and kept exhorting his men not to let anyone escape. When there was a brief lull in the firing, Captain Sharma heared the sound of splashing in the water. Realising that some terrorists might be trying to escape crossing the distributory, he ordered Havaldar Linga Raja Swain to fire the mini-flair to lit up the area. In the light, he saw two terrorists attempting to swim across the distributory. Though he was having serious injuries and he was profusely bleeding, Captain Sharma dragged himself to the top of the bund and engaged the terroris's and killed them. In this encounter, six terrorists were killed. Four weapons including two AK-47 rifles, one .303 rifle and one 9 mm pistol with a large quantity of ammunition and documents and cash were recovered.

Captain Shyam Sunder Sharma, thus, displayed conspicuous galantry, courage and devotion to duty in his fight against the terrorists.

38. G/116892-P PIONEER BALDEV SINGH

(Effective date of the award : 1st June, 1992)

Pioneer Baldev Singh of 1609 Pioneer Company was deployed on road Manali-Leh for snow clearance. The road Manali-Leh is the lifeline of the troops deployed in the Northern Border areas. Pioneer Baldev Singh was a member of the forward detachment which was required to by-pass Taglangla via Mahe and Polkongkala to open another face of atack and press on to Baralachala via Pang, Lachulungla and Sarchu. Displaying courage and determination, he made a steady progress in the completion of his task.

On the 1st June 1992, the progress of the team was abruptly brought to a halt 05 km short of Baralachala due to 25 metres high avalanche across the road. Its face was perpendicular to the road surface. The avalanche extended on one side to the mountain top and going 100 metres deep into a nallah on the other side. Whereas other OEMs refused to risk their lives in this operation, Pioneer Baldev Singh volunteered for the same.

He started climbing to the top of the avalanche face. Midway the dozer started slipping sideways in the loose snow. Unmoved by the danger, he merely asked his helper labourers to put some boulders under his tracks and then carried on with his work. As anticipated, the overhanging ice did start breaking off and fell on the courageous operator, but this problem was solved by manually breaking off the ice from time to time. The work continued for two days before the avalanche could be overcome, Throughout this period Baldev Singh took rest for only a couple of hours.

Pioneer Baldev Singh, thus, displayed conspicuous courage and dedication to his duty beyond the call of duty.

39. 2870311 LANCE HAVILDAR CHATTAR SINGH, 21 RAJPUTANA RIFLES

(Effective date of the award : 4th June, 1992)

On the 4th June, 1992, multiple ambushes were laid in the area near village Mahana Square and Pindori in the district Majitha. Lance Havildar Chattar Singh was the scout of the ambush party in this area. At app.oximately 2205 hours, a scooter approached the place of the ambush. Three militants jumped off the scooter and brought down effective fire from automatic weapons on the ambush party. Lance Havildar Chattar Singh fired back upon the nearest militant who was firing after taking up a position and injured him. However, the injured militant continued to fire on Lance Havildar Chattar Singh. Showing exemplary courage, Lance Havildar Chattar Singh charged upon the militant and killed him. He found that another militant was firing on other members of the party and had injured two of them. Lance Havildar Chattar Singh, with utmost disregard to own safety, engaged the militant and killed him.

Lance Havildar Chattar Singh, thus, displayed conspicuous courage, bravery and devotion to duty in the face of millitants.

40. 3986562 SEPOY PARKASH CHAND, DOGRA REGIMENT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 8th June, 1992)

On the 8th June 1992, while conducting search of a house at village Bahla a police party of five senior officers and 22 personnel were held as hostages on the roof top of a double storeyed building with militants having control of the ground and the first floor. The army was requisitioned and 2 Dogra was entrusted with the task of cordoning the house. Sepoy Parkash Chand as part of the inner cordon was tasked to move his Light Machine Gun as close as possible to the house in order to restrict movement of the terrorists. He crawled forward alone without any fear facing intense fire of the militants. This daring act inspired others who emulated his example. This quick action completely unnerved the terrorists who in a desparate bid tried to rush to the staircase to eliminate the team members of Sepoy Parkash Chand. They brought down heavy fire upon his position so as to cover the movement of two terroris's to the roof top. Despite being subjected to heavy fire, he stood his ground firmly with dogged determination. He brought down accurate fire on the terrorists killing them instantaneously. Though, he was seriously wounded in this action, he kept on firing at the militants till he succumbed to his injuries

Sepoy Parkash Chand, thus, displayed conspicuous courage and devotion to duty and laid down his life valiantly fighting against the militants.

41. 4356756 SEPOY AGOI WANGSA, ASSAM REGIMENT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 16th June, 1992)

Sepoy Agoi Wangsa was a member of a search party deployed for cordon and search operation at village Jagatpura on the 16th June 1992. At approximately 1230 hours while carrying out a search of a house, the party was fired upon by some militants hiding in a corner room. The search party immediately took up positions and an intense exchange of fire took place. In this process, two members of the party got trapped in an adjoining room. These people faced serious and grave risk of life from the militants. It was essential to extricate them. Realising the gravity of the situation, Sepoy Wangsa crawled forward to the compound gate and engaged the militants diverting their attention. Then, he simultaneously directed the two men across the compound wall to move in a safer direction During this exchange of fire, Sepoy Wangsa was hit in the chest. Unmindful of his injury, he closed the gate braving the militants' fire, thereby cornering them. Sepoy Wangsa later succumbed to the injury on way to hospital. By his gallant action, Sepoy Wangsa saved the lives of his fellow jawans and ensured swift elimination of the militants.

Sepoy Agoi Wangsa, thus, displayed conspicuous courage and devotion to duty.

42. 2984586 LANCE NAIK PARMESHWAR RAM, RAJPUT.

(Effective date of the award 25th June, 1992)

On the 25th June 1992, while carrying out cordon and search operation in Dardpura village, Lance Naik Parmeshwar Ram formed part of quick reac ion team which was moved into the village from the adjoining mountainous heights along a prominent Nala. While the quick reaction team was on its way, they encountered a group of three militants in the jungle armed with AK-47 rifles. The moment, the presence of the troops was noticed, the militants brought heavy volume of fire and started escaping. Lance Naik Parmeshwar Ram without caring for his personal safety out flanked the militants and jumped on them from a rock, 12 feet high. By jumping on them, Lance Naik Parmeshwar Ram single handedly pinned down two of the militants. His ac ion was so sudden that the third militant was completely un-nerved and ran away leaving his weapon behind. The Non Commissioned officer in the process also sustained injuries in his chest and abdomen but he managed to hold on to the militants and captured them alongwith their two AK-47 rifles.

Lance Naik Parmeshwar Ram thus, displayed conspicuous courage, bravery and devotion to duty in his fight against the militants.

43. G/159784-Y SUPDT. B R GDE II THAKUR RAM ORH (POSTHUMOUS)

(Effective date of award : 13th July 1992)

Superintendent BR Gde II Thakur Ram Orh of 377 Road Maintenance Platoon Care 102 Road Construction Company, Project DANTAK of Border Roads Organisation was inducted on TIN-TIN-BI-GOMPHU Road in Central BHUTAN in Jan. 1992 for execution of a time bound formation cutting work.

Shri BR Orh, on numerous occasions performed challenging tasks. He constructed a 130 feet SS Bailey Bridge at Km. 1.6 despite severe constraints and unstable base. On another occasion, he restored road communication between km 22 to km 24 on TG Road which was disrupted by rock slips.

On the 13th July 1992, Shri Orh was supervising the formation cutting work at km 23 on TG Road. The work of clearance of debris was in progress with one dozer and some manpower. A tree was precariously standing above the slide portion where the dozer was working. Realising that the tree. might fall down, he instructed the workers to cut down the trees. Meanwhile the tree started tilting towards the road Shri Orh cautioned all persons of the impending danger and made them rush to a safe place. But the dozer operator, OEM Ram Dev got trapped in the branches of the falling tree and stones rolling down from the hillside. Shri Orh in utter disregard of the safety of his life rushed to the dozer to rescue OEM Ram Dev. While he was pulling OEM Ram Dev out of the dozer, a thick branch of the tree fell down and hit Shri Orh. He fell on the valley side and became unconscious. Later, he succumbed to his injuries while being evacuated to the nearest MI Room.

Superintendent BR Gde II Thakur Ram Orh. thus, displayed conspicuous courage, determination and devotion to duty

44. J C-175071 SUBEDAR DARSHAN SINGH RAWAL, 10 GARHWAL RIFLES

(Effective date of the award : 21st August, 1992)

On the 21st August, 1992, a company of 10 Garhwal Rifles was given the task of carrying out a raid in village Shankarpura under the leadership of Major Shivender Singh. Studying the village map, he planned to conduct the raid with the platoon under Subedar Darshan Singh Rawal. The platoon moved into the village from the East in a light Vehicle at 0930 hours. While entering the village, a burst of AK-47 rifle was fired on the leading vehicle by the anti-national elements from a house in order to delay the advance of the platoon and warn their own associates. Realising that the movement of his entire group had become impossible, Subedar Darshan Singh Rawal forced entry into the house alongwith Rifleman Harender Singh. On entering. he saw a man escaping from the window and going into other house. He quickly chased him and saw him climbing to an attic from a window. Without concern for his personal safety, Subedar Rawal went near the window and fired a burst inside. On seeing the determined Junior Commissioned Officer, the anti-national element threw his pistol out and expressed his willingness to surrender. After the anti-national element surrendered it was found that he was Jaffar-Ul-Islam, the District Chief (Srinagar) of Hzbul Mujahideen. Immediate search of the hideout resulted in capture of large quantity of arms and ammunition. A search of the village was also made and four other militants were apprehended.

Subedar Darshan Singh Rawal, thus, displayed conspicuous courage, bravery and devotion to duty.

45. COLONEL PRABODH CHANDRA BHARDWAJ (IC-24178) VrC, PARA REGIMENT

(Effective date of the award 14th October, 1992)

On 13th October 1992 at 1930 hours, Commanding Officer 1 Para (Commando) was informed that 10 passengers were stranded in a cable car due to snapping of a haulage. The cable car was suspended in mid air at a height of 1300 feet, about 500 metres from the terminus at Timber Trail, Parwanoo in Himachal Pradesh. He was asked to move to the site and launch a special rescue mission Within a short time, a team of five trained officers and personnel was selected for this purpose. Major Ivan Joseph Crasto was asked to lead the team. Over the next one hour, the Commanding Officer assembled the team, discussed the various options and collected the diverse equipments which could be utilised for heliborne as well as ground based rescue operation. At 0930 hours on 14 October 1992 the Commanding Officer and Major Ivan Joseph Crasto carried out detailed aerial recce with pilots At 1630 hours, the MI-17 mission was launched. The Commanding Officer personally accompanied Major Crasto to supervise the landing on the stranded cable car and to deal with emergencies. This attempt failed because of a number of problems. After several attempts Major Crasto could be lowered and he landed on the top of the cable car. Colonel Prabodh Chandra Bhardwaj, accompanied each sortie to supervise the rescue operation. on the 14th and 15th October 1992. In conducting the overall heli-rescue operation, Colonel Bhardwaj displayed high order of planning, organizing and risk-taking capabilities. Even though, he faced several odds and he knew that the operation was extremely hazardous, he did not give up and ensured that the operation was a success. In this operation, he displayed confidence, courage, resoluteness of purpose determination and valour.

Colonel Prabodh Chandra Bhardwaj, VrC has thus displayed exemplary courage, bravery determination, technical skill and professional competence in making a task, full of hazards, completely successful.

46. GROUP CAPTAIN FALI HOMI MAJOR, VM (11442) FLYING (PILOT)

(Effective date of the award : 14th October, 1992)

On the 13th October, 1992, he was asked to undertake a very dangerous and exacting rescue mission at Parwanoo (HP). The haulage cable of the "Timber Trail" resort ropeway had snapped and ten persons were stranded in the cable car hanging at a height of 1300 feet. He took off at about 0800 hours on 14th October with qualified aircrew and role equipment and landed at Chandimandir at 0850 hours. He very quickly analysed the situation and concluded that the only way that the tourists could be evacuted was by the way of winching them out from the cable car Using his vast experience and exceptional flying ability, he deduced that the helicopter would have to hover precariously close to the set of cables that ran above the cable car. It was one of the hardest decisions ever made. Gp Capt Major decided to launch the MI-17 to rescue the stranded tourists He briefed the crew thoroughly and advised them that the consequences of any lapses would be fatal. He motivated them and raised their moral. He became an integral part of the aircrew and even flew live missions.

Under his supervision, MI-17 helicopter successfully rescued five stranded tourists on the 14th October 1992 and the remaining tourists were rescued on the next day.

Group Captain Fali Homi Major, VM has thus rendered a yeoman's service by his able leadership and conspicuous courage.

47. WING COMMANDER SUBASH CHANDER (12957) FLYING (PILOT)

(Effective date of the award : 14th Oct. 1992)

On the 13th October, 1992, the haulage cable of the Timber Trail resort ropeway snapped and the cable car with ten persons on board got stuck in the middle of the valley at the height of 1300 feet above the river bed. At 1400 hours on 14th October, 1992, Wing Commander Subash Chander was given the task of rescuing these stranded tourists. He took off from Chandimandir at 1410 hours and carried out a recce of the ropeway cables, HT Cables, stranded cable car and other obstructions in the rescue area. At 1620 hours Wing Commander Subash Chander took off for the rescue mission which was one of the most difficult and dangerous rescue operations ever undertaken. Since the valley was narrow the helicopter had to be manoeuvred with utmost care and precision to bring it to a hover at the point of beginning of the ropeway at a height of 1350 feet. He brought the helicopter and made it lower about 30 metres above the cable with utmost skill and precision flying. The cable on the left was only about 3-5 metres away and under the rotor blades. To keep the helicopter steady at that height without any reference point and under cross wind conditions was a very difficult and challenging task.

This maneouvre lasted about 15 minutes and was extremely demanding. Wg Cdr Subash Chander kept his cool and encouraged the crew members to maintain the highest level of concentration. The mission was successful and the stranded passengers were winched to the helicopter.

Wing Commander Subash Chander has, thus displayed conspicuous courage, dedication and exceptional flying skill.

48. 13610502N RAVINDER KRISHAN KUMAR, PARA REGIMENT

(Effective date of the award : 14th October, 1992)

On the 13th October 1992 at 1930 hours, Commanding Officer 1 PARA (COMMANDO) was informed that 10 passengers were stranded in a cable car due to the snapping of the haulage cable. The cable car was suspended in mid air at a height of 1300 feet near Timber Trail at Parwanoo in Himachal Pradesh. The Commanding Officer was asked to move to the site and be prepared to launch a special rescue mission. A rescue team of five persons was selected under the leadership of Major Ivan Joseph Crasto. Havildar Krishan Kumar was one of the members of the rescue team. He was to be lowered on to the cable car after Major Ivan Joseph Crasto and to assist him in the entire rescue operation and also to serve as a back up for any mid air emergency. At the commencement of the rescue operation on the evening of the 14th October, 1992 Havildar Krishan Kumar was lowered down on the winch of the helicopter after major Ivan Joseph Crasto to serve as his buddy and has ten the entire rescue operation. During this process, due to some turbulence with the helicopter, the winch wire collided with the haulage cables of the cable car threatening a dangerous entanglement. Undeterred, Havildar Krishan Kumar lurched forward in an attempt to grab the cable car and remedy the situation. With grave risk to his own safety, he managed to avert a fatal entanglement, which would not only have endangered the helicopter but also the suspended table car. Fearing an untoward outcome and in order to capitalise on the limited visibility left, it was later decided to abandon further attempts at lowering the non commissioned officer and instead rescue some stranded passengers. The non commissioned officer was winched up into the helicopter and thereafter served as the vital heliborne controller for the remainder of the rescue operation. Attached with just a sling to the helicopter, Havildar Krishan Kumar remained dangerously hanging out during each rescue circuit in order to guide the winch accurately between the haulage cables and forestall any possible entanglements.

Havildar Krishan Kumar, thus, displayed conspicuous courage, professional skill and devotion to duty and undertook a task full of hazards in order to save the lives of many stranded passengers.

G. B. PRADHAN, Director

No. 67-Pres/93.—The President is pleased to approve the award of 'BAR TO SHAURYA CHAKRA' to the undermentioned person for acts of gallantry :—

267944 JUNIOR WARRANT OFFICER VENKATA PHANI RAJU KALA, SC AIR FIELD SAFETY OPERATOR

(Effective date of the award : 4th December, 1991)

On the 4th December, 1991, there was a major fire at the Gwalior Rayon Mills caused by the explosion of a chemical boiler and the bursting of domestic gas cylinders. Due to the explosion and fire, the building had collapsed and a number of people were buried under the debris. The Indian Air Force located at Gwalior was called upon to assist in the rescue work. Within half an hour 3 DFTs, an ambulance and a SCFT were sent to the place of fire. The Air Force managed to contain the fire despite the fact that there was no direct access to the site. After fire was contained, it was noticed that some gas cylinders were leaking. JWO Raju at grave risk to his own life and unmindful of the danger involved in going near the cylinders, took a chance and approached the cylinders and made them safe. Subsequently, dospite the debris and smouldering fire, in total disregard of the danger to his own life, he began the operation of clearing the debris and rescuing the people under the collapsed building JWO Raju displayed conspicuous courage and acted beyond the call of duty in undertaking a task which was dangerous in his own life.

Junior Warrant Officer Venkata Phani Raju Kala, SC, thus displayed gallantry of a high order and set an example to others.

G. B. PRADHAN, Director

LOK SABHA SECRETARIAT

(SUBJECT COMMITTEES BRANCH)

New Delhi-110001, the 8th April 1993

No. 6/1/1|AC|93.—The Departmentally related Standing Committee on Agriculture has been constituted. The following are the personnel of the Committee :

LOK SABHA

1. Shri D. Pandian
2. Shri Birbal
3. Shri Nathuram Mirdha
4. Shri G. Ganga Reddy
5. Shri Ankushrao Raosaheb Tope
6. Shri Sarat Chandra Pattanayak
7. Shri Govindrao Nikam
8. Kumari Pushpa Devi Singh
9. Shri Channaiah Odeyar
10. Shri Tara Singh
11. Shri Anantrao Deshmukh
12. Shri Uttamrao Deorao Patil
13. Shri V. V. Nawale
14. Shri Rajvir Singh
15. Km. Uma Bharati
16. Shri Rudrasen Choudhary
17. Shri Ganga Ram Koli
18. Dr. Gunawant Rambhau Sarode
19. Dr. Parshuram Gangwar
20. Shri Rajendra Kumar Sharma
21. Smt. Krishnendra Kaur
22. Shri Nitish Kumar
23. Shri Arjun Charan Sethi
24. Shri Shiva Sharan Singh
25. Shri Upendra Nath Verma
26. Shri Zainal Abedin
27. Shri B. N. Reddy
28. Shri Kamla Mishra Madhukar
29. Shri R. K. G. Rajulu
30. Shri Shibu Soren

RAJYA SABHA

31. Shri Ram Narain Goswami
32. Shri H. Hanumanthappa
33. Shri Vithalrao Madhavrao Jadhav
34. Shri Anant Ram Jaiswal
35. Dr. Bapu Kaldate
36. Shri David Ledger
37. Shri Maheshwar Singh
38. Shri Bhupinder Singh Mann
39. Shri N. Thangaraj Pandian
40. Shri S. K. T. Ramachandran
41. Shri Ramji Lal
42. Dr. Narreddy Thulasi Reddy
43. Shri Shiv Charan Singh
44. Shri Som Pal
45. Shri K. N. Singh

2. The Speaker has appointed Shri Nitish Kumar as the Chairman of the Committee.

REVATHI BEDI, Dy. Secy.

No. 6/1/1-U&RDC/93.—The Department related Standing Committee on Urban and Rural Development (1993-94) has been constituted. The following are the personnel of the Committee :

LOK SABHA

1. Shri Prataprao B. Bhosle
2. Shri P. P. Kaliaperumal
3. Shri N. Sundararaj
4. Shri Bh. Vijaya Kumar Raju
5. Shri Sajjan Kumar
6. Shri Sanipalli Gangadhara
7. Shri Rajesh Khanna
8. Shri Prabhulal Rawat
9. Shri J. Chokka Rao
10. Dr. Y. S. Rajasekhar Reddy
11. Shri Vijayaramaraju Satrucharla
12. Shri Prithviraj D. Chavan
13. Shri K. M. Mathew
14. Shri Surendra Pal Pathak
15. Shri Rampal Singh
16. Shri Devi Bux Singh
17. Shri Madan Lal Khurana
18. Shri Karia Munda
19. Shri Girdhari Lal Bhargava
20. Shri Ram Singh Kashwan
21. Shri Mohd. Ali Ashraf Fatmi
22. Shri Sukhdeo Pawan
23. Shri Gulam Mohammad Khan
24. Shri Sudhir Giri
25. Shri Subrata Mukherjee
26. Shri Dharmabhiksham
27. Shri N. Murugesan
28. Shri Sobhanadreeswara Rao Vadde
29. Shri Shailendra Mahato
30. Shri Frank Anthony

RAJYA SABHA

31. Shri Ramdeo Bhandari
32. Shri Debabrata Biswas
33. Shri Shivprasad Chanpuria
34. Chaudhary Harmohan Singh
35. Shri Satyanarayan Dronamraju
36. Shri Sangh Priya Gautam
37. Shri B. K. Hariprasad
38. Shri Jagmohan
39. Shri Shivajirao Giridhar Patil
40. Shri Ramchandran Pillai
41. Shri Thennala Balakrishna Pillai
42. Shri Ramsinh Rathwa

2. The Speaker has appointed Shri Prataprao B. Bhosle as the Chairman of the Committee.

REVATHI BEDI, Dy. Secy.

No. 6/1/1/FCS&PD/93.—The Department related Standing Committee on Food, Civil Supplies and Public Distribution (1993-94) has been constituted. The following are the personnel of the Committee :

LOK SABHA

S/Shri

1. B. M. Majahid
2. G. Devaraya Naik.
3. Naranbhai Jamlabhai Rathava.
4. Ram Prakash Chaudhary.
5. Avtar Singh Bhadana.
6. Dr. Smt. Padma.
7. A. Jayamohan.
8. Anandagajapati Raju Poosapati.
9. Pawan Diwan.
10. Sunil Dutt.
11. V. Krishna Rao.
12. Bijoy Krishna Handique.
13. Gopi Nath Gajapathi.
14. Naresh Kumar Baliyan.
15. Shyam Bihari Misra.
16. D. J. Tandel.
17. Ramkrishna Kusmarla.
18. Chhotey Lal.
19. Pankaj Chaudhari.
20. Prof. Ram Kapse.
21. Kabindra Purkayastha.
22. Lal Babu Rai.
23. Shashi Prakash.
24. Ram Awadh.
25. Syed Masudal Hossain.
26. Ramchandra Marotrao Ghangare.
27. Manoranjan Sur.
28. Dr. (Smt.) K. S. Soundaram.
29. Chhote Singh Yadav.
30. Birsingh Mahato.

RAJYA SABHA

S/Shri

31. Sunder Singh Bhandari.
32. Shrimati Mira Das.
33. B. V. Abdulla Koya.
34. Maulana Asad Madni.
35. Sudhir Ranjan Majumdar.
36. Tara Charan Majumdar.
37. Moolchand Meena.
38. Venod Sharma.
39. Jagannath Singh.
40. Tindivanam G. Venkatraman.
41. Ramendra Kumar Yadav 'Ravi'.

2. The Speaker has appointed Prof. Ram Kapse as the Chairman of the Committee.

REVATHI BEDI, Dy. Secy.

New Delhi-110 001, tht 8th April 1993

No. 6/1/1/ENERGY/93.—The Departmentally related Standing Committee on Energy (1993-94) has been constituted. The following are the personnel of the Committee :

S/Shri

1. Bhawani Lal Verma.
2. Murli Deora.
3. Motilal Singh.
4. Khelsai Singh.
5. Khelan Ram Jangde.
6. Parasram Bhardwaj.
7. S. Thota Subba Rao.
8. K. P. Reddaiah Yadav.
9. Shiv Charan Mathur.
10. Dr. Krupasindhu Bhoi.
11. Dalbir Singh.
12. Vilas Muttemwar.
13. P. C. Chacko.
14. Virender Singh.
15. Laxminarain Tripathi.
16. Prof. Rita Verma.
17. Ram Tahal Choudhary.
18. Shanker Singh Vaghela.
19. Jaswant Singh.
20. Keshari Lal.
21. Rajesh Kumar.
22. Arjun Singh Yadav.
23. Ajit Singh.
24. Haradhan Roy.
25. Anil Basu.
26. Vijay Kumar Yadav.
27. Dr. Venkateswara D. Rao
28. Chitta Basu.
29. Mohan Singh (Ferozpur).
30. Smt. Dil Kumari Bhandari.

RAJYA SABHA.

31. Parmeshwar Kumar Agrawalla.
32. Sunil Basu Ray.
33. M. M. Hashim.
34. Manmohan Mathur.
35. Shrimati Ila Panda.
36. J. S. Raju.
37. Dayanand Sahay.
38. Rajni Ranjan Sahu.
39. Viren J. Shah.
40. Matang Singh.
41. Shrimati Kamla Sinha.
42. Yashwant Sinha.

2. The Speaker has appointed Shri Jaswant Singh as the Chairman of the Committee.

K. M. MITTAL, Dy. Secy.

No. 6/1/1/Comn./93.—The Departmentally related Standing Committee on Communication (1993-94) has been constituted. The following are the personnel of the Committee :

LOK SABHA

S/Shri

1. Kum. Vimla Verma.
2. R. Jeevarathinam.
3. Shravan Kumar Patel.
4. Laeta Umbrey.
5. Surajbhanu Solanki.
6. N. Dennis.
7. Jagmeet Singh Brar.
8. Pawan Kumar Bansal.
9. Kodikkunnil Suresh.
10. B. Devarajan.
11. Era Arbarasu.
12. B. G. Jawali.
13. Somjibhai Damor.
14. Mohan Lal Jhikram.
15. Mahesh Kumar Kanodia.
16. Smt. Dipika H. Topiwala.
17. Dr. Sakshiji Maharaj Swami.
18. Lalit Oraon.
19. Anna Joshi.
20. Sharad Yadav.
21. Ram Pujan Patel.
22. Shivsharan Verma.
23. Rupchand Pal.
24. Satyagopal Misra.
25. A. Asokaraj.
26. G. M. C. Balayogi.
27. Rajkishore Mahato.
28. Sanat Kumar Mandal.
29. Sultan Salahuddin Owaisi.

RAJYA SABHA.

S/Shri

30. Dr. Z. A. Ahmad.
31. Prakash Yashwant Ambedkar.
32. M. A. Baby.
33. Shrimati Kailashpati.
34. Virendra Kataria.
35. Mohammed Afzal Alias Meem Afzal.
36. Shrimati Jayanthi Natarajan.
37. G. Prathapa Reddy.
38. Shrimati Sushma Swaraj.
39. Shri Vizol.

2. The Speaker has appointed Km. Vimla Verma as the Chairperson of the Committee.

K. M. MITTAL, Dy. Secy.

No. 6/1/1/L&W/93.—The Departmentally related Standing Committee on Labour and Welfare (1993-94) has been constituted. The following are the personnel of the Committee :—

LOK SABHA

S/Shri

1. D. K. Naikar.
2. S. B. Thorat.
3. Bheru Lal Meena.
4. K. Pradhani.
5. Shrimati Kamala Kumari Karreodula.
6. Kumari Padmasree Kudumula
7. Siddappa Bhimappa Nyamagoudar.
8. Dr. P. Vallal Peruman.
9. Dr. Chinta Mohan.
10. A. Prathap Sai.
11. Shrimati Chhandra Prabha Urs.
12. Shri B. Akbar Pasha.
13. Ramesh Chennithala.
14. Gaya Prasad Kori.
15. B. Dattatraya.
16. Chandubhai Deshmukh.
17. Prof. Rasa Singh Rawat.
18. Ram Narain Berwa.
19. Shiv Raj Singh Chauhan.
20. Swami Sureshanand.
21. Mahendra Singh
22. V. P. Singh.
23. Govinda Chandra Munda.

S/Shri

24. Ajay Mukhopadhyay.
25. Rup Chand Murmu.
26. Vishwa Nath Shastri.
27. Dr. R. Sridharan.
28. Ram Sagar.
29. Yaima Singh.
30. Satyendra Nath Brohmo Chaudhury.

RAJYA SABHA.

31. Mohammed Amin.
32. Maulana Obaidulla Khan Azmi.
33. N. E. Balaram.
34. Sushil Barongpa.
35. Shrimati Vidya Beniwal.
36. Murlidhar Chandrakant Bhandare.
37. Dr. Faguni Ram.
38. Anand Prakash Gautam.
39. Gundapapa Korwar.
40. S. Muthu Mani.
41. Kameshwar Paswan.
42. Narendra Pradhan.
43. Ram Ratan Ram.
44. Shrimati Ratan Kumari.

2. The Speaker has appointed Shrimati Chandra Prabha Urs as the Chairperson of the Committee.

K. M. MITTAL, Dy. Secy.

New Delhi-110 001, the 9th April 1993

No. 6/1/1/P&CC/93.—The Departmentally related Standing Committee on Petroleum & Chemicals (1993-94) has been constituted. The following are the personnel of the Committte.

LOK SABHA

S/Shri

1. Barelal Jatav.
2. Dr. Ravi Mallu.
3. Surinder Singh Kairon.
4. Sant Ram Singla.
5. A. G. S. Rambabu.
6. R. Prabhu.
7. C. P. Mudalagiriyappa.
8. V. S. Vijayaraghavan.
9. Arvind Tulshiram Kamble.
10. Smt. Suryakanta Patil.
11. M. Krishnaswamy.
12. Gopi Nath Gajapathi.
13. K. Ramamurthee Tindivanam
14. Sriballav Panigrahi.
15. Dr. Laxminarain Pandey.
16. Janardan Prasad Misra.
17. Kashiram Rana.
18. Rameshwar Patidar.
19. Patilal Kalidas Varma.
20. Samabhai Patel.
21. Hari Kishore Singh.
22. Devendra Prasad Yadav.
23. Ramnihore Rai.
24. Uddhab Barman.
25. Dr. Asim Bala.
26. Surya Narayan Singh.
27. Simon Marandi.
28. Pius Tirkey.
29. Muhiram Saikia.
30. Dr. Jayanta Rongpi.

RAJYA SABHA.

31. Lakkhiram Agarwal.
32. E. Balanandan.
33. Balbir Singh.
34. Chowdhry Hari Singh.
35. Mohd. Masud Khan.
36. Pasumpon Tha. Kiruttinan.
37. G. Y. Krishnan.
38. Mohinder Singh Lather.
39. Jagdish Prasad Mathur.
40. V. Narayanasamy.
41. Mentay Padmanabham.
42. Shrimati Satya Bahin.
43. Vishvjit P. Singh.
44. S. S. Surjewala.
45. Dineshbhai Trivedi.

2. The Speaker has appointed Shri Sriballav Panigrahi as the Chairman of the Committee.

R. K. CHATTERJEE, Dy. Secy.

MINISTRY OF PLANNING & PROGRAMME IMPLEMENTATION

(DEPARTMENT OF STATISTICS)

New Delhi-110001, the 2nd April 1993

No. M. 13011/1/93-Adm. IV.—In pursuance of the Government of India Resolution No. DS/STS/4-69 dated the 5th March, 1970, as amended by this Department's Notification No. M. 13011/2/80-NSS.II dated the 26th March, 1984 regarding functions and composition of the Governing Council of the National Sample Survey Organisation, the following officials and non-officials have been appointed the members of the Governing Council of the National Sample Survey Organisation, for a period of two years with effect from the 1st January, 1993 :—

A. *NON-OFFICIALS*

1. Prof. N. Bhattacharya,
Indian Statistical Institute,
203, B.T. Road, Calcutta-700035.

2. Prof. Shibdas Bandhopadhyay,
Indian Statistical Institute,
203, B.T. Road, Calcutta-700035.

3. Dr. (Mrs.) Kanta Ahuja,
Vice-Chancellor,
Maharishi Dayanand Saraswati University,
Ajmer-305001.

4. Prof. R. Radhakrishna,
Director, Centre for Economic and Social Studies,
Hyderabad-560016.

5. Dr. K. Sundaram,
Professor of Economics,
Delhi School of Economics,
Delhi-110007.

B. *OFFICIALS*

1. Director of Economics and Statistics,
Government of Orissa.

2. Director of Economics and Statistics,
Government of Kerala.

3. Director, Department of Economic Intelligence,
Government of Uttar Pradesh.

4. Adviser (Perspective Planning),
Planning Commission.

5. Officer-in-Charge,
Statistical Analysis and Computer Services,
Reserve Bank of India, Bombay.

VISHU MAINI, Under Secy.

DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT (DIRECTORATE GENERAL OF TECHNICAL DEVELOPMENT)

New Delhi-110 011, the 24th March 1993

RESOLUTION

No. CLE/11(18)/93-344.—Government of India have decided to reconstitute the Development Panel for Lamps, Fittings and Components Industries with the following composition for a period of two years from the date of the Resolution :

Chairman

1. Shri H. S. Mamak,
M/s Pieco Electronics & Electricals Ltd.,
Block 'A', Shivsagar Estate,
Dr. Annie Besant Road,
Bombay-400 018.

Members

2. Representative from o/o DC(SSI),
Nirman Bhawan, New Delhi-110 011.
3. Representative from the Planning Commission,
Yojana Bhawan,
New Delhi.
4. Representative From Bureau of
Indian Standards, Manak Bhawan,
Bahadurshah Zaffar Marg,
New Delhi.
5. Representative from
M/s Apar Ltd., Nadiad (Gujarat).
6. Representative from
M/s Sylvania & Laxman Ltd.,
New Delhi.
7. Representative from
M/s HMT Ltd. (Lamp Unit),
Hyderabad.
8. Representative from
M/s Surya Roshni Ltd.,
New Delhi.
9. Representative from
M/s Crompton Greaves Ltd.,
Bombay.
10. Representative from
M/s ECE Industries Ltd.,
New Delhi.
11. Representative from
M/s Mysore Lamp Works Ltd.,
Bangalore.
12. Representative from
M/s Kalyana Lamps & Components Ltd.,
Madras.
13. Representative from
M/s MLC Industries Ltd.,
Bangalore.
14. Representative from
M/s Vijay Wires & Filaments (P) Ltd.,
Mysore.
15. President, Electric Lamp & Component Manufacturers' Association of India.
16. Shri S. R. Anand,
Consultant.
17. Shri K. K. Taneja, Ex-DDG, DGTD.
18. Shri S. K. Palhan, Industrial Adviser,
DGTD.

Member-Secretary

19. Shri P. K. Sunkaria,
Development Officer, DGTD,
Ministry of Industry,
Udyog Bhawan, New Delhi-110 011.

Terms of reference of the panel would be as under :

1. Assessment of the current level of technology in India and the international trend in technology in terms of quality, price and productivity.
2. Energy conservation through new technologies in Lamps and Fittings.
3. Growth Profile of the industry.
4. To assess the need for introducing improved products and production technologies to make the industry competitive in International Marketing.
5. To estimate the major inputs required by the Industry in future in order to promote their production.
6. Any other matter related to the growth and development of the industry.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

MADAN MOHAN,
Director (Administration)

(DEPARTMENT OF ELECTRONICS)

New Delhi-110003, the 8th April 1993

RESOLUTION

No. 25(1)/92-ER&DCI.—1. Government of India has decided to establish an autonomous registered Scientific Society known as Electronics Research & Development Centre of India, New Delhi (ER&DCI) by merging the five autonomous registered Scientific Societies presently known as Electronics Research & Development Centre (ER&DC) located at Calcutta, Lucknow, Mohali, Pune, and Thiruvananthapuram, all under the administrative control of Department of Electronics (DOE), into a single Registered Scientific Society.

2. Electronics Research & Development Centre of India will be registered as an Autonomous Scientific Society under the Societies Registration Act 1860 with registered office at Electronics Niketan, 6, CGO Complex, Lodhi Road, New Delhi-110 003, while the five Centres will continue to function from their respective locations under the aegis and control of ER&DCI.

3. The main objectives of ER & DCI will be :

(a) To undertake application—oriented, region specific Research, Design and Development in the state-of-the-art Electronics technology including rural applications so as to generate and deliver knowhow for productionisation to various manufacturing units in the country.

(b) To promote growth of electronics industries in the country by providing R & D support to the industries in the region, small scale industries in particular.

(c) To play the nodal role in the region for technology development and maintain close linkages with other national laboratories and academic institutions in the country so as to attain and maintain technological competence, enhanced self reliance and reduced vulnerability in strategic areas pertaining to electronics technology.

4. The Minister incharge of Department of Electronics shall be the VISITOR of the ER & DC of India, New Delhi.

5. The Electronics Research & Development Centre of India, New Delhi will be managed by the Governing Council and local Executive Committee in accordance with the Memorandum of Association and the Rules & Regulations as approved by the Department of Electronics, Government of India. The composition of the Governing Council and Executive Committee are as follows :

I. Governing Council

Chairman

1. Secretary, DOE.

Members

2. Representative State Govts of Punjab, Maharashtra, UP and WB.
3. Representative of Industry.
4. Representative of National Level Research Institutions.
5. JS & FA, DOE.
6. JS in Charge of PSS Section in DOE.
7. All Directors of ER & DCs.

Member-Secretary

8. Director General.

II. Executive Committee

Chairman

1. Director General.

Members

2. Representative of State Govt/SEDC.
3. Representative of Industry.
4. Representative of end users of R & D.
5. Representative of Financial Adviser, DOE.
6. Representative of ER & DC division, DOE.
7. Director of concerned ER & DC.

Member-Secretary

6. The Chairman and Members of the Governing Council are authorised to register the Society and establish the ER & DC of India for achieving the objective set forth in the Memorandum of Association.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

N. GOPALASWAMI, Jt. Secy.

RESOLUTION

No. 25(1)/92-CEDTI.—1. Government of India has decided to establish an autonomous registered Scientific Society known as Centre for Electronics Design and Technology of India New Delhi (CEDTI), by merging the six autonomous registered Scientific Societies presently known as Centre for Electronics Design & Technology (CEDT) located at Aurangabad, Calicut, Gorakhpur, Imphal, Mohali & Srinagar, all under the administrative control of department of Electronics (DOE), into a single Registered Scientific Society.

2. Centre for Electronics Design & Technology of India will be registered as an Autonomous Scientific Society under the Societies Registration Act 1860 with registered office at Electronics Niketan, 6, CGO Complex, Lodhi Road, New Delhi-110 003, while the six Centres will continue to function from their respective locations under the aegis and control of CEDTI.

3. The main objectives of CEDTI will be

(a) To train manpower in Electronics design and technology by offering a variety of training programmes in all aspects of electronics product design, development and manufacturing.

(b) To identify potential entrepreneurs and designers in Electronics and motivate them through advice, guidance and training to become successful entrepreneurs.

(c) To maintain close links with industries, R & D labs and academic institutions in order to understand their requirements and thus keep the CEDTs service/activities relevant and realistic.

(d) To undertake electronics product development and design on a consultancy basis.

4. The Minister incharge of Department of Electronics shall be the VISITOR of the Centre for Electronics design & Technology of India, New Delhi.

5. The Centre for Electronics Design & Technology of India, New Delhi will be managed by the Governing Council and the local Executive Committee in accordance with the Memorandum of Association and the Rules & Regulations as approved by Department of Electronics, Government of India. The compositions of the Governing Council and the Executive Committee are as follows :

I. Governing Council

Chairman

1. Secretary, DOE.

Members

2. Representative of Maharashtra State Govt.
3. Representative of HRD Ministry.
4. Two Representatives of Industry.
5. Representative from CEDT Resource Centre (IISc, Bangalore).
6. JS & FA, DOE.
7. JS incharge of PSS Section in DOE.
8. All Directors of CEDTs.

Member-Secretary

9. Director General.

II. Executive Committee

Chairman

1. Director General.

Members

2. Representative of State Govt.
3. Representative of Academic Institution.
4. Representative of Industry.
5. Representative of Financial Adviser, DOE.
6. Representative of CEDT division, DOE.

Member-Secretary

7. Director of concerned CEDT.

6. The Chairman and Members of the Governing Council are authorised to register the Society and establish the CEDT of India, New Delhi for achieving the objective set forth in the Memorandum of Association.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

N. GOPALASWAMI, Jt. Secy.

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1993
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and Published by the Controller of Publications, Delhi, 1993